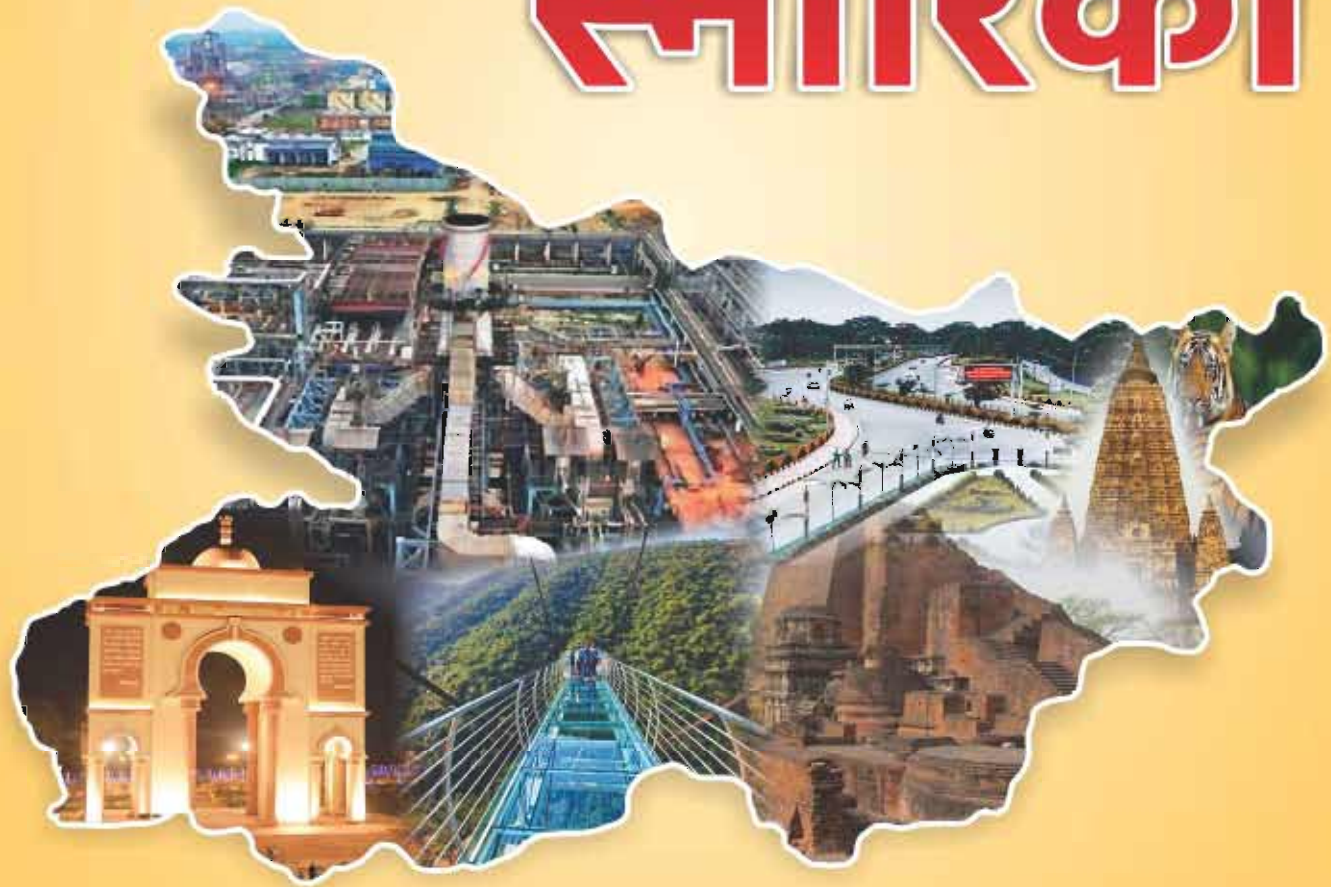




स्मारिका



बिहार वित्त सेवा संघ
32वीं कार्यकारिणी



बिहार वित्त सेवा संघ

32वीं कार्यकारिणी

वाणिज्य कर विभाग
बिहार सरकार

विजय कुमार चौधरी

मंत्री

वित्त, वाणिज्य कर एवं संसदीय कार्य विभाग
बिहार, पटना।



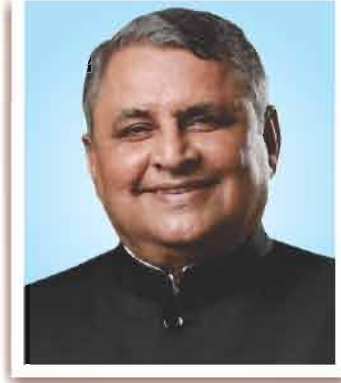
Vijay Kumar Choudhary

Minister

Finance, Commercial Tax & Parliamentary Affairs Dept.
Bihar, Patna

पत्रांक.....01.....

दिनांक :..05.09.2022...



शुभकामना संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि “बिहार वित्त सेवा संघ“ द्वारा एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है स्मारिका में प्रकाशित लेख राज्य की वित्तीय व्यवस्था एवं कर-व्यवस्था के सुदृढीकरण के लिए बौद्धिक-विमर्श एवं चिंतन के लिए उपयोगी होंगे।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ एवं संघ के सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(विजय कुमार चौधरी)

कार्यालय : मुख्य सचिवालय, बिहार, पटना-800015

दूरभाष : 0612-2217894 (का०), 0612-2217639 (फैक्स)

ईमेल : fmbihar2022@gmail.com



शुभकामना संदेश

राजस्व संग्रहण के दृष्टिकोण से वाणिज्य-कर विभाग, बिहार सरकार का एक महत्वपूर्ण विभाग है एवं राजस्व संग्रहण में बिहार वित्त सेवा के पदाधिकारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बहुत हर्ष की बात है कि बिहार वित्त सेवा संघ द्वारा स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। स्मारिका के प्रकाशन से नवनियुक्त पदाधिकारियों का ज्ञानवर्धन होगा एवं रचनात्मक कार्यों में अभिरूचि बढ़ेगी। मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए बिहार वित्त सेवा संघ के सभी सदस्यों को शुभकामना देती हूँ।

(डॉ० प्रतिमा)
राज्य-कर आयुक्त-सह-सचिव
वाणिज्य-कर विभाग,
बिहार, पटना।



संजय कुमार मावंडिया,
राज्य कर विशेष आयुक्त,
—सह—
संरक्षक, बिहार वित्त सेवा संघ

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि बिहार वित्त सेवा संघ द्वारा स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। वर्षों पूर्व प्रचलित परम्परा को जीवंत होता देख, सुखद अनुभूति हो रही है। निःसंदेह संघ के अध्यक्ष श्री नंद किशोर सिंह इस हेतु बधाई के पात्र हैं। साथ ही, मैं कार्य समिति के सभी सदस्य एवं कार्यकारिणी के सभी सदस्यों का भी साधुवाद करता हूँ, जिनके मार्गदर्शन एवं सहयोग से इस स्मारिका का प्रकाशन हो रहा है।

स्मारिका के प्रकाशन से विभागीय पदाधिकारियों की रचनाशीलता को प्रोत्साहन मिलेगा। स्मारिका में प्रकाशित शैक्षणिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं विभिन्न विषयों पर आधारित आलेख जहाँ पदाधिकारियों के व्यक्तित्व विकास एवं ज्ञानवर्द्धन में सहायक होंगे, वहीं ये राज्य सरकार के राजस्व संवर्द्धन का भी माध्यम बनेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत स्मारिका विभागीय पदाधिकारियों के लिये धरोहर अंक के रूप में एक संग्रहक सामग्री होगी।

बिहार वित्त सेवा संघ स्थापना काल से ही अपने सदस्यों की उत्कृष्ट सेवा शर्तों, उनकी कार्यक्षमता के विकास एवं कार्य-स्थल पर बेहतर माहौल उपलब्ध कराने हेतु प्रतिबद्ध रहा है। वर्तमान कार्यसमिति ने भी कनीय पदाधिकारियों की सेवा संपुष्टि, पदाधिकारियों के Notional Promotion, क्षेत्रीय कार्यालयों में आधारभूत संरचना के विकास, संकट की घड़ी में पदाधिकारियों के साथ तन-मन-धन से खड़ा होना, संघ भवन के जीर्णोद्धार, अतिथिशाला के निर्माण, संघ के वेबसाइट के निर्माण के साथ-साथ संघ के क्रिया-कलापों में पारदर्शिता एवं जन भागीदारी सुनिश्चित करने में महती भूमिका निभाई है।

संघ उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो एवं पदाधिकारियों के कल्याण तथा भविष्य निर्माण में सदा सहभागी बने। मेरी शुभकामनाएँ सदा साथ हैं।

सादर

संजय कुमार मावंडिया
(संजय कुमार मावंडिया)

प्रस्तावना



बिहार वित्त सेवा संघ के द्वारा स्मारिका का प्रकाशन किया जाना बौद्धिक सृजनात्मकता की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। संघ के अनेक पदाधिकारियों के द्वारा स्मारिका प्रकाशन का अनुरोध प्राप्त हो रहा था। मैं व्यक्तिगत रूप से भी इस प्रकार के कार्य में गहरी रूची रखता हूँ। विभाग के बहुत से पदाधिकारियों द्वारा अपने लेख प्रकाशन हेतु देना; इनके जागरूकता को प्रमाणित करता है।

इस स्मारिका में विभाग के सभी पदाधिकारियों का संक्षिप्त विवरण भी प्रकाशित किया जा रहा है। इससे सभी पदाधिकारियों को एक दूसरे से संपर्क करने में उपयोगी होगा। बहुत से व्यवसायियों द्वारा अपने विज्ञापन के माध्यम से इस कार्य में सहयोग प्रदान किया गया है। उनका योगदान स्मारिका के प्रकाशन में स्मरणीय रहेगा।

स्मारिका के प्रकाशन हेतु माननीय वित्त (वाणिज्य-कर) मंत्री, बिहार, पटना एवं राज्य कर आयुक्त महोदया द्वारा शुभकामना संदेश देकर अनुगृहित किया गया है; जिसके लिए संघ आभार प्रकट करता है। मैं व्यक्तिगत रूप से एवं संघ के अध्यक्ष के रूप में स्मारिका के प्रकाशन में जिनका भी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सहयोग रहा है उनके प्रति आभार ज्ञापित करता हूँ। स्मारिका के संपादन का द्रूह एवं श्रमसाध्य कार्य का निर्वहन श्री नरेश कुमार, उपाध्यक्ष, बिहार वित्त सेवा संघ के द्वारा की गई है, जो धन्यवाद के पात्र है। स्मारिका के मुद्रण एवं प्रकाशन में **डा० दिनकर प्रसाद**, राज्य कर संयुक्त आयुक्त का प्रयास भी अविस्मरणीय रहेगा, जिनके अथक प्रयास से स्मारिका अस्तित्व में आया है।

पूर्ण विश्वास है कि संघ का यह सार्थक प्रयास बिहार वित्त सेवा के पदाधिकारियों एवं अन्य सुधि पाठको के लिए लाभदायक साबित होगा।

!!धन्यवाद!!

नन्दकिशोर सिंह
अध्यक्ष
बिहार वित्त सेवा संघ



निबंधन संख्या-S000589/2017-18

बिहार वित्त सेवा संघ

वीरचन्द पटेल पथ, पटना ।

32वीं कार्यकारिणी सदस्यों की सूची

संरक्षक

श्री संजय कुमार मावंडिया

अध्यक्ष

श्री नन्द किशोर सिंह
मो0-9431184941

उपाध्यक्ष

श्री नरेश कुमार
मो0-7903577040

महासचिव

श्री रणजीत कुमार
मो0-7532977589

कोषाध्यक्ष

श्री कृष्णा मोहन सिंह
मो0-7542010088

संयुक्त सचिव

श्री आबिद सुबहानी
श्रीमति कुमारी गुंजन भारती
श्रीमति पुनीता कुमारी
सुश्री विनीता कुमारी
श्री आकाश आनंद

केन्द्रीय कार्यकारिणी

सभी प्रमंडलीय अपर आयुक्त (प्र.)

श्री प्रणव बोध रूँगटा
श्री किशोर कुमार सिन्हा
श्री विजय कुमार आजाद
मो. मोइनुद्दीन
श्री सुरेन्द्र प्रसाद
श्री प्रशांत कुमार झा
श्री गोपाल प्रसाद
श्री नन्द किशोर राज
श्री संजीव कुमार

श्री जाकिर अली अंसारी
श्री कार्तिक कुमार सिंह
श्री अनिल कुमार सिंह विद्यार्थी
श्री राजीव रंजन
श्री इरसाद आरिफ
श्री विवेक कुमार
श्री विशाल कुमार
श्री दयाशंकर सिंह
सुश्री शिप्रा झा

श्री विकास कुमार सिंह
श्रीमति विनीता वत्स
श्री मनोज कुमार पॉल
श्री गौरव
श्री हरेराम
श्री संजय कुमार मिश्रा
सुश्री आरथा गार्गी
सुश्री सौम्या

श्रद्धांजलि

इस धारा सा ही जग का क्रम,
शास्वत इस जीवन का उद्गम,
शास्वत है गति, शास्वत संगम।
शास्वत नम का नीला विकास,
शास्वत शशि का रजत ह्रास,
शास्वत लघु लहरों का विलास।
हे जगजीवन के कर्णधार!
चिर जन्म-तरण के आर-पार,
शास्वत जीवन नौका-विहार।

— सुमित्रा नन्दन पंत

मनुष्य जीवन क्रम, नदी की बहती धारा है। जन्म उद्गम है, जीवन नदी का प्रवाह और अंत सागर में मिलन। विगत-वर्ष हमारे कई प्रियजन हम से दूर चले गए और शेष रह गई केवल उनकी यादें।

इन्हीं प्रियजनों में हमारे अधिकारी व कर्मचारी जिन्होंने कोरोना जैसी गंभीर आपदा में कर संग्रहण जैसा उत्कृष्ट कार्य करते हुए इस शास्वत जीवन रंगमंच से सदा के लिए विदा हो गए। आज भले ही वह हमारे साथ नहीं हैं पर हमारे हृदय में वो हमेशा हमारे साथ रहेंगे।

विशाल वटवृक्ष रूपी संस्थान से जुड़ी कई शाखाएं लगातार परिश्रम से इस वृक्ष को पोषित कर रही हैं। सामूहिक योगदान से संस्थान को उज्ज्वलता प्रदान कर रही है। अब इनमें से कोई शाखा जब अपना जीवन पूरा कर साथ छोड़ देती है तो उनका रिक्त-स्थान यादों का घरौंदा बन कर रह जाता है।

इनकी यादों को समेट सम्पूर्ण बिहार वित्त सेवा संघ परिवार इन प्रियजनों को नम आँखों से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

रामाधार सिंह

राज्य कर अपर आयुक्त (प्रशासन),
पूर्वी प्रमंडल, पटना

संपादक के कलम से



बिहार वित्त सेवा सर्वग अपने बौद्धिक क्षमता के लिए जाना जाता है। इस बौद्धिक क्षमता को एक अवसर देने के रूप में स्मारिका का प्रकाशन की अपेक्षा सभी पदाधिकारियों के द्वारा की जा रही थी। संघ के माननीय अध्यक्ष महोदय द्वारा इस भावना को महसूस करते हुए मुझे इस कार्य के लिए अधिकृत किया गया। इस पुनित अवसर देने के लिए मैं श्रेय अध्यक्ष महोदय के प्रति आभार और कृत्यज्ञता का गहरा भाव रखता हूँ। मैं कार्य की जटीलता और दुरुहता के साथ समय देने की वाध्यता को जानते हुए एक अवसर के रूप में स्वीकार किया। कार्य जैसे जैसे बढ़ता गया नयी-नयी चुनौतियाँ सामने आते गयी लेकिन विभाग के अनेको पदाधिकारियों एवं माननीय अध्यक्ष महोदय के निरंतर प्रोत्साहन से अंततः सफलता मिला।

स्मारिका के प्रकाशन के लिए माननीय मंत्री महोदय, वाणिज्य-कर विभाग एवं आयुक्त महादेया का शुभकामना संदेश हमारे लिए आशिर्वाद स्वरूप है। संघ के संरक्षक श्री संजय कुमार मवांडिया सर, अपर आयुक्त एवं संघ संरक्षक का शुभकामना संदेश के लिए सादर आभार प्रकट करना चाहता है।

स्मारिका में सभी पदाधिकारियों की संक्षिप्त परिचय को समेकित करना सबसे जटिल कार्य रहा। हालांकि विभाग द्वारा पूर्व में प्रकाशित सेवा का इतिहास बहुत ही उपयागी रहा इसके लिए सेवा इतिहास प्रकाशित करने वाली पूरी टीम के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। खासकर श्रेय श्री आर० एस० पाल सर, श्री सुबोध राम सर, श्री अच्छेलाल सर के प्रति हृदय से कृत्यज्ञता प्रकट करना चाहूँगा। 56वीं से 64वीं तक के पदाधिकारियों का सूचना जूटाने में काफी परेशानी हो रही थी। जिसमें बहुत सारे पदाधिकारियों का सहयोग प्राप्त हुआ लेकिन मनोज जी, शिप्रा जी, सुजित जी, प्रांजल जी एवं सलोनी जी के सहयोग को कभी भूल नहीं सकता हूँ। औरंगाबाद पदस्थापन अवधि में इसका अधिकांश कार्य का संपादन हुआ जिसमें अंचल प्रभारी श्री सुनील सर, सुशिल जी, सरिता जी, बबिता जी हमेशा मनोबल बढ़ाते रहें। पटना पदस्थापन के दौरान मध्य अंचल के प्रभारी श्री आदित्य नारायण सर एवं पदस्थापित सभी पदाधिकारियों द्वारा मनोबल बनाये रखने में बड़ी भूमिका

रहीं। निवर्तमान संघ के मा० महासचिव रणजीत जी, मा० कोषाध्यक्ष कृष्णमोहन जी एवं मा० संयुक्त सचिव आबिद जी, गुंजन जी, पुनीता जी, विनीता जी, आकाश आन्नद जी हमेशा स्मारिका के प्रकाशन की प्रगति में अभिरुचि लेकर मनोबल बढ़ाने के लिए आभार व्यक्त करना अपेक्षित समझता हूँ।

स्मारिका का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा विभिन्न विषयों पर लिखे गए आलेख है। श्री अशोक झा सर, श्री मुकेश वर्मा सर, श्री निरंजन सिन्हा सर, श्री सुनिल सर, श्री प्रमोद सर, श्री पंकज सर, श्री अजीताभ सर, श्री प्रवीन सर, श्री मनीन्द्र सर, श्री कार्तिक सर, श्री अमरेन्द्र जी, श्री कुशेश्वर जी, श्रीमति निहारिका जी, श्री मनोज कर्ण जी, श्री विनय जी, श्रीमति विनिता जी, श्री सत्येन्द्र जी, श्री देवा श्री जी, सुश्री स्नेहा जी के प्रति आभारी हूँ। इन्होंने व्यस्तम समय में इस बौद्धिक सृजन में अपना योगदान किया है। इसके साथ ही मैं विशाल जी, हरेराम जी, सलोनी जी का योगदान अविश्वनीय है। स्मारिका का आवरण पृष्ठ वंदना वशिष्ठ जी के सृजनात्मक कल्पना की नमूना है। वंदना आप संपूर्ण सृष्टि को आकार दे सके; शुभकामना है।

अभिभावक स्वरूप, श्री संतोष सर, श्री रामाधार सर, श्री सुजय प्रकाश उपाध्याय सर, श्री अमिताभ मिश्रा सर, श्री प्रणव बोध रूंगटा सर, श्री सचिदानन्द शर्मा सर, श्री गोपी चंद सर, श्री राम प्रसाद राम सर, श्री विरेद्र सर, श्री सतेन्द्र सर, श्री पंकज सर, श्री मोतीलाल सर, श्री योगेन्द्र सर, श्री देवानन्द शर्मा सर, मो० शाहिक सर, श्री राजीव रंजन सर, मो० कैसर तौहिद सर, श्री संजय सर, श्री मोहन सर, श्री प्रमोद सर, मो० जाकिर सर, श्री नन्द किशोर सर, श्री अजीत सर, श्री अनिल विद्यार्थी सर, श्री तेज कुजुर सर, श्री गोपाल सर, श्री कृष्णकान्त यादवेन्द्र सर की विशेष रूप से आभारी हूँ, हमेशा इस कार्य के लिए मनोबल बढ़ाने का कार्य करते रहें है। मैं अपने बैच के सभी साथियों का विशेष रूप से आभारी हूँ इन्होंने हमेशा हर कदम पर जिस प्रकार सहयोग किया मनोबल बढ़ाया वह इस कार्य में भी बना रहा। मन में असीम श्रद्धा आभार एवं कृत्यज्ञता सभी पदाधिकारियों के प्रति भी है। स्थानभाव की विवशता के कारण उन सभी के नाम का उल्लेख नहीं कर पा रहा हूँ।

स्मारिका के प्रकाशन में उन सभी व्यवसायी बंधुओं का अविस्मरणीय योगदान है जिन्होंने अपने विज्ञापन के माध्यम से इस कार्य में सहयोग प्रदान किया है साथ ही श्री मिथलेश जी एवं श्री विजय जी का योगदान नहीं भूल सकता हूँ जिनके सहयोग के बिना स्मारिका प्रकाशित करना कठिन होता।

मैं सभी वरीय एवं कनीय पदाधिकारियों को विनम्रता पूर्वक अश्वस्त करना चाहता हूँ कि आप सबों के सहयोग से भविष्य में और भी बेहतरीन तरीके से इस कार्य को जारी रखने का प्रयास करूंगा। संपादकीय दायित्व में कहीं भी भूल-चुक हुई तो क्षमा प्राथी हूँ।

नरेश कुमार
उपाध्यक्ष,
बिहार वित्त सेवा संघ

सुधि



सृष्टि ईश्वर की सफल हो गई पर विजय मानव की है। ईश्वर ज्ञानमय है, पूर्ण है, वह खोजता कुछ नहीं। मानव में जिज्ञासा है, अतः वह विश्व को चलाता है, गति देता है। कर्मरत मानव ही ईश्वर की सृष्टि को सार्थकता प्रदान करता है।

आज 78 वर्षों के अपने गौरवपूर्ण इतिहास के साथ बिहार वित्त सेवा अपनी आभा बिखेर रहा है एवं बिहार के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहा है। इस अप्रतिम आभा के पीछे अनेक अधिकारियों, सहयोगियों एवं कर्मचारियों की कर्तव्य निष्ठा व बहुमूल्य परिश्रम छिपा हुआ है।

जनकों एवं गुरुओं की ज्ञान सरिता के पश्चात् सर्वोपरि स्थान पाने वाले कार्यालय वरिष्ठ उच्चाधिकारी सह बड़े भाई ने ही सदैव ही अपने छोटे भाईयों को सही राह दिखाई है। विगत दिनों बहुत से वरिष्ठ अधिकारी सेवानिवृत्त हो गए। इनकी कर्तव्यनिष्ठा को नमन करते हुए पूरा बिहार वित्त सेवा संघ परिवार इनके सेवानिवृत्त होने पर इनके सुखद भविष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता है।

यहाँ कार्यरत एवं कार्येतर सभी कर्मचारियों ने पूरी लगन एवं निष्ठा के साथ इस परिवार की शोभा को बनाए रखने के लिए अनवरत कार्य किया है एवं करते रहेंगे। कर्मचारियों के समर्पण और अथक लगन ने सदैव बिहार वित्त सेवा को नई उँचाई प्रदान की है। उनकी निष्ठा और लगन को शत-शत नमन करते हुए संपूर्ण बिहार वित्त सेवा संघ परिवार उनके सेवानिवृत्त होने पर उनके सुखद भविष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता है।

हरेराम

राज्य कर सहायक आयुक्त (अंकेक्षण),

केन्द्रीय प्रमंडल, पटना

दूरभाष:-7909056513

ई-मेल- hareram.1990@gov.in

FEAR OF 'FEAR'

Fear is one of the seven emotions experienced by everyone around the world. It is deeply embedded in human character and from time immemorial it has been affecting human life in various ways and in different texture. Its severeness is well acknowledged by experts on this field, philosopher, psychologist, religious preceptor/self styled baba; as they have spent much of their time in writing a long treatise and delivering sermon for 'fear' management. In the wake of global outbreak of corona virus, this subject gets intensified. Already fear ridden society got thrown in the quagmire of fear, which is a serious concern for human life in totality. This has provoked me to write something on the basis of personal experience of life. Before writing further, it is worthwhile to have a brief overview of 'what is fear'.



The fear is a distressing emotion emerged from impending danger, evil, pain etc. whether the threat is real or imagined, the feeling or condition of being afraid. It is a state of painful emotion experienced when one is confronted by threatening danger or evil. It refers more to psychic condition or state of mind than to an event. It is often applied to an attitude toward something, which, when experienced, will follow sensation of fright usually accompanied by a desire to flee or fight. Dread suggests anticipation of something, usually a particular event, which when experienced, will be disagreeable rather than frightening; he is dreaded of losing wealth. The same is true of the fear when used in a negative statement; he has no fear of losing wealth. Fear is a condition of doubt. Fear is manifestations of negative impression which takes place when we are not in the moment or something has happened in the past, create fear in this moment. The greatest fear is that of thanatophobia and all other fears are secondary. It arises with the threat of harm, either physical, emotional or psychological, real or imagined.

While traditionally considered a negative emotion, yet all fears are not so. Broadly for our purpose, fear may be classified as positive fear, real fear and irrational fear. While positive fear serves an important role in keeping us safe as it mobilizes to cope with the potential danger. This is the type of fear we need for our survival and protection. This fear response emerges from physical world and warns us of actual danger e.g. it keeps you from falling off the cliff. Real fear refers to a situation that is based on real fact that is irrefutably real like death. Irrational fear, unlike earlier two type of fear, is based on hypothetical or totally non-existent situation. This fear response is always followed by suffix like –"what if.....?", "what people.....?", "what will.....?". This irrational fear is negative emotion and that is our concern.

Fear prevents us from standing up for ourselves in abusive situation. The main thing that let us surrender to abuse is 'fear'. It feeds stagnations and keeps us from taking advantage of opportunities. Now a day we see many people are living in the self-

made prison of their own fears. A life without fear , is not something we all deserve, it is something that is possible as well as warranted. The only choice for empowerment over these problems is to face up to them and clear our path. So many of us shy away because we are concerned about the repercussions, but we neglect to see what impact this has on life , if we do not face up to those issues. It is empirically proven fact. Once fear is faced it will be conquered making you superior over it. There is something which holding us back in our life that makes us unsuccessful. It is the greatest obstacle on the path of human growth and development. It may transcend into various form like terror, horror, panic, dread, anxiety, nervousness, trepidation, desperation. Persistent fear is anxiety, if we feel constantly without knowing why. The inability to identify the trigger prevents us from being able to remove ourselves, or the actual threat, from the situation.

The constant fear ultimately results in anxiety and emits negative energy, reducing efficiency to combat adverse situation, encountered. This takes out the creativity of a person and rational thinking leading someone astray. If one gets trapped in fear, it is ubiquitous in every activity leading to derailment of normal life. This is reflected not only in personal life but social life as well. It may be detrimental to the pleasure and ambitions of life cherished ever since childhood of a person, which is innate right of human being. The daunting fear puts a serious dent on the physical and mental health putting human life outside the defined trajectory of life. Hence irrational fear redundantly embedded, has to be taken off if a well defined life is to perpetuate.

Now the question is –how fear overwhelm us ? As discussed earlier, it is inherent in human character which is caused by the surroundings in which a particular person is born and brought up. The degree and the texture of this fear accordingly varies from person to person and purely subjective. Surrounding has a decisive impact with respect to the fact that how a person has been nurtured ever since childhood. The family and social behavior in course of rearing up has a definite perennial impact on emotions, fear being one of them. The person nurtured in the atmosphere, where shouted, demoralized, abused and accused irrationally at every childlike mistake committed, develop a depressed personality and fear psychosis around him , even when he is grown up. Contrast to this, person brought up under the patronage of love , affection, kudos, enthusiasm, zeal and moral boosting , develop sound personality , that has enduring effect in time to come , which might prove deterrent to fear. Thus backdrop of upbringing of a person has a definite bearing on the personality and resultant sense of fear.

In addition to this , the self-made factor is not less important in this regard . In general, human being is ambitious and fond of pleasure in life ; to achieve this enshrined goal , is always in the quest of way to achieve this instantly. People have different occupations as a means of livelihood, depending on their choice and conditions e g employee, businessman, worker, farmer, industrialist, corporate, street vendor, journalist or any other profession. Every profession has a strict path to be followed while executing profession and that is the professional ethics. If we are govt. employee, we have to follow the act and rule especially meant for that. If we are private sector employee, we have to

be guided by strict working principle laid down, while in the case of corporate by memorandum and article of association, in the case of businessman by appropriate law of land in vogue and so on. So long as the whole system runs in a legitimate way or on right path, there is no fear at all to anybody else. Problem starts when anybody, being influenced by self greed of achieving material well being and comforts instantly deviates from defined path of working. The person offending the law or deviating from proper working path, creates from for himself as he puts himself exposed to danger and fear thereon. A corrupt businessman/bureaucrat/industrialist or any person who breaches the law in his own interest, is always in a state of fear of being trapped by the enforcement agency. Though material wellness achieved by unfair means lulls his disquietude of person, yet remains under the state of fear and terror. Ostensibly they try to show being not frightened at all, but deep sense of fear is always embedded in them. Sometimes this fear outweighs the material wellness achieved. A situation may come, when under severe strain of fear, in course of getting rid of fear, commits another crime, puts himself in fear trap which ultimately leads to anxiety.

Alternatively, situation may come, when even if you are moving on the legitimate path, some vested interest may try to drag from right path to lull their interest. This creates a sense of deep fear, particularly in view of savage behavior of person intimidating you to deviate from the path and serve their purpose. It is well proven fact that even notorious criminal has love for honesty, morality and professional ethics , though he himself lack that virtues. Absence of these virtues, makes him fearful of the persons having these virtues in plenty. Only thing requires, is the dogged determination to stick and stand by the principles laid down. Once you jolt this fear with the force of honesty, morality, legitimacy and professional ethics the fear will never occur in your life. This may seem cliché, hitherto relevant.

So far as the fear aroused by corona pandemic is concerned, it is a real fear but exaggerated. Before writing further, if there is any relevance of folklore in real life, it appears pertinent to cite a folktale what we have been hearing ever since our childhood. This story relates with a cobra (snake)and frog. In the forest, once a cobra was boasting sky high being vainglorious about his venom. Cobra was claiming that anybody dies instantly after his bite and even not in a position to demand and drink water. A frog was sitting beside cobra and listening patiently. Frog ridiculously told nobody dies of your venom but of your fear. This discussion resulted in competition and stalemate continued for a long until , it was decided that snake would bite a person and frog will instantly jump before person. In other event frog would sting a person and snake will come forth, with raised hood and hissing. In the meantime a person was seen coming. As decided, snake bit that person and hid itself and frog jumped between the legs of the person. That person saw and thought, oh, it was just frog and rubbing his wound he went, and nothing happened with him. In other case, frog stung a person and hid itself, in the meantime snake come forth with raised hood before him. That person being terrified fell on the earth and died instantly.

The crux of this folktale is not to prove that snake is without venom and frog is venomous. The central idea is that it is fear that matters negatively in our life particularly at the time of distress. Snake bite is curable by proper treatment, but person was so frightened that he died of cardiac arrest caused by extreme fear. In other case it was fear alone that caused his death as frog had no venom at all , but he was deceived it as snake. In view of number of person tested for corona infection , percentage of person infected, percentage of patients getting cured and mortality rate, it seems the fear of pandemic is exaggerated. It is not denial of its fatal character, but the degree of fear is exorbitant , which has disrupted the human life in totality.

Now the obvious question follows—how to get rid of the fear?

The fearless life is not only indispensable for human life but possible as well. As we are aware of the fact that it is one of our various emotions and so it is psychic status of mind. Getting rid of fears requires courage to fight with; which comes from our attitude and action thereon in our life. Eternal belief in ourselves is the foundation stone of self confidence ardently needed to have courage. Self confidence is possible only when, you move on legitimate path, stick on principle with a positive attitude in mind. So belief on ourselves, is the precondition to get rid of the fear. If one is encountered with the fear , first of all, one should go for rational and logical analysis of the cause of the fear. Every event is caused by some factors. One should focus to root out those factors, otherwise it will get momentum , since fear begets fear leading to fear trap. In worst situation, despite your sincere efforts in stride, if it is not possible to root out those factors, one should accept the fear and live with it. Get yourself relaxed, which emits positive energy to fight with fear and lulls your disquietude. Once you start relaxing yourself, it would boost your level of self confidence which is ardently needed to get rid of fear.

Overcoming fear is undoubtedly an uphill task, however, we must realize that we are in charge of our destiny, and should not allow our fear to control our life. Everyone has a definite purpose of life and fear is one of the greatest obstacle in the way of achieving that purpose. It ruins your efficiency; creativity, ambitions, and pleasure of life so, never yield before fear.

N.K.Singh

वी आर बी सी एल
BRBCL

75
आजादी का
अमृत महोत्सव

नबीनगर
NABINAGAR

राष्ट्र की ऊर्जा आत्मनिर्भरता के साथ

भारत की दो वृहतकाय शक्ति का एक समन्वित उद्यम



भारतीय रेल बिजली कंपनी लिमिटेड 74% एनटीपीसी लिमिटेड और 26% रेल मंत्रालय के साझेदारी का एक संयुक्त उपक्रम है। इसकी कुल क्षमता 4x250 मेगावाट है। वीआरबीसीएल से उत्पादित बिजली का 90% भारतीय रेल और 10% बिहार राज्य को दिया जाता है। चौथी इकाई को वाणिज्यिक घोषित किए जाने के बाद, संयंत्र अब 1000 मेगावाट की अपनी पूर्ण स्थापित क्षमता पर बिजली उत्पादित कर रहा है।



एनटीपीसी
NTPC

भारतीय रेल बिजली कंपनी लिमिटेड

(एनटीपीसी लिमिटेड एवं रेल मंत्रालय का संयुक्त उद्यम)

नबीनगर थर्मल पावर प्रोजेक्ट (4x250 MW)

पोस्ट: नबीनगर, जिला: औरंगाबाद (बिहार), पिन-824303



www.nipc.co.in [f /nipc1](https://www.facebook.com/nipc1) [t /nipclimited](https://www.twitter.com/nipclimited) [y /nIpd1](https://www.youtube.com/channel/UCnIpd1) [in /company/nipc](https://www.linkedin.com/company/nipc) [ig /nipclimited](https://www.instagram.com/nipclimited) [nipc_limited](https://www.youtube.com/channel/UCnIpd1) पर हमें फॉलो करें

The Important Aspects of GST and How to Draft a Proper Order under GST

- Ashok Kumar Jha, Retd. Additional Commissioner State Tax, Bihar

Introduction

Under the GST regime, a GST officer has to complete a number of adjudicating proceedings. For a good adjudication, it is important to pass a reasoned order incorporating therein the relevant case laws and duly following the procedures prescribed under the GST Act and rules. This ensures that the higher courts do not strike down the orders, especially on the ground of violation of the procedural provisions. Hence, the officer should definitely have a proper knowledge of GST. At the same time, it must be noted that within the last 5 years itself— since the inception of the GST— more than 720 notifications, instructions and circulars have been issued under the CGST only.



Hence, I have sifted out the most important 73 notifications, instructions and circulars as well as the 35 sections which are relevant to have a proper working knowledge of GST. I have also enumerated 21 important points to be kept in mind for a proper order. I have divided this paper in two major parts: “**How to draft a proper order under GST**” and “**Important Notifications, Circulars, orders Instructions under CGST/SGST issued up to 15.06.2022**”.

A. How to draft a proper order under GST

In this segment, I have highlighted the principles according to which an order should be drafted and the relevant provisions of the GST. In the last few points, I have also given some clarifications for the repetitive questions faced while drafting orders. The basic ideas behind drafting a proper order are -

- o Any person who reads the order should easily understand the issues at hand.
- o The order should stand up to judicial scrutiny, whenever appealed against.

The value of drafting a proper order is incalculable. It ensures that unnecessary litigation is avoided, the order is unassailable and the dues become crystallized. The working assumption should be that every order will be challenged and the order should not be easy to strike down on procedural matters or on merit. A standard draft cannot be made since there are myriad issues which can come up for adjudication but it is recommended that these few parts are clearly spelled out in each order—Introduction, Description, Appearance / documents received during inquiry, Gist of submissions by the taxable person, Gist of Submission of the department (in case of an appeal case) Analysis and Findings, and Conclusion/ Order.

With this background, I now delve into the specific points.

1. ***The principles of Natural Justice*** must be followed. There are broadly three principles which must be followed while passing an order –
 - 1.1. ***Fair Opportunity*** - The party which will be affected by the order should be given a fair opportunity to make its submissions.
 - 1.2. ***Neutrality*** –The authority passing the order should be bias free. The decision should be given in a free and fair manner.
 - 1.3. ***Reasoned and Speaking Order*** - The order should be self-speaking clearly laying out the submissions of both parties and giving the analysis of these submissions so as to clearly speak as to on what grounds, legal/logical or jurisprudential, the final order was arrived at.
2. In favour of the above mentioned principles of Natural Justice, the most important aspect is that an Opportunity of being heard must be provided by ‘giving proper Notice.’
 - Ø No penalty shall be imposed on any person without giving him an opportunity of being heard. –Sec.126(3)
 - Ø In case of personal appearance, the Notice must contain Time, Date, Place and Name of the officer before whom he/she has to appear.
 - Ø Notice should be well drafted indicating the ‘Gist of accusation’ and be served within the given time limitation, if any.

3. **Proper service of the notice**-It should also be ensured that the notice has been properly served. The method of service of notice is given under **Sec.169** of CGST/SGST.
4. **Copy of the original order** passed should be sent with the Gist of the order/Demand notice DRC-07,DRC-07A,DRC-8 or APL-04.
5. **Best judgement Assessment**-At the time of passing an assessment order under Sec.62 (Assessment of non filers of return) and under Sec.63(Assessment of unregistered Persons), the proper officer should proceed to assess the tax liability to the “best of his judgement”.

In such cases, the GST officer would proceed to assess the tax liability of the taxpayer to the best of his judgement taking into account all the relevant material which is available or which he/she has gathered. The estimation should be reasonable, fair, unbiased and just.

6. **An opportunity of hearing shall be granted where a request is received in writing** from the person chargeable with tax or penalty, or where any adverse decision is contemplated against such person.- Sec.75(4)
7. **Adjournment**-The proper officer shall, if sufficient cause is shown by the person chargeable with tax, grant time to the said person and adjourn the hearing for reasons to be recorded in writing:Provided that no such adjournment shall be granted for more than three times to a person during the proceedings. –Sec. 75(5)
8. **Speaking order**-The proper officer, in his order, shall set out the relevant facts and the basis of his decision. -Sec. 75(6)

The officer shall while imposing penalty in an order for a breach of any law, regulation or procedural requirement, specify-

- Ø the nature of the breach, and
- Ø the applicable law, regulation or procedure under which the amount of penalty for the breach has been specified. -Sec.126(4)

8.1. Important content of a speaking order-

(A) Introduction

1. Name of Section, Rule and Name of the Act under which the Order is passed.
2. Legal Name and GSTN of the firm.
3. Name of the person present at the time of hearing

(B) Description –

1. What necessitated this order=charges on the party= Gist of accusation.
2. Full detail of notice with information of how it was served.(This must be given in full length to save the order from higher courts, for eg.- through RPAD = Registered Post with Acknowledgment Due)
3. Replied or not replied- Present or not present.
4. Detail of Submission given by the taxable person.

(C) Findings

1. How much agreed and how much not agreed with the given submission.
2. Writing in detail with sufficient reason on non agreed points.
3. If possible, case law should be inserted, especially in big cases which create a huge demand.

(D) Conclusion and Clear calculation of assessed tax/penalty/ interest/fine.

9. 1. The amount of tax, interest and penalty demanded in the order **shall not be in excess of the amount specified in the notice**, and
2. No demand shall be confirmed **on the grounds other than the grounds specified in the notice.** – Sec. 75(7)

10. Where the Appellate Authority or Appellate Tribunal or court modifies the amount of tax determined by the proper officer, the **amount of interest and penalty shall stand modified accordingly**, taking into account the amount of tax so modified.- Sec. 75(8)
11. **Impartial Hearing Officer-** Disposal of cases of Inspection, search, and seizure of shops or vehicles should be given to such proper officer who was not involved in such enforcement process.
12. Order should be passed by the officer having proper Jurisdiction in the case.
13. **Notice should be served and Order should be passed within prescribed 'Limitation Period'**.For eg.-
 - 13.1. Where any order is required to be issued in pursuance of the direction of the Appellate Authority or Appellate Tribunal or a court, such 'order shall be issued within 2 years' from the date of communication of the said direction. -Sec.75(3)
 - 13.2. The proper officer shall issue the order within three years from the due date for furnishing of annual return for the financial year to which the tax not paid or short paid or input tax credit wrongly availed or utilised relates to or **within three years** from the date of erroneous refund. - Sec.73(10)
 - 13.3. The proper officer shall issue the order within a period of **five years** from the due date for furnishing of annual return for the financial year to which the tax not paid or short paid or input tax credit wrongly availed or utilised relates to or within five years from the date of erroneous refund. -Sec.74(10)
14. Where any penalty is imposed under Sec.73 or Sec. 74, **no penalty for the same act or omission shall be imposed on the same person** under any other provision of this Act. -Sec.75(13)
15. Officer under this Act shall not impose any penalty for **minor breaches** of tax regulations (amount of tax involved is less than 5,000/-rupees) or procedural requirements **and** in particular, any omission or mistake in documentation which is easily rectifiable and made without fraudulent intent or gross negligence. -Sec.126(1)

16. When a person **voluntarily discloses** to an officer under this Act the circumstances of a breach of the tax law, regulation or procedural requirement **prior to the discovery of the breach** by the officer under this Act. Proper officer may consider this fact as a reducing factor when quantifying a penalty for that person.-Sec.126(5)

17. Rectification/Review **only in case of errors apparent on the face of record.** - Sec. 161

Provided that where such rectification adversely affects any person, the principles of natural justice shall be followed by the authority carrying out such rectification.

18. **Rounding off of tax** -The amount of tax, interest, penalty, fine or any other sum payable, and the amount of refund or any other sum due, under the provisions of this Act **shall be rounded off to the nearest rupee** and, for this purpose, where such amount contains a part of a rupee consisting of paise, then, if such part is fifty paise or more, it shall be increased to one rupee and if such part is less than fifty paise it shall be ignored. - Sec.170

19. For the State of Bihar When there is an inconsistency between the Hindi and English texts of the Statute/ rules/ notifications, **“the Hindi text will prevail in terms of Article 348(3) of the Constitution.”**

20. When a word is **not defined** in the statute it has to be interpreted according to **its legal sense or dictionary meaning.**

But in all such cases, the term must be construed according to the ‘popular sense’ i.e. in the sense they are used and understood in common parlance, particularly by those dealing in them and not in a technical sense.

21. Definition given in other statutes should not be normally adopted particularly when the statutes are by different legislatures.

22. An explanation to a charging section should be given preference over the explanation to a definition section.

This concludes the principles according to which an order should be drafted and the relevant provisions of the GST. I have tried to highlight the important principles for drafting an order, the relevant provisions of the GST, and the benefits of investing time and effort in drafting a proper order. Now, let us proceed to the important provisions of the GST.

B.Important Notifications, Circulars, orders and Instructions under CGST/SGST issued up to 15.06.2022

For better and effective Tax Administration, the GST authority issues -

1. Notifications-

Notifications under GST are of two types -

1.1. Rate Notifications – In rate notifications, ‘Rate’ word is written, For ex. Notification No.-1/2017-Central Tax(**Rate**)]

1.2. General Notification[(For ex. Ntn.No.-1/2017-Central Tax]

General notifications are notified generally for ‘extending dates, amending rules, delegating powers etc’.

2. Circulars- These are clarificatory in nature, which is very useful for officers. Actually, it gives a SOP on any particular topic.

[Unlike notification, Circular number have 3 distinct number For Ex.- Cir.no 27/01/2018- in which 1st number signifies the cumulative number i.e. number starting from 1st july 2017 (i.e.from commencement of GST) while 3rd number specifies the calendar year of its issue and 2nd number shows the number of circular issued from 1st Jan of that calendar year.]

3. Orders – These are issues under two sections

(i) Removal of Difficulties order U/S 172 – Provision made to solve problems during the transition period. Such orders were to be issued only within 3 years of start of GST.

(ii) General Order- Issued under Sec.168 to give some direction by the Commissioner.

4. Instructions- These are issued separately on some important issues.

Following table shows that a total of 724 different notifications,circulars, instructions etc have been issued upto 15.06.2022;however, out of these, only 73 are selected as important and given with brief content to understand them at a glance.

**Year wise Issuance of Notification, Circular ,Instruction & Order Under CGST as on
15.06.2022 (issued calendar year wise i.e. Jan. to Dec.)**

| YEAR | NOTIFICATION | | CIRCULAR | | | Instru- ction | ORDERS | |
|--|--------------|------------|----------------------------|------------|-------------|------------------|-------------------------------|-----------|
| | Rate | Total | From Circular Issued | To | General | | Removal of difficulties | |
| 2017 | 75 | 47 | 26 | 1/1/2017 | 26/26/2017 | 0 | 11 | 01 |
| 2018 | 79 | 30 | 55 | 27/1/2018 | 81/55/2018 | 1 | 04 | 04 |
| 2019 | 78 | 29 | 49 | 82/1/2019 | 130/49/2019 | 1 | 2 | 10 |
| 2020 | 95 | 5 | 14 | 131/1/2020 | 144/14/2020 | 2 | 1 | 1 |
| 2021 | 40 | 22 | 24 | 145/1/2021 | 168/24/2021 | 4 | 0 | 0 |
| 2022 | 8 | 2 | 1 | 169/1/2022 | 169/1/2022 | 3 | - | - |
| TOTAL | 375 | 135 | 169 | - | - | 11 | 18 | 16 |
| Imp. | 26 | 20 | 21 | - | - | 06 | - | - |
| So, Only 73 (i.e only 10%)can be selected as “important” Out of total 724 issued notification,circulars etc | | | | | | | | |

21 Important Circulars Under CGST upto 15.06.2022

| | Cir No | Topic |
|---------------|--------------------------|---|
| (i) | 38 | Issues related to Job Work (Sec.143) |
| (ii) | 40 | Furnishing of Bond/Letter of Undertaking (LUT) for exports |
| (iii) | 41,49 &64 | Inspection of goods in movement, detention , Release, confiscation |
| (iv) | 42 | Procedure to recover of Arrear under the exiting Act. |
| (v) | 57 | Scope of Principal-agent relationship in the context of Schedule-I of the CGST Act.(Corrigendum dated 05.11.2018) |
| (vi) | 61 | E-way bill in case of storing of goods in godown of transporter. |
| (vii) | 65&67 | Deductions &Deposits of TDS by the DDO under GST |
| (viii) | 69 | Processing of Applications for Cancellation of Registration submitted in FORM GST REG-16 |
| (ix) | 72 | Procedure in respect of return of time expired drugs or medicines |
| (x) | 76 | <p>Clarification on certain issues</p> <ul style="list-style-type: none"> ● sale by govt. departments to unregistered person; ● leviability of penalty U/S 73(11) of the CGST, ● rate of tax in case of debit notes / credit notes issued U/S 142(2) of the CGST ● applicability of notification No. 50/2018 (TDS from 1.10.2018) ● valuation methodology in case of TCS and ● definition of owner of goods <p>[Corrigendum dt.7.03.19]</p> |

| | | |
|---------|----------------------|--|
| (xi) | 77 | Denial of composition option by tax authorities and effective date thereof |
| (xii) | 85 | GST rate applicable on -Supply of food and beverage services by educational institution. |
| (xiii) | 90 | Seeks to clarify situations of compliance of rule 46(n) of the CGST Rule 46- Tax Invoice (n)- POS(Place of Supply) along with name of the State in case of inter- State supply |
| (xiv) | 92 | Clarification on various doubts related to “ Treatment of sales promotion schemes ” |
| (XV) | 95 | Verification of application for grant of new registration |
| (xvi) | 107 | Clarification on doubts related to supply of Information Technology enabled Services (ITeS services) |
| (xvii) | 122 | Generation and quoting of Document Identification Number (DIN) on any communication issued by the officers of the CBIC to tax payers and other concerned persons |
| (xviii) | 143 | Provision related to QRMP Scheme |
| (xix) | 160 | Clarification Regarding imp issues like- <ul style="list-style-type: none"> ● Sec.16(4),physical copy of invoice is compulsory during movement of goods or not |
| (xx) | 125,135 139 & 166 | electronic refund process & Refund related issues |
| (xxi) | 167 | GST on service supplied by restaurants through e-commerce operators |

20 Important CGST Rate Notifications issued upto dt. 15.06.2022

(i) Following 9 initial notifications dt. 29.06.2017 are very important-

| | Rate | Exemption | RCM U/S-9(3) | No Refund on unutilised ITC | Levy on E-commerce operator-Sec9(5) |
|----------------|----------------|----------------|----------------|-----------------------------|-------------------------------------|
| Goods | 1/2017 | 2/2017 | 4/2017 | 5/2017 | - |
| Service | 11/2017 | 12/2017 | 13/2017 | 15/2017 | 17/2017 |

Now, maximum rate notifications are issued to amend these initial notifications.

(ii) Other important rate notifications-

(10) **40/2017**-CGST rate – Only **0.05%** tax on penultimate supply for export

(11) **04/2018** It is related with following two services of **Real Estate Sector-**

(i) **Head 9954-** Construction Service of complex ,building or civil structure

(ii) **Head 9972-** TDR /FSI or Long term lease

This notification prescribes **the time of liability to pay tax (Time of supply)** for registered person supplying service by way of-

(i) Construction service **against** TDR service and

(ii) TDR service **against** construction

(12) **21/2018** – Definition of handicraft goods and reduced rate of tax on it (Partial Exemption @ 5% or 12%)

(13) **2/2019-** To give composition scheme for supplier of services with a tax rate of 3%+3% having annual turnover in preceding year upto Rs 50 lakhs.

(14) **6/2019** - Real Estate Sector- Time of Supply for TDR/FSI or Long term lease

- (15) 7/2019- Real Estate Sector- Notification of certain services to be taxed under RCM under Sec. 9(4)
- (16) 17/2021- dated 18.11.2021 w.e.f. 01.01.2022-”supply of restaurant service” notified to be under Sec.9(5)
- (17) 16/2021- dated 18.11.2021 w.e.f. 01.01.2022- Withdrawal of exemption given to “Governmental Authority or a Government Entity” (i.e Board, Nigam etc)
- (18) 22/2021- dated 31.12.2021 w.e.f. 01.01.2022-Withdrawal of Concessional rate given to “Governmental Authority or a Government Entity” (i.e Board, Nigam etc)
- (19) 1/2022-**Rate of tax on bricks and Earthen or roofing tiles increased from 5% to 12 % if ITC is taken**
- (20) 2/2022-**Rate of tax on bricks and Earthen or roofing tiles shall be only 3% if ITC is not taken**

26 Important “other than Rate” CGST Notifications issued upto 15.06.2022

- (1) 4/2017- Common Portal notified- www.gst.gov.in
- (2) 5/2017-Exempt from Registration only dealing in supply U/S 9(3)[i.e., RCM]
- (3) 6/2017 &11/2017-Mode of verification by OTP/EVC- Rule-26
- (4) 8/2017 &46/2017 &1/2018- **Composition**
- (5) 12/2017 &78/2020-**HSN Code-wef 1.4.2021**
For B2B invoices-Mandatory to indicate-
 - (i) For taxpayers upto Rs.5 Cr GTO-4 digit HSN code
 - (ii) For taxpayers more than Rs. 5 Cr GTO- 6 digit HSN code
- (6) 13/2017-Rate of Interest –U/S 50(1),50(3),54(12),56 & 56 proviso
- (7) 32/2017, 38/2017&56/2018- **Exemption from compulsory registration to inter-State supplies[Sec.24(i)] of specified handicraft goods**
- (8) 33/2017- **Name of deductor notified U/S 51(1)(d)-**
 - (i) PSU
 - (ii) Societies formed by CG or SG

- (iii) An authority or a board set up by-
 - (a) an Act of Parliament or a State Legislature; or
 - (b) established by any Government, with 51% or more participation by way of equity or control]
- (9) 39/2017 & 10/2018-(IGST-11/2017) Power of CGST refund also given to officers of SGST - **except** refund described under Rule 96 (Refund of IGST on Export)
- (10) 48/2017 -Deemed Export u/s 147 (For eg. -Supply of goods by a registered person to Export Oriented Unit)
- (11) 65/2017- For the purpose of TCS U/S-52-No need to be registered if-
 - (i) Not engaged in supply of goods U/S 9(5)
 - (ii) aggregate turnover is less than Rs, 20 lakh in a financial year,
- (12) 27/2018-To specify goods which may be disposed off by the proper officer after its seizure.(perishable or hazardous nature, depreciation in value with the passage of time)
- (13) 50/2018- TDS of 1% + 1% to be deducted w.ef 01.10.2018
- (14) 51/2018- TCS of 0.5% + 0.5% to be deducted w.ef 01.10.2018
- (15) 61/2018-No need of TDS if Supply is from PSU to PSU
- (16) 73/2018-No need of TDS if supply is from PSU to Govt. Department and Vice versa.
- (17) 10/2019/ and 3/2022-Threshold limit for registration increased to 40 lakhs engaged in exclusive supply of goods, exception-**Ice cream and other edible ice, Pan masala, Tobacco and manufactured tobacco substitutes, Building bricks Earthen or roofing tiles.**
- (18) 14/2019/ and 4/2022-Composition scheme limit increased from 1Cr. to 1.5 cr. No such Scheme for **Ice cream and other edible ice, Pan masala, Tobacco and manufactured tobacco substitutes, Building bricks Earthen or roofing tiles.**
- (19) 43/2019-Seeks to amend notification No 14/2019- Central Tax so as to **exclude “manufacturers of aerated waters” from the purview of composition scheme**

- (20) **69/2019-** Seeks to notify the common portal for the purpose of e-invoice.-
(i) www.einvoice1.gst.gov.in; to (X) www.einvoice10.gst.gov.in;
- (21) **19/2020-** Seeks to specify class of persons, “other than individuals” who shall undergo authentication, of Aadhaar number in order to be eligible for registration
- (a) Authorised signatory of all types;
- (b) Managing and Authorised partners of a partnership firm; and
- (c) Karta of an Hindu undivided family,
- (22) **71/2020-** Notification of the class of registered person required to issue invoice having QR Code [an invoice issued to an unregistered person (ieB2C invoice) by a registered person with turnover>Rs.500 crore in a financial year. They shall issue such invoice having QR Code w.e.f 1.12.2020]
- (23) **84/2020-** Seeks to notify class of persons to furnish a quarterly return and pay the monthly tax (QRMP)
- (24) **85/2020 -**Seeks to notify special procedure for making payment of 35% as tax liability in first two month for persons who have opted to furnish a return for every quarter
- (25) **05/2021-/01/2022- Who is required to issue e-invoice.**
- (i) 5/2021 - Registered person, whose aggregate turnover in a financial year exceeds Rs.50 Crores wef 1.4.2021)
- (ii) 01/2022- Taxpayers having aggregate turnover exceeding Rs. 20 Cr from 01 st April 2022.
- (26) **37/2021-wef 1.12.21 –**
- (i) Major change in “form GST DRC-03” and
- (ii) **Introduction of a new FORM GST DRC-01A** vide which “Intimation of tax ascertained” shall be given along with DRC-03
- (27) **40/2021- wef 29.12.21-** Major change in Rule 36(4)-
No ITC shall be availed by a registered person unless the details of the invoices have been furnished by the supplier in FORM GSTR-1 and have been communicated to the registered person in FORM GSTR-2B.

Following Important 11 Instructions issued till 15.06.2022 out of which Sl. no. 3,4,5,9,10 and 11 are most important

- (1) Consumer Welfare Fund made Rule 97(7A) of the CGST Rules, (Management & Administration).Year - 2017-18
- (2) Constitution of Grievance Redressal Committees at Zonal/ State level for redressal of grievances of taxpayers on GST related issues. Date-24.12.2019
- (3) Payment of GST by real estate promoter/developer supplying construction of residential apartment etc, on the shortfall value of inward supplies from registered supplier at the end of the financial year. Date-24.06.2020
- (4) Administrative instructions for “Recovery of interest on net cash liability” w.e.f.01.07.2017. Date - 18.09.2020
- (5) Procedure to be followed during search operations. Date-02.02.2021
- (6) Provisional Attachment of property under Sec.83. Date-23.02.2021
- (7) Issuance of SCNs in time bond manner. Date-22.09.2021
- (8) Guidelines for disallowing debit of electronic credit ledger under Rule 86A.Date-02.11.2021
- (9) Guidelines for recovery under section 79 for cases covered under explanation to Section75(12) of the CGST Act, 2017. Date-07.01.2022
- (10) Standard Operating Procedure (SOP) for Scrutiny of returns for FY 2017-18 and 2018-19.Date-22.02.2022**
- (11) Deposit of tax during the course of search, inspection or investigation. Date-25.05.2022

35 Important Sections of CGST/SGST

Sections 7, 9, 10, 12, 13,15,16,17,22,24,31,34,39,49,50,51,52,54,61,62, 63,67,68,73,74,75,76,79,122,126,129,130,132,161 and169.

Important articles of the Constitution of India related with GST

- o **Art.246A**-It gives power to both the Parliament and the State legislatures to make laws on GST.But, in case of Inter State Supply, only the Parliament is empowered to make law.
- o **Art.269A**- GST on Inter State Supply.

- o **Art.279A-** Formation of GST Council and its work.
- o **Art.366 (12)-**Definition of goods
 - (12A) - Definition of goods
 - (26A)- Definition of GST

Conclusion

The GST regime can be considered to still be in its nascent stage. I have not gone into the relevant case laws as there are many in each area - which will be applicable from the proceedings arising out of similar matters under the erstwhile laws - and they are easily available in many books or on Google. The jurisprudence of the GST will develop in the years to come and many contentious or unsettled matters will attain finality when the judgments are pronounced by the Hon'ble Courts. I am hopeful that this paper will help the GST officers to draft quality judgments which will become the foundation of the landmark judgments by the Hon'ble Courts of India.





Next Generation **INTERLOCK** Steel

एडवांस्ड

डबल रिब

2.5 गुना ज़्यादा




मज़बूत इंटरलॉक

भूकंप से

सम्पूर्ण सुरक्षा

ऊंची इमारतों के

लिए अनुकूल

Follow us on:   
www.kamdhenulimited.com

KAMDHENU

Nxt

DOUBLE RIB TMT BAR

Mfg. by :

DADIJI STEELS PVT. LTD.
SHIVSHIVA STEEL PVT. LTD.

(Authorized Manufacturer of Kamdhenu NXT Under Licence User Agreement)

Helpline : 9693294505

मूल्य शिक्षा और आध्यात्मिकता

मूल्य शिक्षा जीवन की अमूल्य निधि है एवं हमारे जीवन को खुशी प्रदान करने का सच्चा मित्र है। मूल्य शिक्षा धर्म दर्शन के उद्देश्यों को प्रतिबिम्बित करता है जिसका लक्ष्य है लोगों को बेहतर जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन देना। मूल्य शिक्षा जीवन की सुंदरता एवं वरदान है। ये सभ्यता का आवश्यक तत्व है। मूल्य ही हमारे चरित्र का द्योतक है एवं हमारी श्रेष्ठ नैतिकता का निर्धारण करती है। मूल्य शिक्षा के तहत वैश्विक मूल्य, मानवीय मूल्य एवं अल्पकालिक मूल्यों से संबंधित शिक्षाएँ सन्निहित है।



अंतरराष्ट्रीय नैतिक संस्थान के अध्यक्ष एवं शेयर्ड वैल्यूज फॉर एश्ट्रवुल वर्ल्ड के लेखक एसवर्थ एवं किंडर ने वर्ष 2000 में विद्यार्थियों पर प्रयोग किये जिसके तहत 75 मूल्यों की सूची बनाया गया एवं सर्वोत्तम मूल्य चुने गये थे। ये थे ईमानदारी, आदर, समानता, करुणा एवं स्वीकार्यता। यह भी निष्कर्ष निकाला कि ये मूल्य किसी धर्म से प्रेरित नहीं है बल्कि मानव होने के नाते हमारे आवश्यक मूल्य है।

शिक्षा में भौतिक जगत की शिक्षा दीक्षा की प्रधानता होती है। यह जीवन में रंग भरती है, आर्थिक उन्नति में सहयोग करती है, भौतिक उन्नति को चरमोत्कर्ष तक ले चलने में सामर्थ्य रखती है। भौतिक जगत के विभिन्न विषयों का ज्ञान कराती है किन्तु व्यक्तित्व निर्माण का कार्य संपन्न नहीं हो पाता है। विद्यालयों में मूल्य शिक्षा की मोटी-मोटी किताबें प्रचलन में है लेकिन शिक्षक बच्चों के सामने आर्दश स्थापित करने में सफल नहीं हो पा रहे हैं।

शिक्षा में जब मूल्यों को आध्यात्मिकता का स्थान दिया जाता है तो वह विद्या का रूप ले लेता है जिसमें आत्मिक, मानसिक परिष्कार पर बल रहता है। धर्म एवं सदाचार का श्रद्धा उत्पन्न करती है मानव में मानवोचित भावनाओं प्रेम करुणा एवं सदगुण की विकास करती है। सत्कर्म की प्रेरणा देती है मनुष्य का चरित्र निर्माण करती है और आत्मबोध के साथ परमात्मा परिचय कराने का सामर्थ्य रखती है एवं शांत तथा समुन्नत जीवन जीने की कला सिखलाती है।

आध्यात्मिकता के अन्तर्गत आत्मा एवं परमात्मा के बीच सम्बन्ध स्थापित होता है। इसमें आत्मा परमात्मा के निकट आने के योग्य बन जाती है और जीवन वास्तविक तथा सार्थक बन जाता है।

गीता के 10 अध्याय के 32वां श्लोक में श्री कृष्ण ने विद्या को परिभाषित करते हुए कहा है:—

“अध्यात्म विद्या विद्यानाम”

अध्यात्म विद्या ही विद्या है जिसे रामसुख दास जी ने विश्लेषण करते हुए लिखा है— जिस विद्या से मनुष्य का कल्याण हो उसे आध्यात्म विद्या कहा जाता है। दूसरी सांसारिक कितनी भी विद्याएं पढ़ लेने पर भी पढ़ना बाकी ही रहता है, किंतु इस आध्यात्म विद्या प्राप्त होने पर पढ़ना अर्थात् जानना बाकी नहीं रहता। मूल्य शिक्षा ही विद्या का वास्तविक रूप है जो आध्यात्मिक सौन्दर्य को प्रकट करती है।

मूल्य शिक्षा और आध्यात्मिकता की आवश्यकता

आज मानव जीवन में मनुष्य के सम्पूर्ण विकास हेतु शिक्षा के साथ मूल्यनिष्ठ शिक्षा और आध्यात्मिकता दोनों की आवश्यकता है। शिक्षा यदि सुख सामग्री है तो मूल्यनिष्ठ शिक्षा और आध्यात्मिकता सुख की अनुभूति। मूल्यनिष्ठ शिक्षा और आध्यात्मिक शिक्षा मानव मन को पशुजगत के मन से अलग और विलक्षण बनाती है। मानवोचित गुणों का विकास कर उसे खुंखार पशु सद श व्यवहार करने से रोकती है; उसमें धर्म के ग्रहणीय गुणों को विकास कर उसे विशिष्ट गौरव गरिमा प्रदान करती है। मूल्य शिक्षा कामधेनु के समान गुणवती है जो हर समय इच्छित फल देती है। मूल्य शिक्षा परदेश में माता की तरह रक्षा करती है इसे विद्वानों ने गुप्त धन कहा है जिसका संचय अति आवश्यक है। आज विज्ञान के चमत्कार ने अनेक अविष्कार किया है, एवं उन्नति के बहुआयामी मार्ग को प्रशस्त किया है। हजारों मील की दूरी को घंटों में तय करना आसान कर दिया है। संवाद प्रेषण सहज व सुगम कर दिया है। अनेक दूरस्थ प्रदेशों को अंधकार से प्रकाश में ला दिया लेकिन दुख है इस बात का कि यह चमत्कार व भौतिक शिक्षा पद्धति दो टुटे दिलों को जोड़ने में असफल रहा है, दो दिलों की दूरी को कम करने में विफल रहा है। मन के अंधकार को दूर करने में असफल रहा है जिसके कारण पुरे विश्व में Depression के शिकार लोगों की संख्या बढ़ते जा रही है। आज 35 प्रतिशत युवा पीढ़ी अपराध की दुनिया में धकेले जा रहे हैं। आज युवा पीढ़ी चौराहें पर खड़ी है, भ्रमित है, अधिकांशतः निराश है। उनका जीवन लक्ष्यहीन है, आत्महत्या करने को मजबूर हो रहे हैं।

बिखरे संकल्प से अच्छे समाज की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। मूल्य शिक्षा और आध्यात्मिकता का समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। जब हर स्तर की शिक्षा में मूल्य शिक्षा का समावेश कर दिया जाता है तो लोगों को यह सभ्य

नागरिक जीवन जीने के योग्य बना देती है। आज की समाजिक समस्या, आर्थिक समस्या, राजनीतिक समस्या एवं धार्मिक समस्या का एक मात्र समाधान मूल्यनिष्ठ एवं आध्यात्मिक शिक्षा है। मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्मिकता जीवन में धारण करने वाले व्यक्ति सामाजिक जीवन व्यवस्था में अधिक गहराई तक प्रविष्ट कुप्रवृत्तियों भ्रष्टाचार, घुसखोरी तथा भाई-भतिजावाद जैसी बुराईयों महिलाओं बच्चों एवं पिछड़ी जाति के लोगों के साथ होने वाले भेदभाव को समाप्त करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। ऐसी श्रेष्ठ प्रवृत्तियों के कारण समाज में सर्वाधिक विपन्न लोगो के भी आत्मसम्मान जागृत हो जायेंगे और वे अपनी प्रतिष्ठा तथा स्वाभिमान की रक्षा कर सकेंगे। मूल्य शिक्षा और आध्यात्मिकता लोगों को इतना शक्तिशाली बना देती है कि वे मन, वचन एवं कर्म से लालच स्वार्थ एवं हिंसा की भावना का प्रतिकार करने के समर्थ हो जाते हैं। मूल्य शिक्षा और आध्यात्मिकता से मनुष्य में आत्मत्याग एवं कर्मयोग की भावना प्रबल होती है।

मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता से मनुष्य के अंदर आंतरिक शक्ति का विकास होता है जिसमें भय से मुक्त हो सकते हैं। संगठन व्याधियों से मुक्त हो सकते हैं। मानसिक वर्जनों से मुक्ति मिलती है, चिंता से मुक्ति मिलती है अंधविश्वास दूर होता है व्यक्तित्व का विकास होता है, मानसिक शक्ति की प्राप्ति होती है, श्रेष्ठ मानवीय कलाओं का विकास होता है, मूल्यनिष्ठ वातावरण का निर्माण होता है। नशीलें पदार्थ से मुक्ति मिलती है, परीक्षा के भय से मुक्ति मिलती है।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिषद आयोग ने भी शिक्षा के क्षेत्र में मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता पर जोर दिया है।

मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता का समय

लोग कहते हैं मूल्य शिक्षा और आध्यात्मिकता बड़े बुर्जुगों के लिए है, सेवानिवृत्त जीवन के लिए है, लेकिन समय आज जो ईशारा कर रहा है उस दृष्टिकोण से आज हर आयुवर्ग के लिए मूल्य शिक्षा अध्यात्मिक रूप से आवश्यक हो गया है। "कहा जाता है मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण गर्भावस्था के चौथे मास से दो वर्ष की आयुतक सम्पन्न हो जाता है।

योग विज्ञान कहता है 11 वर्ष की आयु से पीट्रीयुटरी ग्लैण्ड का क्षय होना शुरू हो जाता है जो मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में मुख्य भूमिका निभाता है और यह इससे भी सही प्रतीत होता है कि आज नवजात बच्चे का आकर्षण मोबाईल गेम, टेलीविजन के प्रति झुकाव देखा जा रहा है वो मोबाईल के सहारे खाते है नृत्य

करते हैं, पढ़ते हैं मानो वही जीवन का आधार है। इससे यह संकेत मिलता है माता पिता के जीवन शैली का स्पष्ट प्रभाव बच्चों में दिख रहा है। आज मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता ही एकमात्र विकल्प रह गया है जिसके द्वारा अपनी नष्ट हो रही संस्कृति को बचा सकते हैं। युवा पीढ़ी के लिए इसकी विशेष आवश्यकता है क्योंकि विश्व के नवनिर्माण में ज्यादा भागीदारी किया जा सकता है। यदि श्रवण पुत्र की लालसा है तो गर्भावस्था से ही मोबाईल व्हाट्सप के बदले सदाचार जीवन शैली व आध्यात्मिकता को अपनाने की आवश्यकता है। क्योंकि गर्भस्थ जीवन अधिक शक्तिशाली और संवेदनशील होता है।

अपने अल्प आध्यात्मिक जीवन में हर वर्ग के साथ मानवीय संवेदनाओं को झकझोरने वाली घटित घटनाओं के कारण हुई बर्बादी के मन्जर को देखते हुए यह कह सकते हैं कि जैसे आम का फल खाने के लिए आम के छोटे पौधे के उपर ही ध्यान देना होता है। नष्ट होने से बचाने के लिए नियमित सिंचाई, कीटनाशक, दवा, खाद आदि का प्रयोग किया जाता है। अच्छे स्वाद के लिए आम के अच्छे जाति का पौधा लगाना होता है, ठीक उसी प्रकार आज अच्छे मानव की रचना में देश को आदर्श नागरिक की भेंट देने के लिए अच्छे व आदर्श माता—पिता, भाई—बहन, सम्बन्धी जन के लिए, अच्छे चिकित्सक, अच्छे शिक्षक अच्छे न्यायविद, आदर्श समाजसेवी, सुसंस्कृत कलाविद, गुणवान एवं पारदर्शित रखने वाले गैर सरकारी संगठन आदि के लिए विद्यार्थी जीवन से ही उनके व्यक्तित्व निर्माण पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता का बीजारोपण में माता—पिता व शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है। आदर्श माता पिता एवं शिक्षक अपने जीवन में मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता को धारण कर बच्चों एवं विद्यार्थियों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत कर उनके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अपना सकते हैं।

मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता के महत्व को देखते हुए शिक्षाविदों ने भी अपनी राय जाहिर की है एवं इसके प्रचार प्रसार हेतु शिक्षक के अलावा अन्य स्रोतों का भी आगे बढ़कर कार्य करने का परामर्श दिया है ताकि सभी लोग आदर्श मूल्यों एवं नैतिकता को समझ सकें। शिक्षा विभाग तथा मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अन्य क्षेत्रों जैसे—परिवार, मीडिया, (टी०बी०, रेडियो इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया) रोजगार विभाग एवं गैर सरकारी संगठन आदि के बीच सहयोग आवश्यक है। भारत की लगभग 1 अरब जनसंख्या पर मीडिया का गहरा प्रभाव है एवं लोगों को अपना नैतिक स्वास्थ्य सुधारने की प्रेरणा दे सकता है। यदि अन्य

धार्मिक संगठन भी इस दिशा में कार्य करें तो सुंदर समाज की रचना में गति आ जायेगी। शिक्षक के लिए मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता की डिग्री अनिवार्य किया जाना चाहिए। व्यवसायिक संगठनों द्वारा मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता का व्यवसायिक वर्ग के बीच प्रचार—प्रसार हो ताकि अनैतिक व्यापार में लगे हुए लोगों का तीसरा नेत्र खुल सके।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि

जहाँ शिक्षा का बाजार हो—

मोबाईल वाट्सप व इन्टरनेट ही शिक्षा का आधार हो

नकारात्मकता व हिंसात्मक वृत्ति व कृति से भरा फिल्मों का बहार हो

तामसिक भोजन ही जीवन का आधार हो

जहाँ चारों ओर बेटियाँ शर्मसार हो

अत्याचार, दुराचार, भ्रष्टाचार का चित्कार हो

घोटाले का ही व्यापार हो

युवा पीढ़ी के जीवन में घोर अंधकार हो।

धर्म जाति लिंग व भाषा ही युद्ध का हथियार हो

वहाँ

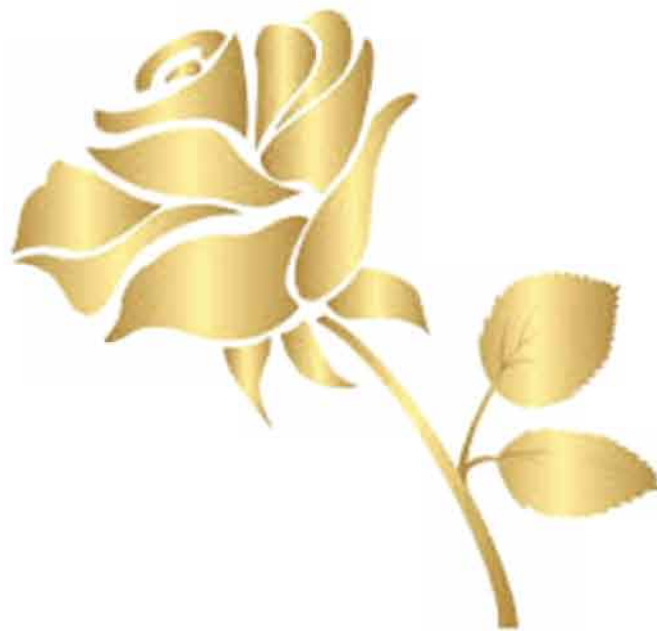
विश्व में शांति स्थापित करने के लिए सुखद व आनंदित जीवन जीने के लिए स्वर्णिम युग को पुनर्स्थापित करने के लिए मूल्य शिक्षा और अध्यात्मिकता का भरपूर प्रचार प्रसार हो।

(सुबोध राम)

राज्य—कर अपर आयुक्त,

वाणिज्य—कर विभाग,

BEST WISHES



NEELKAMAL STEELS PVT. LTD.
PATNA

बाल संजीवनी (लघुकथा)

सुबह के छः बज चुके थे दादा जी अपनी लाठी लेकर पार्क में सैर करने के लिए निकल गए थे। अभी सड़क पर इक्की-दुक्की गाड़ियाँ ही चल रही थीं। इस बात से दादाजी निश्चित थे। उन्होंने पार्क में एक घंटे का समय बिताया। जब वापस आने लगे तो देखा, सड़क पर गाड़ियों का रेला दौड़ने लगा था। कल उन्हें एक बाइक वाले ने धक्का मार दिया था। आज गाड़ियों का इतना आना-जाना देखकर वे डर गए और पार्क के बाहर रखी एक बेंच पर बैठ गए।



कल पत्नी ने समझाया था, पार्क जाकर टहलना छोड़ दो। घर के अंदर ही थोड़ा-बहुत टहल लिया करो। मगर उन्होंने खुली हवा के लाभ का वास्ता देकर पत्नी की बात को टाल दिया था। पत्नी के पांव कमजोर हो गए थे। वह उन्हें लेने आ नहीं सकती थी। दादाजी चिंतित होने लगे कि अब किसे बुलाऊं, किसे फोन करूं..?

तभी दस वर्ष का एक नन्हा बच्चा उनके समीप आया उसने पूछा, “दादाजी, आप परेशान क्यों लग रहे हैं? क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूँ?” दादाजी ने पूछा, “क्या तुम अकेले हो? तुम्हारे साथ कोई बड़ा व्यक्ति नहीं है?” बच्चे ने कहा, “बस आपकी तरह मेरे दादा-दादी हैं। मैं उनके साथ रहता हूँ और उनकी देखभाल करता हूँ।” और तुम्हारे माता-पिता..? “दादाजी ने पूछा। इसपर बच्चे ने उदास होते हुए कहा, “अब वे हमारे बीच नहीं हैं।” दादाजी की आंखे डबडबा गयीं। उन्होंने कहा, “बेटा, तुम घर जाओ। तुम्हारे दादा-दादी तुम्हारी राह देख रहे होंगे। मुझे कोई परेशानी नहीं है।”

दस वर्ष का वह नन्हा बच्चा सधे कदमों से सड़क पर जाने लगा। यह देख दादाजी को लगा, एक नन्हा बच्चा खुद को और अपने दादा-दादी को संभाल सकता है तो फिर मैं क्यों नहीं अपने आप को संभाल सकता हूँ? बुढ़ापा तो सिर्फ एक मन की कमजोरी है। अपने विश्वास और हिम्मत से इसे दूर किया जा सकता है। उन्होंने अपने आप को जगाया। उन्होंने झट से अपनी छड़ी उठाई और अपने डर को किनारे कर उस बच्चे के पीछे-पीछे चलने लगे।

थोड़ी ही देर में वह बच्चा आँखों से ओझल हो गया। लेकिन अब दादाजी को कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। उनमें एक अजीब-सी उर्जा और निडरता आ गई थी। वे सधे कदमों से अपने घर की तरफ बढ़ने लगे थे।

ज्ञानदेव मुकेश

(मूल नाम—मुकेश कुमार वर्मा, अवकाशप्राप्त राज्य कर संयुक्त आयुक्त)

पता— 301, साई हार्मोन अपार्टमेंट, अल्पना मार्किट के पास,

न्यू पाटलिपुत्र कॉलोनी मेन रोड, पटना— 800013 मो०नं० — 9470200491

BEST WISHES



RAGHUNATH SERVICES STATION

PATNA

कराधान एवं प्राकृतिक न्याय (Taxation and Natural Justice)

आप न्यायिक अधिकारी है, तो आपको न्याय निर्णय देना होता है। आपके न्याय का क्षेत्र कराधान (Taxation) भी हो सकता है। भले ही कोई न्यायिक प्रक्रिया अर्ध न्यायिक (Quasi Judicial) हो, प्रक्रिया की प्रकृति समान होती है। अर्ध न्यायिक इसलिए कि सरकार का भी पक्ष आपको ही रखना है, और न्याय निर्णय भी आप को ही देना है। आपको प्राकृतिक न्याय के तत्त्वों एवं विशेषताओं को भी समझना चाहिए, ताकि न्यायिक प्रक्रिया में कोई त्रुटि नहीं रह जाय।



न्यायिक व्यवस्था में यह माना जाता है कि 'न्याय से किसी को हानि नहीं होती।' न्याय राज्य द्वारा स्थापित एवं संरक्षित वैधानिक व्यवस्था है जिसके उल्लंघन करने पर राज्य दण्डित भी करता है। कराधान व्यवस्था भी एक वैधानिक प्रक्रिया है जिसके उल्लंघन पर दोषी को उपयुक्त दंड दिया जाता है। अतः कराधान के पदाधिकारी को यानि प्राधिकार को "प्राकृतिक न्याय" को समझना होगा। इसकी समझ के बिना कोई भी "समुचित एवं उपयुक्त" न्याय नहीं कर सकता है। स्थापित न्याय के अनुसार किसी दोषी या कराधान के अपवंचक (Wvader/Who avoids taxes) को दण्ड मिल सकता है। न्याय के दो आयाम हैं – वैधानिक न्याय और प्राकृतिक न्याय। न्याय क्या है? इसे अंग्रेजी में Justice कहते हैं। लोगो, समुदायों, प्रकृति और क्षेत्रों के साथ समुचित व्यवहार ही न्याय है। न्याय को वैधानिक भी होना चाहिए और प्राकृतिक भी होना चाहिए।

पहले हमें प्राकृतिक न्याय के दार्शनिक पक्ष को समझना चाहिए। अर्थात् इसके मूल तत्व को समझना चाहिए। इसे इसका सैद्धांतिक पक्ष भी कहा जाता है। किसी भी वैधानिक न्याय का अंतिम लक्ष्य उसे प्राकृतिक न्याय के नजदीक लाना है। न्याय से समाज का भी हित होना चाहिए और व्यक्ति के विपरीत भी नहीं जाना चाहिए। न्याय यदि रूढ़िवादी (Conservative) है तो उसे सुधारवादी (Reformative) भी होना चाहिए। अर्थात् न्याय यदि अतीत की ओर अभिमुख हो तो उसे उज्ज्वल भविष्य की ओर भी अभिमुख होना चाहिए। प्लेटो तो कहते हैं कि न्याय के साथ संयम, साहस, और तर्क अर्थात् तार्किकता भी होनी चाहिए।

पहले कबिलाई हितों, साम्राज्य के हितों और सामंतों के हितों के अनुरूप न्याय किए जाते रहे क्योंकि विज्ञान और तर्क इस अवस्था तक विकसित नहीं था। अज्ञानता की दुनिया में अल्प ज्ञानी भी न्यायिक हो जाता था, पर आज न्याय के साथ जनतंत्र है और वैज्ञानिक तार्किकता का समर्थन भी है। न्याय के साथ समानता अवश्य होती है और समानता के बिना न्याय भी नहीं होता। न्याय के लिए स्वतंत्रता भी चाहिए और बंधुत्व भी आज सभी विकसित समाजों और

व्यवस्थाओं का मूलभूत आधार न्याय, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व ही है। प्राकृतिक न्याय के भी विभिन्न आयाम हैं।

विधि के कई क्रियात्मक पक्ष हैं। इसके अन्तर्गत कई बातें स्थापित हैं जैसे लोक प्राधिकारी मनमानी नहीं करें। सभी संबंधित पक्षों को सुनवाई के लिए समुचित समय दें। सभी संबंधित पक्षों को सुनवाई के लिए समुचित अवसर दें। ताकि वे अपनी बातों का उपस्थापन न्यायाधीश के समक्ष कर सकें, जिस पर न्याय तंत्र द्वारा सम्यक विचारण किया जा सके। यह विधि का स्थापित नियम है और कोई इसके विरुद्ध नहीं जा सकता। उसे समुचित समय और अवसर ही नहीं दिया जाएँ, अपितु उसे समुचित ढंग से सुना भी जाएँ। यदि कोई न्याय निर्णय में इनका अनुपालन नहीं किया जाता, तो वह न्याय निर्णय उसी तरह शून्य माना जाएगा जैसे अन्य मामलों में न्याय से असंगत होने पर शून्य माना जाता है। इसी कारण किसी व्यक्ति को अपने से संबंधित मामलों में न्यायाधीश की तरह सुनवाई नहीं करने दिया जा सकता। अर्थात् कोई व्यक्ति अपने मामलों में न्यायाधीश नहीं हो सकता। यह पक्षपात के प्रभाव को रोकने के लिए अनिवार्य है।

प्राकृतिक न्याय के पहले आयाम को **AUDI ALTERAM PARTEM** भी कहते हैं, जिसका अर्थ होता है कि दुसरे पक्ष को भी सुना जाए। किसी भी विवाद में किसी एक ही पक्ष को सुनने पर समुचित न्याय नहीं दिया जा सकता है। जब तक दोनों पक्षों को समुचित ढंग से नहीं सुना जाए, न्याय ही नहीं सकता। किसी भी विवाद में दोनों पक्षों को लगता है कि उनकी गलती या तो नहीं है या बहुत ही कम है या यह विवाद ही दुसरे पक्ष के द्वारा शुरू किया गया। हर पक्ष को लगता है कि विवाद का कारण दुसरा पक्ष ही है। अतः समुचित न्याय के लिए दोनों पक्षों को अवश्य सुना जाए। “कारण बताओं सूचना” का आशय यही है। प्राकृतिक न्याय का दुसरा आयाम है कि इसकी सुनवाई उचित ढंग से हो और इसी कारण इन सुनवाईयों को जनता के समक्ष किया जाता है, कुछ मानवीय गरिमा के विशिष्ट मामले इस स्थापित नियम के अपवाद होते हैं जैसे बलात्कार या चरित्र हनन की सुनवाई। ऐसा माना जाता है कि न्यायिक प्रक्रिया और न्याय निर्णय यदि सार्वजनिक रहें, तो समुचित न्याय की स्थापना हो सकती है। प्रत्यक्ष सुनवाई ही इसका दूसरा आयाम है।

प्राकृतिक न्याय का तीसरा आयाम है कि इसकी सुनवाई एक निश्चित समय सीमा के अन्दर किया जाए। सामान्य मान्यता है कि समयबद्ध न्याय निर्णय का नहीं होना न्याय नहीं है। ऐसे कई मामले हैं जिसमें न्याय निर्णय कई पीढ़ियों के बाद आए या उन न्याय निर्णयों का कोई अर्थ नहीं रह गया जब न्याय निर्णय आया। परन्तु पर्याप्त न्यायाधीशों का अभाव होना मजबूरी बतायी जाती है। इसी कालबद्धता के लिए “परिसीमा अधिनियम, 1963 (Limitation Act)” लागू है। कराधान में भी कालबद्धता (Time Limitation) होती है। यह न्याय निर्णय में भी लागू है, और शास्ति (Penalty), जुर्माना (Fine), मूलधन एवं ब्याज (Interest) में भी लागू है। इन राशियों को कालबद्धता से बचाने के लिए ही नीलम पत्र दायर किया जाता है, ताकि बकाया राशि “भू राजस्व के बकाया” में बदल जाय।

प्राकृतिक न्याय का चौथा आयाम है कि प्राकृतिक न्याय के तत्वों को सुस्पष्ट उल्लेख यदि विचाराधीन विधि में नहीं भी हो तो इसकी उपस्थिति उस विधि के प्रावधानों में हमेशा समाहित माना जाता है। इसका अर्थ हुआ कि इसकी चर्चा यदि विधियों में स्पष्ट नहीं भी है तो भी माना जाता है कि प्राकृतिक न्याय के तत्व हर विधियों में अंतर्निहित है और इसे नियमों में समाहित मानते हुए इसका समुचित पालन किया जाना चाहिए। इसे स्वविवेक का क्षेत्र नहीं माना जाता है और इसे शताब्दियों से स्थापित माना जाता है। यह वैधानिकता का मूलाधार है, यह तार्किकता का आधार है, यह यथार्थिता का पैमाना है और समुचित न्याय की धुरी (Axis) है।

प्राकृतिक न्याय का पांचवा आयाम है कि विवाद में अपने पक्ष को समुचित ढंग से प्रस्तुत करने के लिए सुनवाई के समय किसी अधिकृत वक्ता (अधिवक्ता) यानि वकील को भी रख सकता है। अपने पक्ष को समुचित ढंग से रखने और अपनी बातों के समर्थन में किसी अन्य व्यक्ति को गवाह के रूप में उपस्थित करा सकता है। यह प्राकृतिक न्याय का एक अटूट हिस्सा है।

प्राकृतिक न्याय का छठा आयाम है कि यह न्यायिक ही नहीं, अर्ध न्यायिक मामलों में भी अनिवार्य रूप से लागू है। इसका स्पष्ट अर्थ हुआ कि यह नियम कराधान और अन्य अर्ध न्यायिक मामलों में भी समान रूप से लागू है। उचित समुचित प्रशिक्षण के अभाव में और संबंधित जनता की जागरूकता के अभाव में इस अर्ध न्यायिक मामलों में इस प्राकृतिक न्याय से लोग लाभान्वित होने से वंचित हो जाते हैं। इस प्राकृतिक न्याय से लोग लाभान्वित होने से वंचित हो जाते हैं। ऐसे मामलों में सब से ज्यादा प्रभावित वर्ग प्रत्यक्ष करदाता या अप्रत्यक्ष करदाता ही होते हैं क्योंकि इनके मामले एक वर्ष में कई बार भी आ सकते हैं। इसका मुख्य कारण ऐसे प्राधिकारों की लापरवाही या अज्ञानता और करदाताओं की अज्ञानता या जागरूकता का अभाव भी है।

प्राकृतिक न्याय की प्रकृति और विशेषता को प्रत्येक नागरिक, खास कर युवाओं को जानना ही चाहिए। न्यायिक अधिकारों के प्रति जागरूकता का अभाव का होना जनतंत्र के लिए अच्छा नहीं है। न्यायायिक प्रक्रियाओं पर न्याय देने वालों की लापरवाही और जनता की जागरूकता को रेखांकित करना ही मेरा उद्देश्य है।

निरंजन सिन्हा

स्वैच्छिक सेवानिवृत्त राज्य कर संयुक्त आयुक्त,

बिहार, पटना



BEST WISHES



DADIJI STEELS PVT. LTD.

PATNA



“कर्मयोगी महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले”

— डॉ० सुनील कुमार —

भारत के महान समाज-सुधारकों की कड़ी में एक नाम महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले का है जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी में समाज के कुरीतियों एवं तत्कालीन तथाकथित धार्मिक-सामाजिक ठेकेदारों के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद की और भारतीय समाज को एक नयी राह दिखायी। ऐसे तो आमतौर पर दलितों के उद्धारकर्ताओं में कई बार महात्मा गांधी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है परन्तु यह जानकर आश्चर्य होगा कि दलितों के उत्थान हेतु महात्मा गांधी ने जो कार्य किए उसके प्रेरणा स्रोत महान विभूति ज्योतिबा फुले रहे।



आधुनिक युग में उन्नीसवीं सदी का मध्य दलितों एवं शोषितों की मुक्ति के प्रयास का दौर समझा जाता है। यों तो तत्कालीन युग में भारत के हर कोने में समाजिक-धार्मिक सुधारों के लिए प्रवास शुरू हो चुके थे और पुनर्जागरण का बिगुल बज चुका था। लेकिन ज्योतिबा फुले जैसे शख्स ही दलितों की मुक्ति का संग्राम रच रहे थे। शूद्रों एवं निम्नवर्गों के लोगों के लिए सर्वांगीण प्रगति का पथ प्रशस्त करने का श्रेय ज्योतिबा फुले को जाता है।

ब्रिटिश काल में अंग्रेजों को मात्र सत्ता का मोह रहा और यहाँ की धन-सम्पत्ति को हड़पने का पूरा प्रयास किया गया। ये सत्ताधारी अंग्रेज लोग यहाँ की सामाजिक कुव्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, कुरीतियों तथा रूढ़िवादिता को नजर अंदाज कर रहे थे। यह तो महात्मा ज्योतिबा फुले जैसे समाज सुधारकों की देन है कि ब्रिटिश हुकूमत इन समाज सुधारकों की विचारधारा एवं किए जा रहे प्रयासों के तहत लोकहित में सार्वजनिक कानूनों को बनाया ज्योतिबा फुले ने दलितों, शूद्रों, अस्पृश्यों एवं निम्न जातियों की मुक्ति हेतु ब्रिटिश शासन को जगाया और तत्कालीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन का प्रयास किया।

महात्मा ज्योतिबा फुले ने वैसे समाज में क्रांति का बीज बोया जो समाज रूढ़िवादिता के चंगुल में फंस चुका था, मानसिक रूप से मंद और आर्थिक रूप से पंगु बन चुका था। जिस प्रकार प्राचीन काल में महात्मा गौतम बुद्ध ने पिछड़े भारतीय समाज को आत्म-ज्योति दिखायी थी उसी तरह आधुनिक काल में कर्मयोगी ज्योतिबा फुले ने दलित-पिछड़े समाज को सामाजिक चेतना एवं सत्यमार्ग का पथ दिखाया।

उन्होंने पूरे विश्व को एक मानव-परिवार की कल्पना दी और समूचे समाज को परिष्कृत एवं परिमार्जित करने का प्रयास किया उनका 'सत्यशोधक समाज' का सपना पूर्णरूपेण तो साकार नहीं हो सका परन्तु यह उनका ही प्रयास था कि भारत के कर्म प्रधान लोग व्यावहारिकता के धरातल पर चिंतन करने लगे। सदियों की दासता, शोषण एवं अन्याय की जड़े एवं अज्ञान का अंधकार ज्योतिबा फुले के त्यागरूपी प्रयास से छँटने लगा।

लोकहितकारी तत्त्वद्रष्टा ज्योतिबा फुले मानवता के पक्षधर थे और जिसके लिए मात्र फुले ही नहीं अपितु उनकी धर्मपत्नी सावित्री ने भी अपना सर्वस्व जीवन जनकल्याण में अर्पित कर दिया। ज्योतिबा फुले ने भी संत कबीर की तरह ब्राह्मण वर्चस्व को स्वीकार नहीं किया और न ही धार्मिक पाखंड एवं ढोंग को स्वीकारा। वे जीवनपर्यन्त वर्ण-व्यवस्था, धार्मिक कट्टरपन, धर्म एवं जाति भेद, ऊँच-नीच की भावना एवं अन्याय और शोषण के विरुद्ध लड़ते रहे। कट्टर ब्राह्मण लोग उनसे जलने लगे थे क्योंकि उनका अस्तित्व खतरे में नजर आने लगा था ऐसी परिस्थिति में इन कट्टर ब्राह्मणों ने उनके खिलाफ षड्यंत्र रचा और ज्योतिबा फुले को समापत करने हेतु दो गुंडे भेजे गए। एक रोडे नाम का असामाजिक व्यक्ति एवं दूसरा ढोंडीराम नामक मार-काट के लिए कुख्यात व्यक्ति-दोनों रात्रिकाल में फुले को मारने के लिए नंगी तलवार लेकर आए परन्तु उनके पैरों की आहट से फुले एवं उनकी पत्नी सावित्री की आँख खुल गई। इस विषम परिस्थिति में मृत्यु को अपने सामने देखकर भी वे जरा-से भी विचलित नहीं हुए। फिर सामान्य रूप से उन्होंने दोनों से पूछा कि उन्होंने क्या पाप किया है और किसका बुरा चाहा है? उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि उन्होंने अपना सारा जीवन, अमूल्य समय एवं समस्त साधन दलितों के उत्थान एवं गरीबों की सेवा में लगाए है। फिर उन्हें अंधेरी गलियों से निकालने हेतु वे कुलीन एवं ऊँची जातियों से कठोर संघर्ष किए हैं। यह त्यागी जीवन उनका कहाँ है, यह तो शोषितों एवं दलितों की सेवा के लिए समर्पित हो चुका है। इन बातों से फुले को मारने आए हुए दोनों निम्न जाति के गुंडों का हृदय परिवर्तन हो गया और उन दोनों को समझ में आ गया कि ज्योतिबा फुले तो उनके भले के लिए लड़ रहे हैं। वे दो ज्योतिबा के चरणों में गिर पड़े और उन्होंने सारा भेद आदि बता दिया। ज्योतिबा जैसे विशाल करुणा मूर्ति ने अभयदान देते हुए कहा कि वे दोनों कल से उनकी पाठशाला में पढ़ने हेतु आ जाएँ ताकि उनके भी ज्ञान-चक्षु पूर्णरूपेण खुल सकें। बाद में ये दोनों फुले के साथ हो गए एवं 'सत्यशोधक समाज' के प्रभावशाली कार्यकर्ता बन गए।

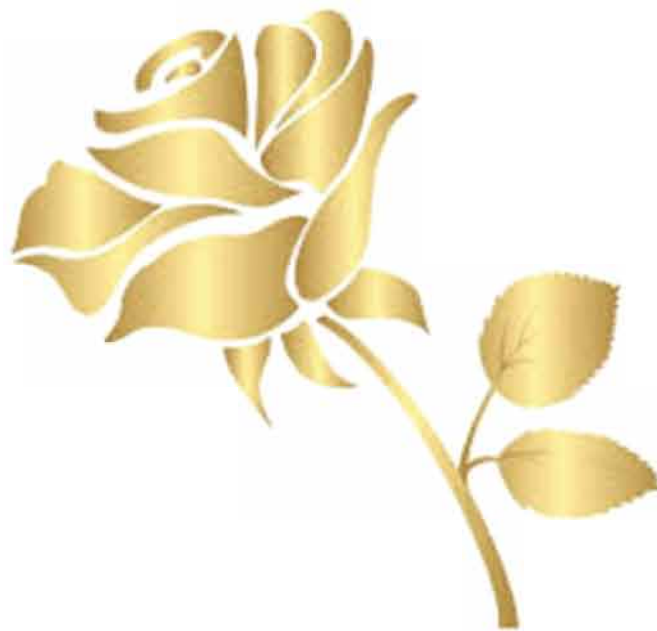
इस तरह, ज्योतिबा फुले की तेजस्विता एवं आत्मशाक्ति से हजारों-लाखों पीड़ितों के आँख खुल गए और सामाजिक-उत्थान की धारा में शामिल हो गए फुले एक ऐसे मंत्रद्रष्टा ऋषि थे जिनके महाप्राण एवं निष्कलंक व्यक्तित्व से भारतीय समाज की बहुत-सी भ्रातियाँ दूर हो गईं। ज्योतिबा ने अपना सशक्त लेखनी एवं ओजस्वी भाषणों में यह बताया कि प्राचीन भारत धार्मिक-ग्रंथों में वर्णित बहुत से विचार मानवता के लिए घातक हैं और उन्होंने आजीवन इस विषमता एवं रूढ़िवादिता के विष को दूर करने का अथक प्रयास किया। अतः ज्योतिबा फुले मात्र आदर्शवादी नहीं अपितु कर्मयोगी थे जिन्होंने भारतीय समाज के शर्मनाक पहलुओं पर कठोर कुठाराघात किया और फिर जिसका परिणाम सही रहा। आज भी इनकी विचारधाराएँ प्रासंगिक हैं।

लेखक

डॉ० सुनील कुमार
37वीं बैंक बी० पी० एस० सी०
राज्य कर संयुक्त आयुक्त



BEST WISHES



DINA METALS LTD.

PATNA



By

PANKAJ KUMAR PRASAD

**Joint Commissioner of State Tax
Incharge Gaya Circle.**



Adjudication process under Goods and service Tax Law :-

Goods and Service Tax Law in India is now 5 years old. In these five years so many amendments have come up— some to plug possibilities of tax evasion and leakages, and some amendments in the light of some judicial reviews of Hon'ble Courts.

GST law addresses the requirement of modern day business practices. Any taxation whether Direct or Indirect in the world is based on Natural Justice. An Adjudicating Authority is a Quasi-Judicial Authority. A quasi Judicial body comes in between administrative Authority and Judicial body. So when an adjudication process starts - that means you though being an administrative Authority follow some of the Judicial processes while Adjudicating a proceeding against a taxpayer based on the Principle of Natural Justice.

Therefore a goods tax practice must meet the Principle of Natural Justice. So when we as a taxing Authority understand the various shades of Natural justice, then there is very remote chance of striking down an Adjudication order by any Appellate Court.

Assessing /Adjudicating Authorities while meeting the Principle of Natural Justice, the following General Principles must be followed :-

- (i) Show Cause Notice (SCN)
- (ii) Opportunity of Hearing
- (iii) Unbiased Order
- (iv) Lawfulness of SCN & order

1. SCN :-

A show cause notice is the beginning of an adjudication process. SCN must be served upon the Assessee within time. It must contain the gist of accusation based on record, inquiry, some investigation or some external sources. SCN must mention the provision of the Act/Rule and section under which it is being served and containing the time, date, place and the Authority before whom to Reply either on Physical Presence or through any Authorised Representative.

SCN must be clear and precise. In the order passed the officer must mention the way SCN was served, and its subject matter so as when the order is challenged before any higher court, the court can understand the matter quickly and clearly.

2. Opportunity of Hearing :-

In the light of the Gist of Accusation contained in SCN served, the Reply of Taxpayer must be heard patiently and considered neutrally. Reply of the Taxpayer must be recorded on every submission relating to the Gist of Accusation in SCN. If Taxpayer asks for some Adjournments, that should be given in accordance with the provision of law, so as the Taxpayer reaches a point where he has nothing more to rebut the accusations.

3. Unbiased Order :-

Order of the officer must be made in the light of the gist of accusation in the SCN and the Reply of the Taxpayer. Writing an unbiased Order is very important and difficult. Because being an administrative officer you have first made the points of Accusation. And also you are examining the Reply of the Accused. So there is all likelihood of biasedness to crop in the Order or Decision made. Therefore from the Order/Decision made the justice not only be done but also should appear to be made prima facie. Only then any Order/Decision can be confirmed/sustained in the higher Courts of appeal and Judicial Review of Hon'ble Courts.

4. Lawfulness of Order :-

The entire process of adjudication must be made under some provision of law. The Section, Rule & Act must be mentioned in the SCN issued and the order/Decision passed. Order passed must be reasoned and speaking. Means when the Taxpayer or Higher Court of Appeal goes through the order/Decision has every Point of Determination as contained in SCN is clear to them automatically. And there hardly be any scope of any further requirement of questioning the Petitioner and the Respondent.

A Sample Model outline of Order in generic form may be thought of as below :-

- (a) Details of Taxpayer, Period under consideration, Case no.
.....
.....
- (b) Gist of Accusation Point wise
.....
.....
- (c) Reply of Taxpayer as per points raised in the SCN.
.....
.....
- (d) Reasoned Analysis of points of accusation in SCN and their Reply by the Taxpayer.
- (e) Finally a reasoned order/Decision of the Adjudicating Authority should be passed with date and Order Reference number.

Moreover the Order/Decision passed must be Communicated to the Taxpayer within time so as in case of any disagreement on some points he may go in appeal within prescribed time limit.

In reference to above discussion now I would like to quote some of the Hon'ble Courts judgments that all Quasi–Judicial Authority/Adjudicating (or Assessing) officer must keep in mind.

In Re : Bihar Risk Management Consultancy Pvt. Ltd. Vs State of Bihar (2021) 47 GSTL 457 (Patna), - it was held that an ex parte order fastening financial liability passed without following Principle of Natural Justice and adequate Opportunity of Hearing not given or reason assigned was to be set aside with further direction.

In Suman Kumar V. State of Bihar (2021) 47 GSTL 449 (Patna) the Hon'ble Patna High Court held the same view as been narrated above.

“ In M/S Kranti Associates Pvt. Ltd. & Another Vs. Sh Massod Ahmad khan & other (2010) 5 SCALE 199; (2011) 273 E.L.T. 345 (SC), Hon'ble Supreme Court observed that the face of an Order passed by a quasi – Judicial authority affecting the rights of parties must speak.

Having discussed a wide breadth of jurisprudence, the supreme Court summarised the salient points as below :-

- (a) A quasi–Judicial authority must record reasons in support of its conclusions.
- (b) Insistence on recording of reasons is meant to serve the wider *Principle of Justice* that the justice must not only be done it must also appear to be done as well.
- (c) Recording of reasons also operates as a valid restraint on any possible arbitrary exercise of judicial and quasi Judicial or, even administrative power.
- (d) Reasons reassures that discretion has been exercised by the decision maker on relevant grounds and by disregarding extraneous considerations.
- (e) Reasons have virtually become an dispensable a component of a decision making process as observing *Principle of Natural Justice* by judicial, quasi judicial and even by administrative bodies.
- (f) Reason facilitates the process of *Judicial Review* by superior courts.
- (g) The ongoing judicial trend in all countries committed to *Rule of Law* and *Constitutional Governance* is in favour of reasoned decisions based on relevant facts.
- (h) Judicial or even quasi judicial opinions these days can be as different as the judges and authorities who deliver them. But all these decisions serve one common purpose which is to demonstrate by reason that the relevant factors have been objectively considered. This is important for sustaining the litigants' faith in the justice delivery system.

- (i) Insistence on reason is a requirement for both *Judicial Accountability and Transparency*.
- (j) If a Judge or a Quasi Judicial Authority is not candid enough about his/her decision making process then it is impossible to know whether the person deciding is faithful to the *Doctrine of Precedent* or to *Principle of Incrementalism*.
- (k) Reasons in supports of decisions must be cogent, clear and succinct. A pretence of reason or 'Rubber-stamp Reasons' is not to be equated with a valid decision making process.
- (l) It can not be doubted that transparency is the *sine qua non* of restraint on abuse of judicial powers. Transparency in decision making not only makes the judges and decision makers less prone to errors but also makes them subject to broader scrutiny.
- (m) The requirement to record reasons emanates from the broad *Doctrine of Fairness* in decision making,. The said requirement is now virtually a Component of Human Rights and was considered part of Strasbourg Jurisprudence wherein the Court referred to requirement of "adequate and intelligent reasons must be given for Judicial decisions."
- (n) In all common law jurisdictions judgements play a vital role in setting up precedents for the future. Therefore, for development of law, requirement of giving reasons for the decision is of the essence and is vitally a part of "*Due Process*".

Note :- Above write up is my personal opinion and it is not official.



Psychology of Earthly Living

By Pramod Kumar, Joint Commissioner of State Tax

Jim and Jane were once enjoying the full-moonlit night in the city of New York sitting beneath the ‘Statue of liberty’- an apostle of individual freedom, fraternity and democracy. They heard a person, named Jill saying to his fiancée, Janie that Chares Darwin was the first person to have recognised the doctrine of ‘living the normal life on the planet earth is not a simple task’, while propounding his theory of human development and growth from that of micro-organism through the process of evolution called ‘ the survival of the fittest’.



“Is it really an arduous task to simply live on the planet earth?” Jim reiterates Jill’s moot question.

“Actually different persons have very often equally opposite view of living on this planet earth; some of them believe this planet earth to be a tough place to live in, while others are equally insistent that the opposite is true,” Jane observes abruptly.

“Do you mean that it is tough for some while simple for others?” Jim remarks quickly and asks “Dear, please explain the dichotomy of ‘Tough- Simple Hypothesis’.”

“Jim, you need to understand that this ‘Tough- Simple Hypothesis’ is nothing but differing perceptions of different set of humans looking at earthly living itself.”

“Do you really mean that one set of humanity views earthly living as toughest job, whereas another set takes it to be the simplest job,” Jim replies.

“Exactly, this is the situation, you seem to have got to the point,” Jane affirms his stand.

“Jane, what seems to me that it’s nothing but looking at the same thing with two different spectacles.”

“You are right, dear! Earthly living is viewed differently by two sets of existing populace of the globe,” Jane concurs.

“One set of humanity takes life as a challenge providing diverse opportunities to enjoy and prove one’s worth, whereas another set conceives it to be full of troubles and hurdles making it the toughest and unalterable thing to face,” Jim explains.

“It’s due to diametrically opposed perception of life, where one set of humanity wins, another set loses the game of life,” Jane declares.

Jim continues “How could you say with a degree of precision that humans are ideologically at loggerheads in terms of perception of existence and survival?”

“Dear bro, all that we have to do is to appreciate this life as a wonderful gift of the nature, and our lives will become ever more wonderful.” Jane remarks.

“Do you mean the entire humanity is divided on the score of human’s view as to its existence on the planet earth?” Jim interrupts.

“Definitely Jim, we can say that entire humanity stands placed in two equally opposed on the perception of living,” Jane admits.

Jim, let me know! “How could you explain this polarized perception of living of humanity on the planet earth?”

“Where one set of humanity boasts of the virtues of earthly living, other set seem to be casting aspersion on its despicable living,” Jane continues.

“How do you see such diametrically opposed views on human living on the planet earth”? Jim instinctively asks.

“To me, it shows nothing but existence of two sets of people on the planet earth with only difference of mindset making such differing views governing humans living on the earth.” Quips Jane

“Please clarify this a little bit,” Jim spontaneously utters looking straightforwardly in to his eyes.

“Bro, human’s nature is basically either of Adam, or Abraham type, where Adam is more akin to animalistic nature of avoiding pain from environment as opposed to the Abraham’s humanistic growth seeking nature, and what is more is that this planet is inhabited simultaneously by these two sets of people.” Jane answers.

“If this is the state of affairs of human nature, then it would not be hard to say that Man’s nature as has unfolded is more reflective of animalistic nature than

humanistic one, as it is very small numbers of people, who see life as blissful opportunities to enjoy the fruits of nature.” Jim remarks.

“It is the crux of all the problems the humanity faces at this planet.” Jane affirms.

“Yes, it is? Since the Adam humans outnumber the Abraham humans at this planet, majority of the populace fail to see the other side of the coin and always want to be the winners irrespective of the situations and circumstances. No one wants to loose the game of life and it is what makes the entry of evils in the human livings at this earthly planet.” Jim remarks intriguingly.

“Of course dear, the history of human civilization has been the history of ‘imposition of one over’ another, the root cause of all human sufferings. it is like the emperor of all the evils, more akin to cancer being emperor of all the maladies afflicting human body. It is the reflection of this planet being ruled by whims than by reason. It is the reason why the people inhabiting this planet care less about application of mind to see the things around.” Jane explicates.

“Why has this been the situation all over the course of human history that majority of the populace ever show concerns for the application of mind while facing the issues in normal living at this planet.” Jim concurs.

“The basic problem of humans at this planet is the “non-application of mind, and all his sufferings are its direct fall out.” Jane affirms.

“Jane, Let me know how you could explain that humans fail to apply mind to sort out their problems.”

“You know that everybody is born with immense power to become anything whatever he wants to become; but why it is that very few of us are able to tap our potentialities and that too to a very little extent.” Jane continues intriguingly.

“How do you see the failure of humans to tap inborn his potentialities? Asks Jim, and continues, “Please let me know why it is?”

“Dear Jim, problem lies in our perception of immediate result-seeking behaviour. Majority of us are self-propelled and immediate result seekers without patience and perseverance for delayed gratifications. This behaviour is reflective of preponderance of Adam humans over Abraham humans, as it is marked by emotions and whims not rationality governing human behaviour paving the way for human mind to take back seat, the root cause of non-application of mind to see the things at hand.”

“Jane, please clarify this a little bit.”

“Dear Jim, nature of human is that he is always propelled by himself; this inward-looking attitude takes him to a world where he thinks himself to be always right, which inhibits him from looking at the problems from others viewpoint; it is aggravated by his immediate result-seeking attitude, which doesn't allow him to ponder and take broader perspective to see the things.”

“Jane, how can you say with surety that human is always self-propelled and inward-looking? Because what I have felt that humans are always others-propelled and outward-looking.”

“There is no contradiction between these two opposing perceptions of humans, as one is ‘self-propelled and inward-looking’ as well as ‘others-propelled and outward looking’ at the same time.” Jane remarks wittingly.

“Jane, You seem to be bent upon justifying your stands; Isn't it?”

“It's not dear, let me explain it; There are two sides of the coin. It is exactly the position in this case, because human is self-propelled and inward looking when something is in favour of his interest, but others propelled and outward looking when the same is against him.” Jane quips.

“Please explain it more precisely and clearly to make it easily comprehensible.” Jim remarks.

“Jim, we all know that human is basically self-conscious organism, governed always by his self so as to fulfill and defend his interests; it is at the crux of all his behavior determining the course of action.”

“Jane, please clarify the distinction between these two hypotheses of self-propelled and others-propelled as two sides of the same coin.”

“Jim, one is self-propelled and looks inwardly, when something is for his benefit, but is other-propelled and outward looking when the same is harmful to him. However, when you see at deeper level, both cut across each other for being two sides of the same coin of ‘self’ where former is expressed in terms of benefit but latter in terms of security.”

“Jane, you seem to propounding the doctrines that when things are subject to human's beneficial interest, he would like to be driven by his self and look inwardly for his betterment: however when it is against his interest, his actions and direction would be determined by others: isn't it?”

“Jim, now you seem to have got to the point. These two factors of benefits and security are at the helm of the affairs of human behaviour all through the human history.”

“What boils down from the whole analysis is that human is a self-centric organism guided and directed by the considerations of benefit and security in fulfilling his needs, as he can't be separated from what he is; Isn't it?” Jim enquires

“Right Jim, human being is sum total of organs in physical terms, but is sum total of emotions in psychological terms; However, ours' behaviour is governed by the needs of benefit and security and we don't move above these needs in normal life and that is why emotion takes precedence over mind.”

Jim asks further, “How can we say that man doesn't apply his mind in most of the cases; why it is?”

“Jim, the basic nature of human is that he wants to live in the 'zone of comfort' and has a tendency to stick to it like a bug, which is nothing but animalistic Adam nature of man; it prevents him from applying his mind till he remains in the zone of comfort and does not come out therefrom to go for humanistic nature of Abraham man.”

“Jane, please explain it in detail, as it seems to be the biggest problem of human civilizations in course of human history.”

Jane continues, “Dear, of course, this has been the dichotomy of man that he is distinguished from that of animal on the basis of mind power, but it remains least used thing.”

“Jane, do you mean that we don't apply ours' mind to sort out issues confronted by us?”

Jane tells him, “Dear don't confuse 'application of mind' with that of normal 'use of emotion' reminiscent of animalistic behaviour.”

Jim asks further, “Please distinguish between the two giving a proper account of the things necessary for actual comprehension.”

“Application of mind is basically the use of mind weighing the pros and con to be done coming to a logically rational conclusion or doing some positive action, whereas use of emotion merely delineates the part played by it in reaching

a decision or taking an action which are more often governed by whims and desires.” Jane answers.

“Friend, what we see in reality that people apply too much mind to downgrade others and boast of oneself.” Jim further asks.

“Dear Jim, it’s not the ‘application of mind’, but it is the ‘negative use of mind’ with known result to justify ones’ stand for negative purpose, as application of mind is positive use of mine for rational justifications. The application of mind has been occasional episodes in the history of human decisions and actions being governed by ‘negative use of mind posing toughest problem for the mankind.’”

“Jane, please let me know, how the negative use of mind is the toughest problem of mankind?”

Jane continues, “The history of mankind on the planet earth has been the history of negative use of mind with its positive use being the occasional episodes resulting in generations of much hatred, tensions, and struggles as well as rampant and unrestricted utilization of limited resources, reflecting the animalistic nature of human. However, the silent killer of the civilization has been its manifestation in most deadly form of human behaviour, the ‘rationalization of one’s action’.”

Jim asks then, “I think it more appropriate to characterize the human civilizations by the negative use of mind than by non-application of mind itself; Isn’t it?”

Jane continues, “Dear, both signify different aspects of mind, hence one can’t be given primacy over other; human civilizations need to be characterized by both.”

“Jane, you mean that there has been more negative use of mind than the positive use thereof in human history and in most cases mind has never been applied.”

“Jim, exactly it is what I want to convey; however, you need to understand the most important problem confronting the human civilizations responsible for his miseries and sufferings in use of mind to rationalize his action howsoever irrational it may be.”

“How could you say that application of mind is to rationalize one’s action is the hallmark of civilizations responsible for all human sufferings?” Jim asks.

“Jane, we have become used to such negative use of mind of justifying ours’ actions to be the right one all the times; most of ours’ energy goes in vein in such acts of rationalization; we never introspect as to the appropriateness of ours’ actions, the root of all the problems of human life.”

“Why is it that we engage ourselves in rationalizing ours’ actions than to accept our follies?” Jim asks.

“The crux of the matter at all the human sufferings is his self itself; it doesn’t allow him to accept his follies.” Jane replies.

“Why does the ‘self’ have the problem to allow people to admit his follies?” Jim enquires.

“Jim, self is the very basis of human’s existence, which reminds him of his separate and unique identity different from those of others; man without self becomes a mechanical object; it is the self, which drives him to action but there is a devil in it.”

“Where does self come from and how does it impact one’s personality in the social settings?” Jim asks further.

“The very awareness of oneself as a unique entity having needs of his own is basically self, known more popularly by the name of ‘Ego’; ego is essential for normal mental development of the mankind, but too much stress on it make one mentally sick and abnormal resulting in different behavioural problems detrimental to the social milieu.” Jane says and continues, “But human history has been the history of strife and struggle so much so that the love and affections seem to be occasional episodes, at the root of the problem is human’s ego, exalted version of one’s self. This is what makes it interesting and centre of focus for the entire human civilization. Is it the reality of organismic behaviour? Are we all prone to violence and conflict for our perpetual existence in the system? What is the apple of discord?” Jim enquires anxiously.

“Jim, you are right! This has been the organismic behaviour all through the history of mankind and the real culprit is our mounting desire for all the strife and violence generated in the system, but at the same time, the continuing existence of society goes to show still the existence of such people giving primacy to the social desire over the personal desire all through the history. The state of social order that exists today the globe over even as a result of love and affection being occasional episodes amidst struggle and violence marked by primacy of mounting

individual desire over that of social desire, but imagine what would have the fabric of social order had that been marked by primacy of social desire over personal desire. What is of utmost importance is that we as human beings are more vulnerable to the vagaries of emotions. However, the real happiness lies not only in mechanical application of mind but rational use of emotions to make the planet earth a truly loving resort to live in.”



यह ऑल इंडिया रेडियो है

अकड़न है कि जान लेने पर तुली है। एक-एक अंग दुख रहा है। लगता है बुखार चढ़कर मानेगा। अभी दो महीने पहले तो पूरे दस दिन बुखार से उठे हैं। क्या-क्या नहीं झेलना पड़ा। बुखार से ज्यादा परिवार वालों की तमाम उलझनें। दवाइयाँ भी तो कितनी मंहगी हो गई हैं। और बिना कई तरह के टेस्ट के दवाई भी तो नहीं लिख सकते डॉक्टर। अब फिर यह क्या आहट सुनाई दे रही है।



अभी पिछले ही साल रिटायर हुए हैं जोशी जी। बस घर से निकलना और वापस घर। बीच में स्कूल। जीवन में और कुछ नहीं जाना। पहले कभी कभार हाट से सब्जी वगैरह ले आते लेकिन उनकी पत्नी को लगता कि दुकान वाला अपनी खराब सब्जियाँ इन्हीं के मार्फत खपाता है। सो वह भी जाता रहा। पत्नी ने कहा कि न हो तो दो चार ट्यूशन ही पढ़ायें ताकि घर खर्च में थोड़ी मदद हो जाए। बहुत कहे जाने पर एक बार कोशिश भी की लेकिन छात्रों से पैसे नहीं मांग पाए। जल्दी ही वह सब भी बंद हो गया। बस किताबें और रेडियो। यही उनकी दुनिया रही। रेडियो के सहारे वे दुनिया भर की सैर कर आते। धड़कती हुई दुनिया थी वह।

सभी पिता की तरह उन्होंने भी अपने परिवार पर पर्याप्त ध्यान देना चाहा। लेकिन तब तक टेलीविजन कस्बों से लेकर गाँवों तक पसर चुका था। शाम होते ही वह अपनी माया बिखेरने लगता। देवलोक की सुन्दरियाँ अपने सौंदर्य का राज बताने बार-बार आतीं। आश्चर्यजनक रूप से वह बाजार में उपलब्ध भी होने लगे। बॉडी बिल्डरों से हीरोइनें चिपक-चिपक जाती थीं सो दो-चार जिम भी खुल गए। रामायण और महाभारत सीरियल भी दिखाए जाने लगे। धार्मिकता ने आक्रामक रूप लेना भी शुरू कर दिया। उनकी पत्नी भी आस पड़ोस के घर टीवी देखने जातीं। आखिरकार घर में भी रंगीन टीवी आ ही गई। अब सब कुछ वही तय करने लगा।

जोशी जी ने महसूस किया कि स्कूल का माहौल भी बदलने लगा है। लड़के अब गुराने लगे थे। लड़कियाँ जल्दी जवान दिखना चाहने लगी थी। एक बार उन्हें लगा कि उनके स्कूल का एक लड़का एक लड़की को छेड़ रहा है। उन्होंने लड़के को एक छड़ी क्या लगाई जैसे भूचाल आ गया। लड़के और उसके माता-पिता के सम्मान पर चोट आ गई थी। बाद में लड़की भी मुकर गई। जोशी जी को पूरे स्कूल के सामने माफी मांगनी पड़ी। कई रात वे सो नहीं पाए। क्लास में जाते तो लगता हर कोई उनपर हंस रहा हो। जब तक वे बच्चे स्कूल में रहे उनकी गरदन झुकी रही। वैसे सहज वे हो ही नहीं पाए कभी। कई बार नौकरी छोड़ना भी सोचा लेकिन

भूखे रहने से बेइज्जत रहना ही बेहतर। अपने में और सिमटते गए। उनकी पत्नी और बेटे ने भी जाहिर तौर पर उन्हें ही दोष दिया था। हमेशा की तरह।

इन सबके बीच वे रेडियों के और भी करीब हो गए। ये ऑल इंडिया रेडियों हैं... सुनते ही उन्हें अपने जीवित होने का अहसास होता। टीवी की तरह यह आंखे खोलकर देखने की चीज नहीं थी। यह तो आंखें बंदकर सुनने की चीज थी। आंखे बंद कर वे अपने और करीब हो जाते। उसकी धुनों के साथ वे कहाँ कहाँ नहीं हो आते। उनका रेडियो भी कभी कभार कोई सामान जरूर बेचता लेकिन उससे उन्हें बाधा नहीं होती। जिंदगी अपने अपने हिस्से में यथावत गुजर रही थी।

और तभी एक दुर्घटना घट गई। हमेशा की तरह जोशी जी ने शाम का प्रादेशिक समाचार सुनने के लिए अपने रेडियो को खोला तो उसमें से कोई आवाज नहीं निकली। ये क्या हो गया। अभी तो शुरूआत होनी थी। प्रादेशिक के ठीक बाद बीबीसी और फिर राष्ट्रीय समाचार। फिर हवामहल और न जाने क्या क्या। बहुत कोशिश की। घुंडी को कई दफे ऑन ऑफ किया। धीरे धीरे से शुरू करके जोर जोर से ठोका लेकिन वह टस से मस न हुआ। लगा शायद बैट्री खतम हो गई हो। लेकिन याद आया कि अभी पिछले सप्ताह ही तो बेटे से नया मंगवाया है। फिर भी क्या पता डुप्लीकेट दे दिया गया हो या बेटे ने ही जानबूझकर डुप्लीकेट खरीदा हो। सो खुद ही दुकान की ओर चल पड़े। लोगों ने आज तक उन्हें दुकान पर नहीं देखा था। दुकान वाले को आश्चर्य भी हुआ। बार बार ऑरिजनल कह कहकर बैटरी मांगी। लेकिन रेडियों था कि टस्स से मस्स नहीं हुआ। उन्होंने बार बार पत्नी और बेटे से पूछा कि शायद गलती से उनसे गिर गया हो। अब उन्हें लग रहा है कि रेडियों एकदम उस जगह पर नहीं रखा था जहाँ वे छोड़ गए थे। अभी उसी दिन तो उनकी पत्नी ने बुरी तरह चिढ़कर कहा था कि जिस दिन ये ढोलबज्जा खराब होगा उस दिन जोड़ा लड्डु चढ़ाएगी बजरंग बली को। यह उन्हें भलीभांति पता था कि बजरंगबली को ऐसे छोटेमोटे कामों की फुरसत नहीं। तो क्या?

दूसरे दिन जब वे रेडियों बनवाने बाजार निकले तब उन्हें पता चला कि दुनिया कहाँ पहुंच गई है। सालों पहले जिस मौलवी साहब की दुकान पर उन्होंने एक बार रेडियो बनवाया था वहाँ चाउमीन की दुकान गुलजार थी। आसपास पता करने पर पता चला कि बेटे ने उस दुकान को उर्दू बाजार में शिफ्ट कर लिया है। जब वे उर्दू बाजार पहुंचे तो कहीं भी उन्हें रेडियो मरम्मती की दुकान दिखाई न दी। एक परिचित से पूछा भी तो ठठाकर हंस पड़े। कहा कि अब वो तो रहे नहीं उनके बेटे ने टेलीविजन की दुकान रख ली है। उनका हंसना जोशी जी को एकदम अच्छा नहीं लगा। न तो मौलवी साहब का गुजरना हंसने लायक बात थी और न ही रेडियों की मरम्मती बंद होना। खैर....।

अब तो जैसे यह कार्यक्रम हो गया कि जो कोई परिचित मिलता उससे बातचीत करते। लोगों को आश्चर्य भी होता चूँकि यह काम वे गाहेबगाहे ही किया करते थे। अंत में उनसे किसी रेडियो बनाने वाले की जानकारी पूछते। छोटी-सी जगह में इसे मजाक का विषय बनते कितनी देर लगती। उड़ते उड़ते बात उनके घर भी पहुंची। फिर एक दिन वह रेडियो ऐसे गायब हुआ कि खोजे ने मिला। सत्याग्रह का दौर चला लेकिन जो चला गया सो चला गया।

ऐसा नहीं कि जोशी जी ने फिर टीवी देखने की कोशिश न की हो। कोई जाती दुश्मनी तो थी नहीं। लेकिन क्या था कि न्यूज देखते देखते अचानक से कोई क्रीम या साबुन का प्रचार आ जाता और वे बेटे के सामने असहज हो जाते। हद तो तब हुआ जब विदेशी मैदान पर चल रहे भारत के क्रिकेट मैच में कैमरामैन ने कैमरे को एक कपल पर केंद्रित कर दिया। दोनों कमर से उपर निर्वस्त्र थे। वह दिन उनके टीवी का आखिरी दिन था।

समय बीतता गया। बेटा स्थानीय कॉलेज से निकलकर पास के शहर में पढ़ने चला गया। पत्नी के लिये टीवी से अच्छा कोई साथी नहीं था। जोशी जी किताबों की दुनिया में डूबते उतराते रहे। इसमें हलचल उस दिन होती जब बेटे को पैसे भेजने होते और स्कूल से तनख्वाह नहीं मिली होती।

ऐसे ही एक शाम एकाएक उन्हें सूचना मिली कि बेटे की नौकरी लगी है। किसी विभाग में कंट्रैक्ट पर। लोगों ने पहली बार उन्हें मंदिर जाते देखा। वैसे इस घटना को लेकर मुहल्ले में दो दल बन गए थे। एक का कहना था कि पत्नी के सामने हार कर गए हैं तो दूसरों का मानना था कि अरे अब उन्हें धरम करम याद आया है। बहरहाल लड्डू चढ़ाए भी गए और बांटे भी गए।

इसके बाद दो घटनाएं हुईं। बेटा होशियार था साथ की महिला से दोस्ती हुई और एक नया कंट्रैक्ट हुआ। जोशी जी को जीवन में कभी किसी से शिकायत हुई ही नहीं कभी। बेटा शादी के बाद शहर गया और जोशी जी रिटायर होकर घर। छाता, गीता, एक ब्रीफकेस और खेल खतम। अब कोई सरकारी स्कूल तो था नहीं कि पेंशन आदि के लिए भाग दौड़ होती। इधर बेटे का बार बार फोन आ रहा है कि उसके पास आकर रहें। पत्नी भी उनकी सेवा कर करके थक गई है। जोशी जी को इन दिनों पत्नी पर सही में प्यार आ रहा है। बेचारी ने कितने कष्ट सहे हैं।

पूरे कस्बे में खबर है कि जोशी जी जबलपुर जा रहे हैं। पहली बार ऐसा हो रहा है कि मुहल्ले वाले उनके घर पर आ रहे हैं। आपस में बातें होती हैं। जो भी हो जीवन भर न किसी तीन में रहे न तेरह में। कोई-कोई तो अपने बेटे का भी वही कोई जुगाड़ लगाने कहते हैं। और इन सबके बीच जोशी जी सोचते हैं कि पिछली बार वे ट्रेन पर कब चढ़े थे। पत्नी से पूछने पर बताती हैं कि गौना कराके लौटते समय कहीं गुजरते देखा था। कितना भयंकर था वह। बैलगाड़ी से बैल इधर उधर भागने लगे थे और वो गिरते गिरते बची थीं।

जोशी जी जबलपुर आ गए हैं। बहू के पैर भारी हैं। लेकिन वे देख रहे हैं कि बेटा थोड़ा असहज रह रहा है। कुछ बात करना चाहता है लेकिन झिझकता है। ऐसे ही एक शाम वो टहलते टहलते थोड़ा दूर निकल आए हैं। दुकानों की श्रृंखला शुरू हो गई है। तभी उनकी नजर एक दुकान में पीछे की तरफ शोकेस पर ध्यान जाता है। उनकी धुकधुकी बढ़ जाती है। अरे ये तो रेडियो है। फिलिप्स भी लिखा है डब्बे पर। दिल उछलने लगा है। पूछने पर पता चला कि पूरे बारह सौ रूपय का है। तीन बैंड भी तो है। और हां बैट्री की कीमत अलग से। उन्होंने सुना है कि बड़ी दुकानों में मोलभाव नहीं होता। वे समझ जाते हैं कि गांव से आया है। सो केवल कहते हैं कि कल तक के लिए किसी को न बेचें। दुकानदार ऐसे ही थोड़े न मालिक बना है। कहता है कि अब कोई गारंटी तो है नहीं। अगर कोई ग्राहक आ गया तो वो मना कैसे कर सकता है। हां अगर कुछ पेशगी दे दी जाय तो वो सोच सकता है। जोशी जी को याद आता है कि उनके बेटे ने हमेशा पास में सौ दो सौ रूपये रखने की सलाह दी है ताकि कहीं भूल भटक जाएं तो काम आए। बस काम हो जाता है।

लौटते समय उन्हें अहसास हो रहा है कि उड़ उड़ रहे हैं। बेटे की नौकरी हुई थी तो सोचा था कि अपने मन की बात बताएंगे। कह नहीं पाए। कहीं न कहीं मन में यह रहा कि शायद वही पूछे कभी। खैर..... बस आज रात भर की तो बात है। घर आते ही सुनाने को व्याकुल हैं। सास बहू दोनों मिलकर टीवी देख रही हैं। वे खास अंदाज में खांस रहे हैं लेकिन लगता है है सीरियल कोई महत्वपूर्ण दौर में है। पत्नी सुन नहीं पा रही है। वे बाहर ही बैठ जाते हैं। उसी समय उनका बेटा आता है जिसे अपने पास बैठने को कहते हैं। फिर धीरे धीरे रेडियो के दाम, पेशगी वगैरह के बारे में बताते हैं। यह भी बताते हैं कि पेशगी न देने से उसके निकल जाने का डर था।

बेटा यह सब सुनकर बिफर पड़ता है— “फिर वही रेडियो। क्या जरूरत है इसकी। कौन सुनता है अब रेडियो। मोबाइल में भी है रेडियो। उससे क्यों नहीं सुनते। सनकी हैं आप। यहाँ एक-एक पैसे की आफत है। खाएं क्या और बचाएं क्या। सभी साथी अपने अपने फ्लैट में रह रहे हैं। मिलते हैं तो लगता है कि चिढ़ा रहे हों। सोचा था कि आपसे बात करूंगा। कुछ मदद हो जाएगी। और आप हैं कि रेडियो पर जुते हुए हैं।”

जोशी जी कहना चाहते हैं कि आखिर जरूरत क्या है फ्लैट की। अपने जीवन का गुणा भाग कोई दूसरा क्यों करें। छोटी छोटी हजार खुशियों को छोड़कर फ्लैट का मालिकाना मिल भी गया तो क्या है। लेकिन बेटे के कमरे का दरवाजा धड़ाक से बंद हो जाता है। वे कुर्सी से उठ नहीं पा रहे हैं। पत्नी और बहू दरवाजे के पीछे खड़ी है।

रात गहरा रही है। शरीर दर्ज से चिनक रहा है। लगता है बुखार चढ़कर मानेगा। सो रहे हैं कि जाग रहे हैं पता नहीं। अरे ये रग्धू कहाँ से आ गया। बचपन में उसे हिसाब बताया

करते थे। बदले में उसी के दरवाजे पर की एक कोठरी में रहने की जगह मिल रखी थी। खाना दूसरे बच्चे के घर से मिल जाता। बच्चे बदलते रहते और खाने का घर भी। पत्नी के आने के बाद ही यह क्रम टूटा। रग्धू उनके पैर छू रहा है। वे उसके सिर पर हाथ रखे हुए हैं। “मास्टर जी, अब तो न माई रही न बापू। आपका पढ़ाया कभी दिमाग नहीं लगा। ये जिन्दगी कैसे चले। कानू टोली का असोकवा बिलासपुर रहता है। उसी के साथ जा रहा हूँ। माई-बापू की छाया बसी हो जैसे घर में। बेचने में कलेजा कटता है। माई कहती थी डीह मत छोड़ना। कैसे बेच दूँ। ये खपरैल अब आपके हवाले। जिन्दा रहा तो आता रहूँगा।”

एक दो बार के बाद रग्धू का आना बंद हो गया था। अशोक से जानकारी मिलती कि वो अच्छे पैसे कमाकर वहीं बस गया है। उसने सभी को कहा है कि घर चाहे जैसा कच्चा टूटा है मास्टर साहब का है। आज इतने सालों बाद। अरे उसका चेहरा उनके पिता का चेहरा कैसे हो गया एकदम से.....।

खिड़की से बाहर रेलवे स्टेशन की रौशनी दिखाई दे रही है। एक ट्रेन सीटी मारकर खुल गई है।

अजिताभ मिश्रा,

पटना





Best Wishes
from
NPGCL

NPGCL, a wholly owned subsidiary of NTPC Ltd is setting up 3x660 MW Project at Nabinagar, Aurangabad, Distt Bihar, PLAYING IMPORTANT ROLE IN THE PROGRESS OF THE STATE OF BIHAR BY PROVIDING 85% OF ITS SHARE IN THE POWER GENERATED.



Nabinagar Power Generating Company Ltd.

(Wholly owned subsidiary of NTPC Ltd.)

Aditinagar PO : Ankorha, Distt.-Aurangabad, Bihar- 824303

GST - Governance, Simplification and Technology

Kartik Kumar Singh,

Joint Commissioner of State Tax, Patliputra Circle

At a special midnight session of the Parliament on 1st July 2017, India witnessed its biggest indirect tax reform - Goods and Services Tax (GST). By subsuming more than a dozen indirect taxes, it paved the way for a simplified, transparent, and robust indirect tax system. The all India tax base has increased to 1.36 crore as on 31st March 2022 and the gross GST collection in the month of April, 2022 was Rs 1,67,540 crore which is all time high. While the implementation of GST in India has been hailed by many and its salient features enumerated at length, I would like to highlight the three pillars of GST -Governance, Simplification and Technology.



A robust tax administration is not only sine qua non for state revenue, but also has a key role in economic prosperity. The implementation of GST has ushered in the “Governance” framework in the tax administration. The concept of governance has various aspects and therefore various meanings. In the context of public administration, governance has been defined by the world Bank roughly as ‘the exercise of political authority and the use of institutional resources to manage society’s problems and affairs’. It is characterized by more streamlined, flexible, responsive, participatory, and cost-efficient administration. The Governance framework is incorporated in the GST legislation itself and has led to a more accountable, transparent and citizen centric tax administration by clearly defining the roles of tax authorities, putting in place a strong check and balance and grievance redressal system. The introduction of state level VAT in the year 2005 in most of the states brought in the culture of self-assessment by the taxpayers against the mandatory assessment by tax authorities. However, in year 2017, after the implementation of the GST, the governance model got deep rooted in the administration. The GST eco-system consists of all stakeholders starting from taxpayer to tax professional to tax officials to GST portal to Banks to accounting authorities. This truly embarked on the journey of “government to governance” and put the state in role of “steering” than “rowing” in indirect taxation system. Before the 1st of July, 2017, Indian indirect tax regime was highly fragmented. Centre and States were separately taxing Goods and services. There were many taxes like excise duty, service tax, VAT, CST, purchase tax, entertainment tax, octroi. In addition, there was multiplicity of rates and different Law and procedures in each state and at the national level to comply with. This caused heavy compliance burden. Though,

with the introduction of VAT in year 2005, set-off of input tax on previous purchases was allowed, the cascading effect was not done away with completely. For example, VAT was levied on a value that included excise duty. Also, Input tax credit chain broke as goods moved from one state to another, resulting in hidden cost for the business. Further, pre-GST, there were check posts at every inter-state border, creating bottlenecks in inter-state transport of goods. As a result, logistics sector remained inefficient, and it adversely impacted the businesses. Every state was effectively a distinct market for the industry as well as consumer. The GST has removed the dysfunctionalities of erstwhile taxation system and makes the governance paradigm more visible in the tax administration. The focus here is to have maximum voluntary compliance and check tax evasion through targeted enforcement and audit based on data analysis and artificial intelligence.

The other aspect of GST is simplification of administrative procedures. When the GST legislation was finalised, the country was striving hard to improve its ranking in world Bank's Ease of Doing Business Report. To ensure no state is left behind, Business Reform Action plans for states were also implemented, monitored, and evaluated under the aegis of DIPP, Govt. of India. Thus, due care was taken for ease of doing business while framing the GST legislation. The process of registration, payment, and refund has been standardised and streamlined for speedy decision making. For every process in the registration chain such as application for registration, acknowledgment, query, rejection, registration certificate, show cause notice for cancellation, reply, cancellation, amendment, field visit report etc., there are standard formats. This makes the process uniform all over the country. Strict timelines have been stipulated for completion of different stages of registration process. Similarly, GST payment process provides for electronically generated challan from Common Portal in all modes of payment and no challan is prepared manually. The electronic cash ledger reflects all deposits made in cash, and TDS/TCS made on account of the taxpayer. The information is reflected on real time basis. The entire process of payment can be completed in just a few minutes. Also, from September 2019, the GST Refund module has been made fully automated. It enables seamless online processing of refund applications including the disbursement of refund and recredit of rejected amount. After processing is completed by the tax officer, the sanctioned amount gets credited to the bank account of the Taxpayer through the accredited bank of Government through Public Financial Management System (PFMS). As regards return filing Form GSTR-3B is a simplified summary return and the purpose of the return is for taxpayers to declare their summary GST liabilities for a particular tax period and discharge these liabilities. Now monthly Form GSTR-3B and GSTR-1 have been made simplified further since its introduction in July 2017 and there is provision to file NIL return through the SMS also if there is no transactions in a particular tax period. System generated Form GSTR-3B are also generated based on Form GSTR-1 or Form GSTR-2B to provide assistance in filing return, minimize error and mismatch as

well as increase overall compliance. Similarly, a fully online Unified e-Way Bill for Inter and Intra-State movement of goods for the whole country has been implemented with effect from 1st April 2018. Given the volume of business transactions undertaken every day, the process simplification and standardisation remain the core focus in the GST regime.

Now coming to the third aspect, from the very beginning, technology was envisaged to play a pivotal role in bringing about this biggest reform in the Indirect Tax System in India. The Government of India approved the setting up of the Goods and Services Tax Network (GSTN) as a non-government, not-for-profit, private limited company on 12th April 2012 for providing shared IT infrastructure and services for implementation of the Goods & Services Tax (GST) regime in the country. It was incorporated on March 28, 2013, under Section 25 of the Companies Act, 1956 (Section 8 under the Companies Act, 2013). GSTN is entrusted with the task of maintaining a common portal for more than 130 billion taxpayers to provide them front-end services for registration, return filing Payment and refund processing. Other than this, GSTN mandate includes provision of back-end services to Model-2 states and electronic integration with CBIC and Model-I states who have developed their own back-end system. Putting in place such a massive IT system was a challenging task. Initially, there were some teething problems. However, now the robustness of this IT system can be gauged from statistics regarding the transactions taking place through the portal. More than 65 lakhs monthly GSTR-3B are filed online on common portal every month and during the FY 2021-22 total 948 lakhs GSTR-3B and 941 lakhs GSTR-1 were filed online. Total payments collected thorough common portal in FY 2021-22 stands to Rs. 10,97,545 Crore. Numbers speaks for themselves. Though still there are some works in progress particularly related to back end services to model-2 states , in the next few months it is expected that all the functionalities for tax officials will be available which will further help in reaping the benefits of this biggest tax reform.

As we complete five years of GST in our country, we can boast of its successful implementation to reduce cascading effects, streamlined and standardized process for taxpayers and uniform legislation across the nation. However, tax system operates in an environment and based on legislative framework, and the political, social and economic environment, it needs to realign itself. There are challenges ahead in terms of guaranteed revenue collection, checking tax evasion and maintaining a robust IT system, but with the collaborative effort of all stakeholders we are capable of overcoming any hurdles as has been aptly quoted in the Panchatantra:-

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥



BEST WISHES



INDAN OIL CORPORATION LTD.

PATNA



23 संकल्प



भूख और गरीबी की काली कमली उतारेंगे,
हम भी यारो पढ़ लिखकर अपनी तकदीर सवारेंगे
ना जुआ ना ही शराब अब हमको रोकने पाएगा
ज्ञान की ज्योति से रौशन जीवन अपना हो जाएगा
है निश्चय अब आसमान को धरती पर उतारेंगे
हम भी यारों पढ़ लिखकर.....

भाग्य का रोना रोने वाला घुट-घुट कर मर जाता है
यम के दरवाजे पर भी फिर चैन कहाँ वो पाता है
संघर्ष की खुशबू से अपनी बगिया हम महकायेंगे,
हम भी यारों पढ़ लिखकर.....

कोई दीन नहीं रहने पाए, कोई हीन नहीं रहने पाए
ईश्वर तुमने दिया है क्या, ये कोई नहीं कहने पाए
ऊँच-नीच की चिताओं पर मानवता की जोत जलायेंगे
हम भी यारों पढ़ लिखकर.....

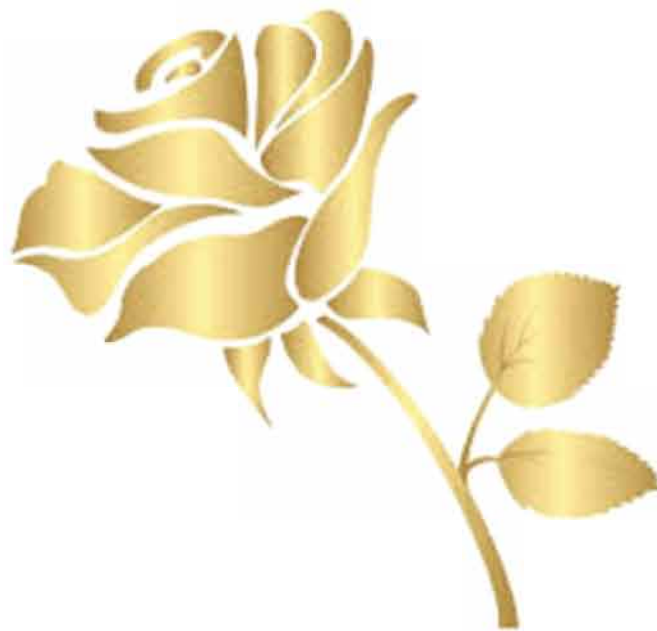
सफलता के अग्नि पथ में भाई-बहन सब साथ चलें
ना प्रयास कोई बाकी रह जाए, हाथों में लेकर हाथ चलें
माता-पिता के सपनों को पूरा कर हम दिखलायेंगे
हम भी यारों पढ़ लिखकर.....

पंजाब नही सूरत नहीं अब घर में ज्ञान का दीप जलायेंगे
अपने घर में जो मान मिलेगा और कहाँ हम पायेंगे।
कलम के जोर पर हम दुनिया में छा जायेंगे।
हम भी यारों पढ़ लिखकर.....

मणिन्द्र कुमार
राज्य-कर संयुक्त आयुक्त



BEST WISHES



KAMPER CONCAST LTD.

GAYA



जीएसटीएन-जीएसटी क्रियान्वयन का आधार स्तंभ

इच्छा शक्ति में ही सफलता का बीज होता है : श्री श्री परमहंस योगानंद

बात 2015 की है। मैं बिहार कॉमर्शियल टैक्स डिपार्टमेंट में बतौर असिस्टेंट कमिश्नर कार्यरत था और मेरी पोस्टिंग पटना में थी। एक दिन मैं दफ्तर से लौटते समय अपने बेटे के दोस्त के लिए बर्थडे गिफ्ट लेने खिलौने की एक दुकान पर पहुँचा। दुकान पर खिलौनों का अच्छा कलेक्शन था। मैंने उनमें से एक पसंद करके उसे गिफ्ट पैक करने के लिए आगे बढ़ा दिया। दुकान के मालिक, जिन्हें लोग झा जी कहकर पुकारते थे, ने बताया कि ज्यादातर खिलौने वो खुद बनाते हैं और इस काम के लिए पास में छोटी सी जगह भी ली हुई है। मेरे गले में टंगे आईडी कार्ड को देखकर वो पूछ बैठे— “क्या सर जी, आप तो टैक्स डिपार्टमेंट में हैं। जीएसटी कब पास करा रहे हैं?”



देश ने साल भर पहले ही नई सरकार को चुना था और जीएसटी के संसद में पेश किए जाने की सुगबुगुहाट रफ्तार पकड़ रही थी। लेकिन मेरे पास झा जी के सवाल का उस वक्त कोई स्पष्ट जवाब नहीं था। फिर भी, उनके मन की बात टोहने के लिए मैंने वार्तालाप को आगे बढ़ाया— “जीएसटी से क्या हो जाएगा भाई साहब?” झा जी बड़ी प्यारी मुस्कान के साथ बोले— “अरे श्रीमान जी, ई खिलौनवा जो आप देख रहे हैं ना इसके लिए बहुत सारा मटेरियल हम बाहर से मंगाते हैं। हमारी लागत बढ़ जाती है और माल महंगा होने के कारण इसे बिहार के बाहर बेचना मुश्किल हो जाता है। अगर एक ही टैक्स रहेगा, तो थोड़ा बाजार भी बढ़ेगा। हम तो जीएसटी के बिल्कुल फेवर में हैं साहब।”

इस बीच, झा जी ने खिलौने का गिफ्ट मेरी ओर बढ़ाया और मैं आगे बात न करते हुए, पेमेंट करके, घर की तरफ बढ़ चला। लेकिन मेरे मन में ये सवाल अभी तक चल रहा था कि इतने विविधतापूर्ण देश में जीएसटी सफल हो भी पाएगा। लेकिन मुझे झा जी का विश्वास से भरा चेहरा भी भूल नहीं रहा था। खैर बात आई—गई हो गई। कुछ समय के बाद मेरी प्रतिनियुक्ति राज्य सरकार की तरफ से जीएसटी नेटवर्क (जीएसटीएन) में हो गई और मैं दिल्ली आ गया।

जीएसटी नेटवर्क : जीएसटी सिस्टम का आईटी बैकबोन

जीएसटी नेटवर्क की संकल्पना नीति निर्धारकों द्वारा सैद्धांतिक रूप से एक Special Purpose Vehicle (SPV) के रूप में जीएसटी को लागू करने के लिए की गई थी। इस संगठन में राज्य एवं केन्द्र सरकार के पदाधिकारियों और तकनीकी विशेषज्ञों की एक साझा टीम तैयार की गई। इसे नॉट फॉर प्रॉफिट मेंकिंग कंपनी बनाते हुए, इसमें सरकार एवं प्राइवेट सक्टरों की हिस्सेदारी क्रमशः 49 एवं 51 प्रतिशत रखी गई। SPV का मुख्य उद्देश्य जीएसटी के समस्त हितधारकों (stakeholders) के लिए एक कॉमन इंटरफेस तैयार करना था और उन्हें एक जगह लाना था। इस SPV पर जीएसटी काउंसिल के माध्यम से सरकार का रणनीतिक नियंत्रण रखा गया। इस SPV से यह अपेक्षा की गई कि यह एक सुदृढ़, सुरक्षित एवं सरल आईटी सिस्टम के रूप में काम करेगा। साथ ही यह जीएसटी के क्रियान्वयन के बाद रजिस्ट्रेशन, कर भुगतान, रिटर्न फाइलिंग एवं रिफंड के अतिरिक्त कर-प्रशासन के लिए जरूरी मूलभूत सुविधाएं भी प्रदान करेगा।

यहां यह बात भी महत्वपूर्ण है कि वैट कर प्रणाली में कई राज्य अपना बैंक ऑफिस सिस्टम और पोर्टल खुद चला रहे थे। ऐसे सभी राज्यों की तकनीकी विशेषज्ञता और क्षमता में काफी अंतर था। उदाहरण के लिए—महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, केरल और तमिलनाडु के वैट पोर्टल अन्य राज्यों की तुलना में काफी उन्नत थे। वहीं दूसरी तरफ, अन्य राज्यों जैसे कि बिहार, नागालैंड, असम, मणिपुर आदि में प्रयोग में लाए जा रहे बैंक ऑफिस सिस्टम अपेक्षाकृत कम विकसित थे। इसलिए, जीएसटीएन के लिए यह एक अतिरिक्त जवाबदेही भी थी कि सभी राज्यों के अधिकारियों एवं करदाताओं के लिए एक ऐसा आईटी सिस्टम उपलब्ध कराए, जो पूरे देश के लिए एक समान हो।

शुरुआत के दौर में केवल 12 राज्यों ने जीएसटीएन को अपना बैंक ऑफिस विकसित करने के लिए अधिकृत किया था। लेकिन बाद में, सिर्फ कर्नाटक, तमिलनाडु, गोवा एवं सिक्किम राज्य एवं केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर बोर्ड (CBIC) को छोड़कर समस्त राज्य एवं केन्द्रशासित प्रदेश ने जीएसटीएन को ही अपने बैंक ऑफिस को विकसित करने के लिए चुना।

जीएसटी क्रियान्वयन का शुरुआती दौर

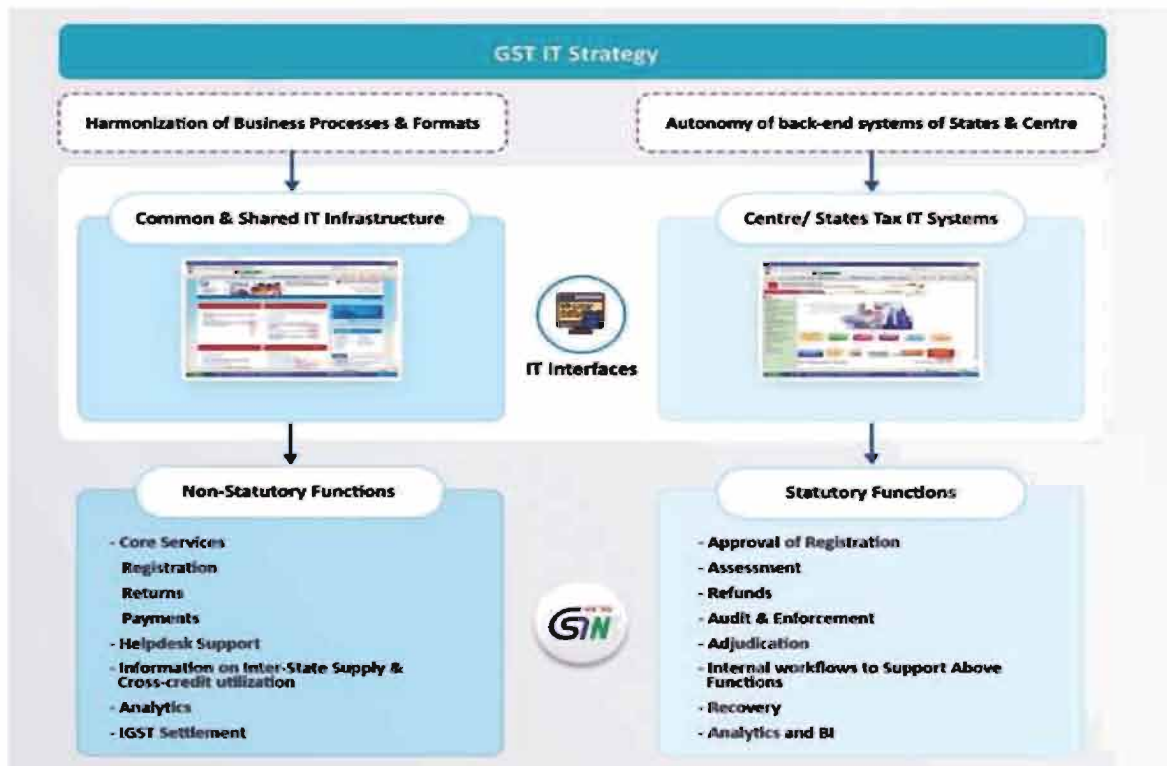
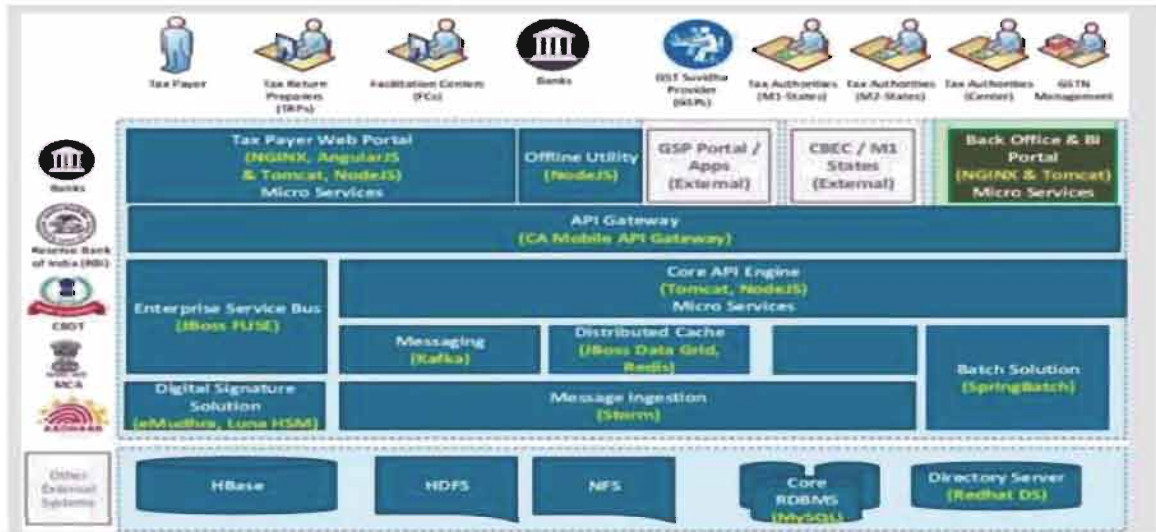
01 जुलाई 2017 को जीएसटी कानून देश में लागू हुआ। देश के अप्रत्यक्ष कर सुधार में यह एक बहुत बड़ी घटना थी। लेकिन यह रास्ता चुनौतियों से भरा था। सबसे पहली चुनौती थी— राज्यों एवं केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर बोर्ड (CBIC) के करदाताओं को मौजूदा कर व्यवस्था से नई कर व्यवस्था (जीएसटी) में ले आना, जिसे करदाताओं को माइग्रेट कराना कहते हैं। 8 नवंबर 2016 से करदाताओं के माइग्रेशन का कार्य शुरू हुआ। पायलट के तौर पर सिक्किम एवं गोवा को चिन्हित किया गया था, जहाँ इसकी शुरुआत की गई। कालांतर में, शेष राज्यों के करदाताओं को माइग्रेट किया गया। जीएसटी का क्रियान्वयन शुरू होने तक लगभग 65 लाख करदाता जीएसटी सिस्टम में माइग्रेट कर चुके थे। इस प्रक्रिया में राज्यों से निबंधित व्यवसायियों के पैन का ब्यौरा प्राप्त करना, उसको वैलिडेट करना तथा GSTIN जनरेट करके पॉसवर्ड कर साथ राज्यों को उपलब्ध कराने के कार्य को एक मिशन की तरह अंजाम दिया गया।

जीएसटी कानून लागू होने के साथ ही, जीएसटी पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन और कर-भुगतान की सुविधा को उसी दिन से लागू कर दिया गया। रिटर्न फाइल करना, रिफंड एवं अन्य सुविधाएं उसके बाद उपलब्ध कराई गईं। ऐसे राज्य जिनका बैकएंड सिस्टम जीएसटीएन को तैयार करना था, वो भी 01 जुलाई 2017 से उपलब्ध करा दिए गए ताकि कोई वैधानिक एवं तकनीकी समस्या न आए। मुझे स्मरण है कि उस दौरान करदाताओं एवं कर-अधिकारियों की शंकाओं का समाधान करने में दिन और रात का खयाल तक नहीं रहता था। लेकिन इसका सकारात्मक पक्ष यह था कि इन्हीं फीडबैकों की कारण ही पोर्टल के गुणवत्ता में निरंतर सुधार होता गया और जीएसटी सिस्टम एक भरोसेमंद, सक्षम एवं सुरक्षित सिस्टम के रूप में विकसित हो पाया।

जीएसटी के पाँच साल और जीएसटीएन

जीएसटी सिस्टम तो बन गया था लेकिन इसके functionalities में निरंतर बदलाव की प्रक्रिया जारी रही, जोकि सिस्टम के लिए चुनौतीपूर्ण था। जीएसटी सिस्टम को बनाने की प्रक्रिया को यदि आम भाषा में

समझना हो तो कहा जा सकता है कि यह एक स्वेटर बुनने जैसा कार्य है। यदि आपको स्वेटर की डिजाइन में कोई परिवर्तन करना हो, तो इसे नए सिरे से बनाना पड़ सकता है। हालांकि, जीएसटी सिस्टम नए प्लेटफॉर्म पर डिजाइन किया गया है और इसी वजह से functionalities के निरंतर बदलाव को अंजाम दिया जा सका। करदाताओं की अपेक्षाओं, कर-अधिकारियों की जरूरतों और टैक्स कंस्टेंट्स के सुझावों, सभी को ध्यान में रखकर जीएसटी सिस्टम में समुचित बदलाव किए गए और यह प्रक्रिया अब भी जारी है। जीएसटी सिस्टम की आधारभूत संरचना एवं आईटी रणनीति को नीचे दिए गए चित्रों के माध्यम से समझा जा सकता है :-



जीएसटीएन एवं कर-प्रशासन : मार्च 2019 से जीएसटीएन द्वारा कर अपवंचना (Tax evasion) धोखाधड़ी की पहचान (fraud detection) को चिन्हित करने के लिए उपलब्ध डेटा बेस पर एडवांस्ट एनैलिटिक्स का काम शुरू किया गया। इसके द्वारा predictive fraud analysis एवं revenue forecasting की प्रक्रिया शुरू की गई। मशीन बेस्ड लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल करते हुए Business Intelligence & Fraud Analysis (BIFA) के अंतर्गत GST Analytics and Intelligence Network (GAIN) module को विकसित किया गया। इस मॉड्यूल में इनकम टैक्स, ICEGATE पोर्टल, e-way bill के आंकड़ों के साथ जीएसटी में उपलब्ध डेटाबेस पर काम करना शुरू किया गया। परिणाम उत्साहवर्धक थे। GSTR-3B और GSTR-1 में दर्शाए गए आंकड़ों के आधार पर Redflag Reports राज्यों को नियमित रूप से उपलब्ध कराना शुरू कर दिया गया। आंकड़ों का अंतर करदाताओं को भी बताते हुए उनके कर अनुपालन (tax compliance) की प्रक्रिया को व्यवस्थित किया गया।

BIFA Data Sources

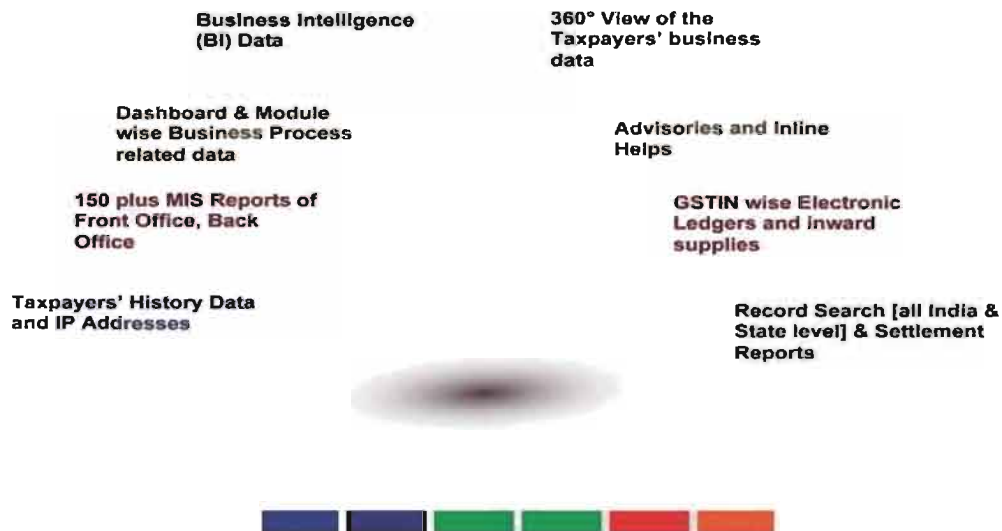


जीएसटी पोर्टल आज अपना इंटीग्रेशन UIDAI (आधार) एवं Ministry of Corporate Affairs (MCA) के साथ भी कर चुका है। यह तंत्र लगातार विकसित हो रहा है और अलग-अलग डेटा रिसोर्स का उपयोग डेटा माइनिंग में किया जा रहा है। इसका मकसद करदाता की स्पेसिफिक टैक्स प्रोफाइल को तैयार करना है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि आज दफ्तर में बैठा टैक्स ऑफिसर 150 से अधिक MIS रिपोर्ट्स, अपने क्षेत्राधिकार के व्यवसायी का 360 डिग्री प्रोफाइल, उसका लेन-देन का इतिहास, आईपी एड्रेस वगैरह अन्य

महात्वपूर्ण जानकारियों को अपने डैशबोर्ड पर देख सकता है, जिसकी कल्पना आज से पाँच वर्ष पूर्व नहीं की जा सकती थी।

आज जीएसटी पोर्टल पर लगभग तीन से चार हजार नए व्यवसायी नियमित रूप से प्रतिदिन रजिस्टर्ड होते हैं। मार्च 2022 में, 101.45 लाख करदाताओं ने GSTR-3B लाख करदाताओं ने अपनी सप्लाई का ब्यौरा यानी GSTR-1 दाखिल किया है, जोकि जीएसटी पोर्टल की सक्षमता का परिचायक है।

Analyzed & Consolidated Taxpayers' Data for Decision Making



Attribute-wise Classification of BIFA Use-Cases



आए दिन समाचार माध्यमों में हम फ्रॉड डिटेक्शन की खबरें पढ़ते हैं। इन खबरों में होने वाली घटनाओं की छानबीन जीएसटी सिस्टम द्वारा उपलब्ध कराए गए डिजिटल फुटप्रिंट के बगैर संभव नहीं हो पाती।

Media Coverage Mentioning BIFA/GSTN



जीएसपी परिस्थितिकी (Ecosystem) तंत्र

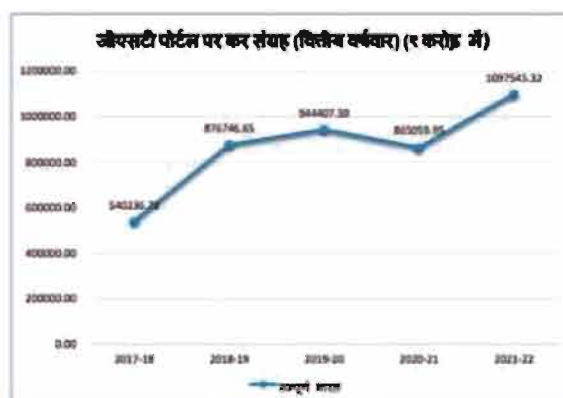
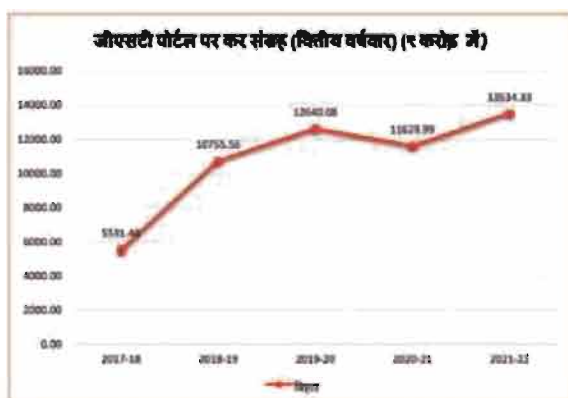
जी.एस.टी. सिस्टम को टैक्सपेयर्स गवर्नमेंट टू बिजनेस (जी2बी) पोर्टल के जरिए एक्सेस कर सकते हैं। हालांकि, करदाताओं की एक विस्तृत विविधता है (एसएमई, बड़े उद्यम, छोटे खुदरा विक्रेता आदि) जिन्हें विभिन्न प्रकार की सुविधाओं की आवश्यकता होती है जैसे जीएसटी अनुपालन प्रारूप में अपनी खरीद/बिक्री रजिस्टर डेटा को परिवर्तित करना, जीएसटी के साथ उनके लेखा पैकेज/ईआरपी का एकीकरण प्रणाली। जीएसटी सुविधा प्रदाता (जीएसपी) इसलिए जीएसटीएन द्वारा बनाए गए सेवा प्रदाताओं का एक परिस्थितिकी तंत्र है जो करदाताओं के लिए टैक्स फाइलिंग को अधिक आसान और सुविधाजनक बनाने के लिए स्वयं या अपने तीसरे पक्ष के भागीदारों के माध्यम से अभिनव समाधान (पोर्टल, मोबाईल ऐप, समृद्ध एपीआई) प्रदान करता है। ये बहुत ही सुरक्षित तरीके से जीएसटीएन से जुड़े हुए हैं। उपयोग में आसानी, देश में करदाताओं की संख्या में वृद्धि करने के लिए अंतिम लक्ष्यों में से एक पर विचार करने के लिए सबसे बुनियादी आवश्यकताओं में से एक है। इस प्रकार जीएसटीएन ने जीएसटी इंटरैक्टिव सॉफ्टवेयर प्रदान करने के लिए जीएसटी सुविधा प्रदाता (GSP), निजी पार्टियों को शामिल किया है जिससे जीएसटी सिस्टम पर काम करना आसान हो गया है।

जीएसटी और बिहार

बिहार उन 12 शुरुआती राज्यों में से एक था, जिसका बैकएंड सिस्टम जीएसटीएन को तैयार करना था। जीएसटी लागू होने के बाद, तमाम चुनौतियों के बावजूद, पूरे राज्य में बैकएंड सिस्टम एक साथ प्रभावी ढंग से चालू किया गया। राज्य के कर संग्रहण में इसका सकारात्मक असर देखने को मिला है, जोकि नीचे दिए गए तथ्यों से समझा जा सकता है।

जीएसटी पोर्टल पर वर्षवार कर संग्रह (वित्तीय वर्ष 2017-18 से 2021-22 तक) (₹ करोड़ में)

| राज्य कोड | राज्य | 2017-18 | 2018-19 | 2019-20 | 2020-21 | 2021-22 |
|-----------|---------------|-----------|-----------|-----------|-----------|------------|
| 10 | बिहार | 5531.46 | 10755.56 | 12640.08 | 11629.99 | 13534.33 |
| | कम्प्लेन भारत | 540236.72 | 876746.65 | 944407.30 | 865059.95 | 1097545.32 |



बिहार में जीएसटी के लागू होने के समय नए सिस्टम में माइग्रेट होने वाले करदाताओं की संख्या 1,68,767 थी, जो पाँच साल में बढ़कर मार्च 2022 तक 5,90,054 पहुंच चुकी है। यह इस बात का प्रमाण है कि यह बदलाव बिहार के लिए काफी अच्छा है। इसी प्रकार कर-संग्रहण के मामले में बिहार ने उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है, जो वर्ष 2021-22 में ₹ 13,534 करोड़ तक पहुंच चुका है।

जीएसटीएन : आगे की राह

जीएसटी सिस्टम की विगत पांच साल की सफलता ने इस पर लगने वाले सारे प्रश्नचिन्हों को दरकिनार कर दिया है। अब प्रश्न है कि, आज जब जीएसटी नेटवर्क सभी स्टेकहोल्डरों द्वारा एक भरोसेमंद एवं स्थिर सिस्टम के रूप स्वीकार किया जा चुका है, तो इसकी आगे की राह क्या होगी। एक महत्वपूर्ण डेटाबेस होने के कारण जीएसटीएन को जीएसटी काउंसिल के निर्णय के आलोक में सरकारी कंपनी बनाने की प्रक्रिया चल रही है। धीर-धीरे जीएसटीएन में राज्य एवं केन्द्र सरकार की भागीदारी 50-50 प्रतिशत होगी और जीएसटीएन का स्वामित्व पूरी तरह सरकार के हाथ में हो जाएगा।

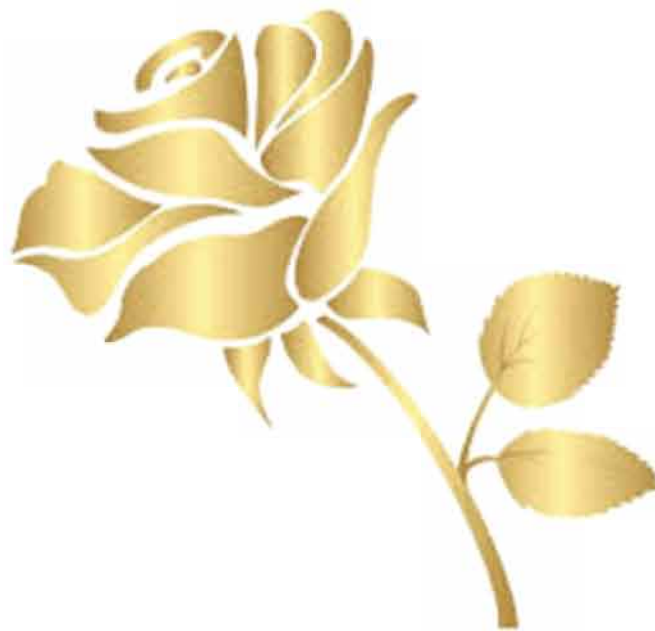
विगत पाँच वर्षों में जीएसटीएन के इस उतार-चढ़ाव भरे सफर के दौरान मुझे झा जी का वो विश्वास से भरा चेहरा नहीं भूलता है। मन में संतुष्टि का भाव है कि झा जी जैसे देश के आम टैक्सपेयरो को जीएसटी से जो उम्मीदें थीं, उसे पूरा कर पाने में हम काफी हद तक सफल हुए हैं। नई सोच वाले युवा भारत के सपनों को पंख देने के लिए शायद एक ऐसे ही सिस्टम की जरूरत थी। जीएसटीएन की सफलता इस बात का परिचायक है कि अगर पूरे विश्वास के साथ एक अच्छी टीम काम करे, तो कुछ भी नामुमकिन नहीं है। आशा है कि आने वाले दिनों में जीएसटीएन कर-प्रशासन में उत्तरोत्तर विकास करते हुए परोक्ष कर प्रशासन की व्यवस्था एवं करदाताओं की सहूलियतों को और भी प्रभावी ढंग से लागू करेगा।

प्रवीण कुमार
एवीपी, सविसेस
(बिहार सरकार से प्रतिनियुक्ति पर)
जीएसटीएन, नई दिल्ली





BEST WISHES



PRAMOD CONFECTIONERY & FOOD PRODUCTS

GAYA

HYPERREALITY : WHERE PHYSICAL AND VIRTUAL WORLDS CONVERGE

Have you ever felt insecure after watching those Instagram models flaunting their hourglass figures, or those celebrities and sportspersons displaying their drool worthy physiques and costly cars, houses, near perfect lives and lifestyles? Have you made online friends whom you never met in life but feel so connected that you end up sharing your loneliness, fears, weaknesses with these faceless people? Do you wake up in the morning and the first thing you do is to check your social media notifications, wondering if your online friends or 'role models' have shared something new?



Welcome to the world of hyperrealism, an exaggerated, concocted form of reality which is served to all the internet users in a platter today.

For more than 200,000 years, we humans only had access to the physical world, full of objects we could touch, taste, hear, smell and see. In the 1980s the internet gave birth to cyberspace: a virtual computer world designed to facilitate online communication. Then in 1991, the Web became publicly available; a new technology that would fundamentally change human behaviour.

It is absolutely impossible to imagine the world without google, Netflix, Instagram, WhatsApp. The ubiquitous use of social media and digital devices has made the web look and feel like the real world. However today, The division between reality and imagery has collapsed. Most of our time online is spent on devices, while remaining in the physical world. The next level is the virtual world, a fully immersive computer-simulated environment where people are represented by digital avatars. Currently, the virtual world is most visible in the gaming industry. Already, games like , Minecraft and Roblox have built complex worlds, where people can create new identities, explore new possibilities and spend time with friends. The explosive growth of gaming is powering major developments in the virtual world. With the introduction of revolutionary and reality bending metaverse of mark zukerberg, this concept of hyperrealism has taken a new amorphous form where unlike a video or computer game, the participant can interact, communicate, respond, invest, buy, sell, transact and feel the medium in many ways.

Therefore, At the final level with metaverse , we enter hyperreality, a state where the physical and virtual worlds converge, Where we can no longer distinguish between the two realities. But more importantly, the distinction wouldn't matter because people derive equal meaning and value from the simulated world as they would, from the tangible world of reality.

The global pandemic has further blurred the lines between the physical and digital world. We are now seeing the virtual world compete with the physical for resources. In the next decade, the two worlds will converge, creating a state of hyperreality: a simulation of reality without origin. Although it can be easy to dismiss hyperreality as some kind of sci-fi fantasy. We only have to look at the radical changes in human behavior and technological adoption during the current lockdown. In truth, elements of the hyperreal have already entered mainstream culture. This point takes on extra significance considering the leaders of the new world—Gen-Z—are equally, if not more comfortable living online.

In one of the most revolutionary books of our times, Sapiens, Yuval Noah Harari says ,” there are no gods in this universe, no nations, no money, no human rights, no laws and no justice outside the common imagination of human beings”.

The world envisioned by Harari, a world of superimposed and blurred realities where intelligence is artificial and actions are concocted is the future world. We can choose to call it anything, a technological dystopia or a hyperrealistic world, but one thing is sure, it is here to stay and whether we like it or not, we are already in this irreversible labyrinth and it is already governing our lives and actions. To quote Marshall McLuhan, “We shape our tools and then our tools shape us.”

Anup kumar
Deputy commissioner
GST



BEST WISHES



KBA AGROTECH PVT. LTD.

BHAGLPUR

व्यक्तित्व निर्माण में समाज एवं परिवार की भूमिका

प्रत्येक व्यक्ति माँ के गर्भ से लगभग 2.5 kg. से 3.5 kg. अबोध शिशु के रूप में जन्म लेता है। जन्म के साथ ही सबसे ज्यादा प्रभावित परिवार की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक स्थिति करती है। उसके बाद समाज का गहरा प्रभाव पड़ता है, जिसमें विद्यालय की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। इसका परिणाम है कि समृद्ध परिवार, बेहतर विद्यालय एवं प्रगतिशील समाज में जन्मे बच्चे को अच्छा करने की संभावना अधिक होती है, लेकिन गरीब परिवारों, सुविधा एवं वातावरण विहीन विद्यालयों एवं रूढ़ीवादी समाज में पैदा किए बच्चे भी अपने स्वयं के प्रयत्न एवं व्यक्तित्व निर्माण के संकल्प से अनंत उँचाइयों को प्राप्त किए हैं इसका उदाहरण भी कम नहीं है। चाहे महामानव संविधान निर्माता बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर हो या महान राष्ट्रपति कलाम साहब। इस कड़ी में हजारों उदाहरण से देश दुनिया भरा पड़ा है।



प्रश्न उठता है कि इसके पीछे कोई राज-रहस्य है। विधि का विधान है या किस्मत का खेल। बहु-संख्यक लोग इसे विधि का विधान, किस्मत का खेल, पूर्व जन्मों का प्रतिफल जैसे कारणों को महत्वपूर्ण मानते हैं एवं इसी सोच एवं विश्वास के साथ जीवन यात्रा पूर्ण करते हैं। लेकिन जो लोग प्रतिकूल परिस्थितियों में कठोर संघर्ष के बदौलत दुनिया में ख्याति प्राप्त किये, दुनिया में बदलाव के वाहक बने हैं उनमें से किसी ने इस सोच को सही नहीं माना है। मैं स्वयं भीषण गरीबी में एक दशक के स्वयं के संघर्ष एवं एक दशक के अभियान आंदोलन के अनुभव से इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं हूँ। मेरा मानना है कि व्यक्ति माँ के कोख से धरती पर आता है जिसके व्यक्तित्व निर्माण में परिवार, विद्यालय एवं समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है लेकिन वह अपने सोच के बदौलत स्वयं का व्यक्तित्व को बदल सकता है, निर्माण कर सकता है साथ ही दुनिया के बदलाव के इतिहास में अपना नाम दर्ज कर सकता है।

हजारों वर्षों के विश्वास को तोड़ना या बदलना कभी भी आसान नहीं रहा है अगर आसान होता तो चन्द लोग ही इस कार्य को नहीं कर पाते। लेकिन जिसने भी ठान लिया, संकल्प ले लिया, लाखों विपदाओं को हँसी में उड़ाते हुए अपने को कामयाब करने का उदाहरण दुनिया के सामने प्रस्तुत कर चुके हैं। प्रायः सबों के मन में दो विश्वास बैठा है। पहला, व्यक्ति वही कामयाब हुआ है जिस पर भगवान की कृपा है एवं भाग्य का धनी है। दूसरा, गरीब और कम बुद्धि के लोग सफल नहीं हो सकते हैं। मेरी स्पष्ट एवं कठोर मान्यता है कि भगवान से किसी की दुश्मनी नहीं है और जहाँ तक भाग्य की बात है वह या तो अंधविश्वास है, नहीं तो एक बढ़िया किस्म का बहाना है। वास्तविकता है कि यह आप की मुट्ठी में है। दूसरी बात गरीबी की जहाँ तक बात है, बड़ी समस्या है लेकिन इतना बड़ा भी नहीं है कि वो आपके जीव को हरा दे। शराब एवं तारु को छोड़कर, छोटा मोटा आय अर्जन एवं दयुशन आदि से पढ़ाई तो हो ही सकता है। कम बुद्धि का मसला पूर्णतः आत्मविश्वास से जुड़ा है। अगर आप आज से मानना शुरू कर दें कि मैं तेज हूँ तो

आप तुरंत बदलाव महसूस करेंगे और लोग भी मानने लगेंगे। एक काम आप को करना है कि आज ही सकल्प ले कि जो भी काम आप करेंगे वह The Best की मानसिकता से करेंगे। पहले ही तय कर लेंगे कि मेरे जैसा कोई दूसरा नहीं कर सकता है। शुरू में कठिन लगेगा लेकिन आप में जादूई बदलाव आयेगा। हम तो अपने बच्चों के साथ कठोर कभी-कभी क्रूर व्यवहार कर उसके मस्तिष्क को विकसित नहीं होने देते हैं अतः बच्चा आत्मविश्वास खो देता है। प्रशंसा की खुराक बच्चों को दें, अजूबा परिवर्तन आप पायेंगे।

अब मूल प्रश्न है कि आखिर कौन सी बातें हैं जो किसी को कामयाब बनाती हैं। कामयाब लोगों में वो कौन सा गुण होता है। क्या ये गुण पैदाइशी ही होते हैं या उसे विकसित भी किया जा सकता है। अगर आप में पाँच गुण हैं या इसे विकसित कर सकते हैं तो आप सफल होंगे ही। सभी कामयाब लोगों में ये गुण रहा है या उन्होंने विकसित किया है। Nature और Signature नहीं बदल सकता है यह पुरानी बात है और क्षम है। आप जब चाहें इन गुणों को अपने अंदर विकसित कर सकते हैं। आप आज ही शुरूआत कर दें। गंभीर बदलाव तुरंत दिखाई पड़ेगा।

1. विनम्रता या व्यवहार कुशलता सफल व्यक्ति का सबसे बड़ा गुण होता है यह आपके अंदर की कई कमियों का क्षतिपूर्ति कर सकता है। अगर आप तीब्र बुद्धि वाले नहीं हैं तो भी आप उन से आगे जा सकते हैं। विनम्रता आप को सफल ही नहीं बुलंदियों पर हमेशा के लिए बनाये रख सकता है।
2. जिम्मेवारी – सफल व्यक्ति का अनिवार्य गुण है। यह बहानेबाजी का उल्टा है। अपनी गलती को छुपाना या नहीं मानना, दूसरे को गलत मानना, अपने को सही साबित करना सामान्य मानसिकता है। लोग तो माँ-बाप और भगवान को भी जिम्मेवार ठहरा देते हैं। आप अपने हिस्से की गलती मानें, सुधार करें। अगर आप में सुधार हो गया तो सफल आप ही होंगे। इससे आप तो सफल होंगे ही, आप की इज्जत परिवार, समाज में बढ़ेगी। बहुत सारी समस्या का आसान हल होगा। इस सोच से परिवार एवं समाज में प्रेम आयेगा और आप लोगों के लिए सम्मानित उदाहरण होंगे।
3. गलती या कमियों से कुंठित, हतोत्साहित नहीं हो यह एक प्राकृतिक गुण है। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने भी सृष्टि का सृजन कई अपूर्णताओं के साथ किया है। आप तो मानव मात्र हैं। गलतियों के डर से कुछ करना, कुछ लिखना, कुछ बोलना अगर छोड़ दें तो आप अपने को वही रोक देंगे। जो जितना काम करता है उससे उतनी ही गलती की संभावना होती है। गलती स्वीकारें एवं निरंतर सुधार करें। अतः आप निरंतर जायेंगे।

समस्या का सामना करना एक कला है। सफल आदमी समस्या को एक चुनौती और अवसर के रूप में लेते हैं। समस्या को मुस्कुरा कर धैर्य के साथ सामना करने पर आप बड़ा हो जाते हैं और समस्या छोटी हो जाती है। आप के पास बड़ी समस्या आ रही है तो इसका संकेत है कि आप बड़े हो रहे हैं। अधिकांश समस्या का हल आसान होता है। कुछ ऐसी समस्या है जिसका हल नहीं हो रहा है तो समय पर छोड़ दें। अपने समय पर उसका हल हो जाएगा। हाँ घबराए नहीं। धैर्य, शांति और आत्मविश्वास बनाए रखें। इसे आदत और प्रवृत्ति बना लें।

4. चौथी महत्वपूर्ण बात है कि आपके जीवन का एक महान एवं पवित्र मकसद (लक्ष्य) होना चाहिए। आप आज ही लक्ष्य तय कर ले कि आप भीड़ में रहना चाहते हैं या अलग पहचान बनाना चाहते हैं। आप के धरती से जाने के बाद आपको लोग किस रूप में याद करेंगे। आप से परिवार और समाज को क्या लाभ होगा। आपके पीठ के पीछे लोग क्या चर्चा करते हैं। आप समाज में अच्छे का उदाहरण बनना चाहते हैं या बुरे का। आप के पास जीवन का एक स्पष्ट लक्ष्य होना चाहिए। उस लक्ष्य को रोज देखें। सोते वक्त और सुबह जगने के साथ। रोज एक नए काम करने का लक्ष्य रखें। डॉक्टर, इंजीनियर, पदाधिकारी, शिक्षक, लेखक आदि कुछ भी लक्ष्य रखें, लेकिन एक नए इंसान जरूर बनें। लोग अंत में आप के पद से नहीं आप के व्यवहार, चरित्र एवं परिवार समाज में दिये गये योगदान के लिए ही याद रखेंगे। आप भी यही करते हैं। तमाम तरह की बुराइयों को आज ही तौबा कर दें। आप जो बुराई दूसरे में नहीं देखना चाहते हैं उसे अपने अंदर से भी मिटा दें।
5. जिदद :- दुनियाँ में जो भी कामयाब हुए हैं, महान हुए हैं वे बहुत जिददी होते हैं। लेकिन सकारात्मक और महान उद्देश्यों के लिए। जिददी का मतलब हठी नहीं होता है, अपितु कठोर संकल्पित होता है। वे अपने पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए तमाम तरह की पीड़ा हँसकर सहन करने के लिए तैयार होते हैं। वे हर कठोर परिस्थिति का सामना करते हैं और जितनी बड़ी चुनौती होती है अपने को उतना ही कठोर संकल्पित करते हैं। महान वैज्ञानिक एवं भूतपूर्व राष्ट्रपति कलाम साहेब ने कहा था कि सपना वो नहीं होता जो हम सोने के दौरान देखते हैं, सपना वह होता है जो हम सोने नहीं देता है।
6. जल्दी (Short cut) में कुछ पाने के फेर में नहीं रहें। आज हर कोई जल्दी में सबकुछ पाना चाहता है। कठोर और लम्बा संघर्ष से जी न चुरायें। धैर्य के साथ कठोर संघर्ष एवं हँस कर समस्या का सामना, ये सभी सफलता का गुढ़ रहस्य है।

अबतक आप के व्यक्तित्व में वो ताकत आ चुका होगा। वो माहदा आ चुका होगा कि कठोर से कठोर, विपरीत से विपरीत परिस्थितियों का सामना कर सकेंगे। अब आप का जीवन भाग्य, भगवान या किसी दूसरे के अधीन नहीं है, आप पूर्णतः स्वतंत्र हो चुके हैं। आपकी गाड़ी आपके हाथ में है। अब आप विचार करें। जीवन में बदलाव का, एक ही बार के संघर्ष में कई पीढ़ियों के लिए कुछ करने का, गरीबी में कुछ बड़ा करने का कौन सा रास्ता है। जितना चिंतन करना है, तर्क करना है कर लें। आप अंत में इसी नतीजे पर आर्येंगे कि शिक्षा से बड़ा और बेहतर कोई दूसरा विकल्प नहीं है। आप कुछ भी करना चाहें, कुछ भी बनना चाहें, शिक्षा पहला और अंतिम विकल्प है। शिक्षा आपको नौकरी, पद-प्रतिष्ठा ही नहीं देता है आपके संपूर्ण व्यक्तित्व को बदल देता है। चाहे आप व्यवसाय करें, समाज सेवा करें या कुछ और भी, शिक्षा आपके स्तर को उठा देता है। गरीब के लिए तो इससे बेहतर कुछ भी नहीं है। शायद आप सहमत होंगे।

किसी व्यक्ति के निर्माण में, व्यक्तित्व के विकास में सबसे बड़ी भूमिका परिवार का है। परिवार सिर्फ आदमी का समूह नहीं है यह वो सबकुछ निर्धारित करता है जो एक मजबूत व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है। बच्चा सबसे ज्यादा किसी से प्रभावित होता है तो वह परिवार है। अपने बड़े

भाई, बहन या माता-पिता, दादा-दादी को ही अपना आदर्श मानता है। अनुकरण करता है। आप को तय करना है कि आप अपने बच्चों में कैसा व्यक्तित्व देखना चाहते हैं। आप शराबी हो, बुरे आदतो-विचारो से प्रभावित हो और बच्चे ऐसा नहीं बने, ऐसा कैसे हो सकता है।

आप अपने बच्चों को भरपूर लाड़-प्यार दें। उसपर भरोसा करें। अगर कोई शिकायत भी करे तो बच्चे के सामने कहें कि मेरा बेटा, मेरी बेटी, मेरा भाई, मेरी बहन ऐसा नहीं हो सकता है, फिर आप अपने बच्चे में बदलाव देखेंगे। लेकिन अगर आप को न्याय करना हो तो पूरी निष्पक्षता और कठोरता से न्याय करें। अपने बच्चे की गलतियों का कदापि बचाव नहीं करें। आपकी निष्पक्षता और कठोरता भविष्य के लिए उसे बेहतर इंसान बनायेगा।

अपने बच्चों को ईश्वर का दिया एक तोहफा एक अवसर मानें। आप अपने जिंदगी के जिन मकसदों में सफल नहीं हो पायें, जो सपना अधूरा रह गया। ईश्वर ने बच्चों के रूप में एक मौका दिया है। अपना और पूरे परिवार का सपना बच्चों के साथ देखें, बच्चों में देखें।

बच्चों की पढ़ाई के लिए कुछ भी कुर्बानी देने को तैयार रहें। धर- धर बेच दें, लेकिन बच्चों को पढ़ायें। जल्दी बड़ा बनने, घर-जमीन बनाने और दूसरे के देखा-देखी में बच्चों को कमाने के लिए जल्दी सरत, पंजाब न भेजें। जब बच्चे पढ़-लिख कर बाहर कमाने जाएंगे तो मजदूरी नहीं, सम्मानजनक काम करेंगे। वेतन-मजदूरी अधिक मिलेगा। बेटी को बोझ समझ कर जल्दी निपटाने के फेर में न रहे। बिहार सरकार बेटी को 35 प्रतिशत आरक्षण दिया है उसका लाभ उठायें। बेटी का सफल होना आसान हो गया है। फिर तो लोग आपका उदाहरण देंगे। पीछे-पीछे चलेंगे।

परिवार में प्रेम, सौहार्द बहुत महत्वपूर्ण है। अच्छे माहौल में बच्चे श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं। आप माँ-पिता को धरती का भगवान मानें। भरपूर सेवा करें। आपके बच्चे भी आपके साथ ऐसा ही करेंगे।

व्यक्तित्व के निर्माण में समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यालय भी समाज का हिस्सा है। आज-कल सरकारी विद्यालय में बच्चे भगवान भरोसे हैं और निजी विद्यालय पैसा कमाने का साधन बन गया है। विद्यालय में बच्चों को Top करने की शिक्षा दी जाती है। बेहतर इंसान बनने, लोगों को सहयोग करने की शिक्षा नहीं देते हैं। हम बच्चों को सिर्फ पढ़ाते हैं, सिखाते नहीं हैं। शिक्षक को स्वयं का आदर्श रूप उदाहरण के रूप में बच्चों के सामने प्रस्तुत करना होगा। कम उम्र के बच्चे जाति-धर्म के झगड़े, गलत राजनीति, चारित्रिक बुराईयों से प्रभावित हो रहे हैं। सम्मान देने की प्रवृत्ति खत्म हो रही है। Bold बनने के नाम पर संस्कारों से दूर जा रहे हैं।

आज दूसरे को दोष देने की प्रवृत्ति चल रही है। बच्चे, शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्रबंधक, अभिभावक, समाज सब एक दूसरे को दोषी ठहरा रहे हैं। जिम्मेवारी लेने, अपनी भूमिका निभाने को कोई तैयार नहीं है।

हमें नहीं भूलना चाहिए समाज में, राष्ट्र में जो भी परिवर्तन होगा उसकी शुरुआत सब से पहले विद्यालय से होनी चाहिए। शिक्षक उदाहरण बनें, प्रबंधक/प्रधानाध्यापक उदाहरण बनें। अच्छा करने, अच्छा बनने का होड़ शुरू हो तो बच्चे कैसे पीछे रहेंगे। अभिभावक/समाज कैसे पीछे रहेगा।

बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में सामाजिक पक्ष या समाज की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती

है। प्रगतिशील, शांतिपूर्ण, सहयोगी समाज में व्यक्ति में सहयोग, भाईचारा, प्रेम, सहिष्णुता, उदारता, दया, करुणा जैसे मानवीय गुणों का विकास होता है। किसी समाज में विवादों का निपटारा एवं आपसी सहयोग की व्यवस्था जितना मजबूत होता है वह एक खुशहाल समाज होता है। हम यह नहीं मान सकते हैं कि समाज में विवाद नहीं होगा। कोई व्यक्ति गलती नहीं करेगा। हम उसका निष्पादन जितना न्यायपूर्ण, धैर्य एवं विवेक पूर्ण तरीके से करेंगे उतना ही समाज में शांति और प्रेम आयेगा। समाज में हम चाचा-चाची, दादा-दादी, भाई-बहन, देवर-भाभी जैसे रिश्ते से बंधे हैं। चाहे हम किसी जाति-धर्म का हों। चाहे गरीब हों या अमीर। छोटे-छोटे विवाद के समय यह रिश्ता कमजोर पड़ जाता है। हम गुट या पक्ष में बँट जाते हैं। होली, दीवाली, मुहर्रम जो खुशियों का पर्व है प्रेम का पर्व है वो थाना-पुलिस के चक्कर में बर्बाद हो जाता है। क्या हम आपस में बैठकर समाधान नहीं कर सकते हैं? क्या गाँव समाज के पाँच-दस बुद्धिजीवी, समझदार, जिम्मेदार लोग आपस में बैठकर हल नहीं कर सकते हैं? क्या गलत को गलत और सही को सही करने का साहस नहीं कर सकते हैं? जिनकी भी गलती है उन्हें समझाया नहीं जा सकता है? हजारों वर्षों से चली आ रही पंच परमेश्वर की व्यवस्था आधुनिक न्याय प्रणाली से बेहतर नहीं है? मेरा स्पष्ट मानना है कि न्याय और प्रेम सामाजिक और पारिवारिक जीवन की आत्मा है। प्रतिक्रिया और प्रतिशोध से सबका नुकसान होता है। समाज में प्रेम और भाईचारा मर जाता है। जिसका सबसे बुरा असर बच्चों पर पड़ता है। पढ़ने-बढ़ने के उम्र में लड़ने में बीता देते हैं। नफरत का इलाज मोहब्बत से ही हो सकता है।

समाज के सभी लोगों से मेरा आग्रह है कि हम बिना जाति धर्म में बँटें, बिना अमीर-गरीब में बँटें एक नये समाज का निर्माण करें। समाज के सक्षम एवं संपन्न लोग कमजोर गरीब लोगों का मदद करें। अगर हर सक्षम एवं संपन्न लोग अपने ही गाँव के गरीब लाचार एक बच्चा की पढ़ाई की जबाबदेही ले लें। अपने बच्चे के पढ़ाई के साथ एक गरीब बच्चे की पढ़ाई का जिम्मेदारी ले लें तो कल्पना करें समाज में कैसा बदलाव आएगा। अगर कोई बच्चा भटकता है या गरीबी के बेबसी में पढ़ाई नहीं कर पाता है तो वह नुकसान उस व्यक्ति या उस घर का ही नहीं है पूरे गाँव या समाज का भी है। हम पूरी विनम्रता से आग्रह करते हैं कि तमाम तरह के मन के गाँठ को खोलकर आगे बढ़ें, मेरा पूरा भरोसा है कि नया विहान होकर रहेगा। असीम शुभ कामनाओं के साथ, नयी पीढ़ी से नये समाज निर्माण का आवाहन करता हूँ।

कौन कहता है कि आसमाँ में सुराख नहीं हो सकता,

एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों।

! धन्यवाद !

नरेश कुमार
राज्य-कर उपायुक्त



BEST WISHES



NEHA STEELS
BHAGLAPUR



क्या हम सुखी हैं या खुश हैं?

वर्तमान समय सुख और खुशी के बीच पेंडुलम का समय है। हमें अपने आप से पूछना चाहिए कि हम क्या चाहते हैं?

अभी कुछ दिन पहले की बात है कि बाजार में सब्जी लेने गया था। साथ में मेरा 8 साल का बच्चा भी था। उसने एक बाइक पर तीन लड़कों को बहुत तेजी से बाइक चलाते हुए देखा तो बोला ये लोग इतना तेज कहाँ जा रहे हैं? मैंने कहाँ जश्न में शामिल होने जा रहे हैं। बच्चा अवाक रह गया कि ये कैसी खुशी है जो जीवन से हाथ धो बैठने का प्रयास है।



सच में आज वर्तमान समय में हम इतने तेज हो गये हैं कि हमारे आँसु जो पूर्वजों के आँसु थे से काफी अलग हो गये हैं।

हर एक व्यक्ति जो इस संसार में जीवित है और जो मृत हो चुका है दोनों के बारे में सोचा जाय तो ऐसा लगता है कि केवल हम ही हैं जो तीसमार खान हैं, मेरे पास ही सारी समस्याओं का समाधान है।

अभी वर्तमान समय में हम जिस जीवन को जी रहे हैं वो पूर्णतया नाटकीय जीवन है। हम अपने कर्मों को उस रूप में नहीं रख पाते हैं जिस रूप में हम बनने का प्रयास करते हैं। हम अपने आवरण को अपने अंतर्मन से अलग रख रहे हैं। हम अपने आप को धोखा देते हैं और हमें लगता है कि हम दूसरे को धोखा दे रहे हैं। जो कि तमाम उदाहरणों में दिखता है कि हमारा अंतर्मन कहता है कि झूठ न बोले, धोखा न दे लेकिन बार-बार अपने का सिद्ध करने के लिए हमें झूठ बोलना पड़ता है। कई लोग तो अपना पहनावा ही बदल लेते हैं जैसे हरिशंकर परसाई की रचना 'भेड़ और भेड़िया' में भेड़िया घास का तिनका लगा लिया था ठीक वैसे ही आज के व्यक्ति घास का तिनका लगा लिए हैं। व्यक्ति किसी पर भरोसा ही नहीं कर पाता है कि कौन उसका हितैषी है और कौन उसका नुकसान करने वाला है।

वैसे कहा भी गया है कि शरीर का सुख कोई सुख नहीं है अंतर्मन का सुख ही वास्तविक सुख है। परन्तु हर एक व्यक्ति डरा हुआ महसूस कर रहा है। करोड़ों बना लिया है तो गवाने का डर बना रहता है।

एक बात हमें सोचने पर मजबूर कर देती है कि कोई व्यक्ति पूरा जीवन झूठ के सहारे जीता है और मरते वक्त वो कहता है कि भगवान मुझे माफ करे मैंने बहुत ही गलत काम किया है।

एक व्यक्ति जो अनजाने में झूठ बोल कर लोगों को खुश रखता है लेकिन वो अपने कार्य से समाज का परोपकार करता है और उसको समाज के लोग बोलते हैं देखिए कितना अच्छा आदमी है।

जैसे सिनेमा के कलाकार जो अपने निजी जीवन में चाहे जितने दुःखी हो वो पर्दे पर चरित्र को जीवंत करते हैं। देखकर लगता ही नहीं है कि वे कितने दुःखी हैं।

उसी तरह हमें भी अपने जीवन में निर्धारित करना चाहिए की हमें खुशी चाहिए या सुख। क्योंकि सुखी व्यक्ति खुश है या नहीं यह कहा नहीं जा सकता। लेकिन खुश व्यक्ति सुखी हो ये जरूरी है।

आज के भौतिकवादी युग में जहाँ हर वस्तु या व्यक्ति को सिर्फ उपयोगिता के दृष्टि से देखा जा रहा है वहाँ सुख और खुशी की बात करना शोभा नहीं देता है। यदि ऐसा नहीं है तो आप अपने दिल पर हाथ रखकर सोचिए की तकनीक ने हमें कितना स्वार्थी बना दिया है। हम ज्ञान और विज्ञान के बदौलत अपनी मान्यताओं और प्रथाओं के आलोचक बन गये हैं। कारण भी स्पष्ट है कि अब पढ़ने का रिवाज समाप्त हो गया है। सारी समस्याओं का स्पष्ट समाधान गूगल पर किया जा रहा है। ज्ञान तार्किक रूप से लाभकारी है या हानिकारक इससे कोई मतलब नहीं है। जैसे कि जब गूगल से अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करते हैं तो गूगल को ये पता ही नहीं होता है कि शब्द किस भाव को प्रकट कर रहा है। वो निरपेक्ष्य भाव से शब्द का अर्थ प्रस्तुत कर देता है। लेकिन वही जब हम किसी जानकार व्यक्ति से पूछते हैं तो पहले वह व्यक्ति भाव पूछता है तब उसका अनुवाद बताता है, लेकिन हम तो पूर्ण रूप से तकनीक पर निर्भार हो गये हैं। जिसका खमियाजा कभी कभी भारी शर्मिंदगी के रूप में उठाना पड़ता है।

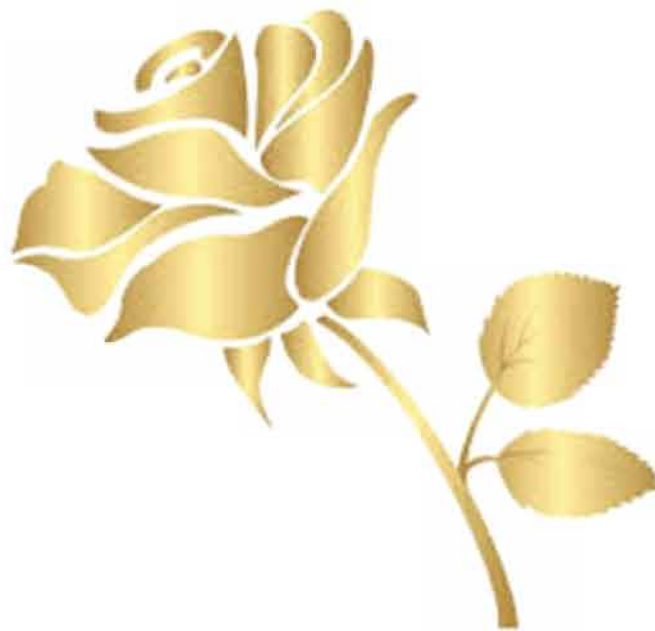
अतः स्पष्ट है कि हमें अपने जीवन में खुशियों को ढूँढना चाहिए सुख तो आता जाता रहता है।

अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय

राज्य-कर सहायक आ०



BEST WISHES



AFCONS SIBMOST JOINT VENTURE

HAJIPUR



कविता

-: काव्य गाथा :-

कवि जब अभिभूत होता,
शब्द की अठखेलियों से।
पाठकों का मन परखने,
तन की भी परवाह न करता।
उठती आहें गीत बनकर,
छलके आँसू प्रीत बनकर
नवरस की कल्पनाओं से,
प्रकृति का श्रृंगार करता।
रिश्ते—नाते दुखित होते,
प्रियजनों की रूसवाईयों से।
नवसृजन श्रृंगार हेतु,
कर्मपथ विचलित न होता।

वो समझता अन्तर्मन में,
देश कब उन्नत बनेगा।
विज्ञान युग के साथ ही,
साहित्य कब सुदृढ़ होगा।
काव्य कैसे सुन्दर सजेगा,
रस, छंद, अलंकार गूँथकर।
पाठकों के तरुण मन में,
सम्प्रेषण का हथियार बनकर।
साहित्य और इतिहास
मिलकर,
देश की संस्कृति है गढ़ती।
काव्य यदि जख्मित हुआ तो,
देश की सीमा सिमटती।
काव्य धरा की वो फिजा है,
रूह में है जा दहकती।

शब्दरूपी वाण बनकर,
ब्रह्मास्त्र से ये प्रलय भी करती।
प्रेरणा से इस जगत के,
भाव चेतन को संवरती।
पर दिग्भ्रमित युवा मन,
संधान इसका कर न पाता।
इन्टरनेट की गंदगियों से,
अंतर्मन ग्रसित जो होता।
दुश्मनों की चाल गहरी,
तरुण मन भ्रमित हुआ है।

आओ मिलकर भटके मनुज को,
काव्य की महत्ता बतायें।
संस्कृति की अमूल्य धरोहर,
काव्य रचना को समझायें।
राष्ट्रधर्म की पुकार सुनें हम,
काव्य को निर्मल बनाएं।
सप्तसुरों में काव्य रचकर,
काव्य का संगीत गाएँ।
विलुप्त होती काव्य जगत को,
फिर से हम रोचक बनाएं।
साहित्य साधना की विधा में,
अंत्याक्षरी को फिर से गाएँ।

मौलिक एवं स्वरचित
“मनोज कुमार कर्ण”
राज्य कर सहायक आयुक्त
अन्वेषण ब्यूरो, पूर्णियाँ प्रमंडल
पूर्णियाँ



-: मृगतृष्णा :-

मृगतृष्णा की चादर ओढ़,
भटक रहा मानव इस जग में।
मातृगर्भ से वर्तमान तक,
खुद को समझ न पाया जग में।

जन्म लिया निर्मल काया थी,
शैशव में निश्चल माया थी।
यौवनकाल भरमाया जग ने,
झूठे अरमान सजाया जग में।

होंगे वृद्ध जब जर्जर काया में,
मृत्युशैया पर लेटा तब तन—मन,
भ्रमित ही होगी मोहित माया में।
अंत समय तक फिर भी मानव,
कुछ भी समझ न पाया जग में।

तन की कंचन आकांक्षाओं को,
झूठ—सांच के जाल से बुनकर,
ऊँचे ख्वाब सजाया जग में।
रिश्तों के भंवर जाल में फंस,
मोहग्रसित मन पाया जग में।

मृगतृष्णा की चादर ओढ़,
भटक रहा मानव इस जग में।

“प्रात का निर्मल पहर है”

प्रात का निर्मल पहर है...
दूर क्षितिज में सूरज निकला,
कण-कण विहँस रहा है पुलकित।
कैसी सुंदर घटा मनोहर,
कोलाहल से दूर जिंदगी।
अंधियारे को दूर भगाकर,
शांत डगर है, शांत शहर है।
प्रात का निर्मल पहर है...

हल्की-हल्की प्रभा है बिखरी,
तृण-तृण पर जलबिंदु है निखरी।
निश्चल जल है, शांत सरोवर,
मंद पवन से खिला कुमुद दल।
वणिक चला फिर अपने पथ पर,
कर्म चक्र की गति अटल है
प्रात का निर्मल पहर है...

फुनगी पर इतराती कोयल,
जगो-जगो ये कहे कुहककर।
अभी समय है सोचो कुछ तुम,
सपने संजाओं सबसे हटकर।
चंचल मन की डोर पकड़ लो,

हठ करने का समय नहीं है।
प्रात का निर्मल पहर है...

जब आएगा सूरज ऊपर,
निदाघ प्रचंड किरणों से आहत।
मन की तरुणाई बुझ जाएगी,
होगा व्यथित निढाल प्रफुल्ल तन।
इसकी भी तुझे खबर नहीं है।
प्रात का निर्मल पहर है...

फिर आयेगा सायं बेला,
पश्चिम में रवि अस्ताचल।
सारे दिन जब ढल जाएंगे,
वक्त का पहिया पंख लगाकर।
ऐसे में विश्रांति कहाँ है।
प्रात का निर्मल पहर है...

मौलिक एवं स्वरचित
“मनोज कुमार कर्ण”
राज्य कर सहायक आयुक्त
अन्वेषण ब्यूरो, पूर्णियाँ प्रमंडल, पूर्णियाँ
मोबाई नं०- 8757227201

BEST WISHES



TARAK ENTERPRISES

PATNA

बिहार कराधान : संरचना, प्रणाली, प्रशासन एवं अन्य

विश्व में प्रथम करारोपण का उल्लेख लगभग 3000BC में मिस्त्र में मिलता है। भारतीय उपमहाद्वीप में 2500BC में उन्नत सैधव सभ्यता की नगरयोजना व व्यापार प्रणाली केंद्रीय शासन प्रणाली और उसे आधार प्रदान करने वाली कर संरचना के बगैर संभव नहीं है। वैदिक साहित्य में कर को बलि कहा जाता था। परंतु भारत में सबसे पुराना कर संबंधी अभिलेखीय विवरण अशोक के रुम्भिनदेई अभिलेख में मिलता है जिसमें अशोक द्वारा कर कम किये जाने का उल्लेख है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कर प्रशासन का विस्तृत उल्लेख है साथ ही मनुस्मृति में भी करारोपण सिद्धांत का विशद वर्णन है। मध्यकाल में अलाउद्दीन खिलजी एवं मुहम्मद बिन तुगलक के काल तक कर की संख्या व मात्रा में भारी वृद्धि से जनता में त्राहिमाम था, जिसे फिरोज तुगलक ने काफी घटा दिया। अकबर की भू राजस्व प्रणाली तो विश्वविख्यात है। अंग्रेजों ने रैयतवाड़ी व महालवाड़ी क्षेत्रों में भू राजस्व व अन्य करों को काफी बढ़ाकर भारतीयों को कंगाल बना दिया।



कर प्रणाली किसी भी राज्य व्यवस्था की रीढ़ होती है। कर एक ऐसा अनिवार्य देयता है जिसे विधिकरूपेण सरकार या उसके प्राधिकारी को आवर्तिक रूपेण देना होता है। करारोपण (Incidence of Tax) के दो मौलिक आधार हैं। (1) सक्षमता (Ability) एवं (2) प्रयोग (utility) याने एक कल्याणकारी राज्य में जनप्रतिनिधि द्वारा उन्हीं से कर लिया जा सकता है जो उसे देने में सक्षम हों। प्रत्यक्ष कर इसी से जुड़ा है, जबकि प्रयोग सिद्धांत (Utility theory) कहता है कि करादेय वस्तु या सेवा के प्रयोग पर सबों को एक समान कर देना होगा; इसी सिद्धांत से अप्रत्यक्ष कर प्रणाली जुड़ी है। इन्हीं करों को तीन तरीके में वर्गीकृत किया जा सकता है न्याय स्थापना हेतु। प्रथम अनुपातिक कराधान (Proportional Taxation) (2) प्रगतिशील (Progressive) कराधान में आय बढ़ने पर कर की दर बढ़ती जाती है। (3) प्रतिगामी कराधान (Regressing कराधान) में आय बढ़ने पर कम अनुपात में करदेयता होती है। कराधान में निम्न सिद्धांतों को यथासंभव भामिल किया जाता है। समानता, निश्चितता सुविधा, मितव्ययिता, उत्पादकता, लोचशीलता एवं विविधता। साथ कराधान में निम्न पर प्रभावों का भी ध्यान रखा जाता है – उत्पादन, वितरण, मुद्रास्फीति, मंदी, उपभोग।

पूरे विश्व में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर प्रणाली विद्यमान है। जहाँ प्रत्यक्ष कर प्रणाली में कराघात (Impact of Tax) एवं करापात (Incidence of Tax) संबंधित एक ही विधिक व्यक्ति पर होता है वहीं अप्रत्यक्ष कर में कराघात व करापात अलग व्यक्तियों पर होता है। प्रत्यक्ष कर के उदाहरण है : आयकर, निगम कर, संपत्ति कर आदि। वहीं अप्रत्यक्ष कर में शामिल है : उत्पाद कर, सीमा शुल्क, बिक्रीकर, मनोरंजन कर आदि। इन्हीं लगभग 15 अप्रत्यक्ष करों का समावेशन माल एवं सेवाकर अधिनियम 2017 में किया गया है।

बिहार राज्य में सर्वप्रथम बिक्री कर अक्टूबर 1944 में लागू किया गया था और फिर स्वतंत्रता बाद भी यह अधिनियम लागू रहा और बिहार बिक्री कर अधिनियम 1947 लागू हुआ। इसके बाद बिहार फिनांस एक्ट(बिहार वित्त अधिनियम) 1981 आया जिसे बिहार मूल्यवर्द्धित कर अधिनियम 2005 ने प्रतिस्थापित किया। ध्यातव्य रहे कि भारत में सर्वप्रथम बिक्रीकर भारत शासन अधिनियम 1935 के तहत वस्तु बिक्री व विज्ञापन पर प्रावधित था और 1938 में पहली बार मोटर स्पिरिट और लुब्रिकेंट पर लगाया गया था।

भारतीय संविधान की प्रकृति संघात्मक है। फलतः संविधान में ही विधायी, प्रशासनिक एवं वित्त, संपत्ति, संविदाएँ और वाद संबंधी विस्तृत अनुच्छेद समर्पित है। अनुच्छेद 265 स्पष्टरूपेण घोषित करता है कि विधिक प्राधिकार के बिना करारोपण नहीं होगा। संविधान का भाग 12 वित्त, संपत्ति, संविदा और वाद से जुड़ा है तो भाग 13 भारत के राज्य क्षेत्र के भीतर व्यापार, वाणिज्य और समागम से जुड़ा है। अनुच्छेद 264 से 307 तक तत्संबंधी विस्तृत प्रावधान से जुड़े हैं। साथ ही संविधान की सातवीं अनुसूची में स्पष्ट उल्लेख है कि किस मद में कौन कर लगाएगा। तभी तो माल एवं सेवा कर अधिनियम 2017 हेतु संविधान में 101वां संशोधन किया गया। वित्तीय व वाणिज्यिक क्रियाकलापों का इतना विस्तृत विवरण विश्व के किसी भी संविधान में नहीं मिलता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद ही विश्व में मूल्यवर्धन कर (वैल्यू एडेड टैक्स) का विचार जोर पकड़ने लगा। सर्वप्रथम फ्रांस में 1954 में मूल्यवर्धित कर प्रणाली लागू की गयी। मूल्यवर्धन कर प्रणाली में किसी वस्तु के निर्माण विनिर्माण, संवर्धन, विपणन आदि क्रम में मूल्यवर्धन पर करारोपण किया जाता है ताकि अप्रत्यक्ष कर प्रणाली के तहत अंतिम उपभोक्ता से संपूर्ण कर वसूला जा सके। बाद में जब वस्तु के साथ सेवा को भी कर दायरे में लाया गया तो उसपर भी मूल्यवर्धन कर प्रणाली लागू किया गया। भारत में सर्वप्रथम मूल्यवर्धन कर प्रणाली CENVAT के रूप में केंद्र में लागू किया गया तथा राज्यों में सर्वप्रथम हरियाणा ने लागू किया और बिहार मूल्यवर्धित कर अधिनियम 2005 में लागू हुआ। उसी वर्ष बिहार मूल्यवर्धित कर नियमावली 2005 भी लागू हुआ। इस तरह संघीय व्यवस्था वाले ढाँचों में राज्य कर प्रणाली के तहत राज्य की सीमा के अंदर VAT कर प्रणाली लागू हुआ जिसके तहत राज्य के अंदर बिक्री पर ही इनपुट टैक्स क्रेडिट दिया जा सकता था।

बिहार मूल्यवर्धित कर अधिनियम 2005 में कुल 100 धाराएँ हैं, जिन्हें 15 अध्यायों (चैप्टर) में बांटा गया था। जिसमें परिभाषाएँ, करपात, कर प्राधिकारी, कर दर, निबंधन, कर-विवरणी, लेखापुस्त, निरीक्षण, सर्च एवं सीजर, चेकपोस्ट, रिफंड, अपील, अपराध व शास्ति एवं अन्वेषण ब्यूरो आदि से जुड़े अध्याय थे। साथ ही पाँच अनुसूची भी समाविष्ट हैं, जिसमें चार अनुसूचियों में वस्तुओं का वर्गीकरण है। साथ ही बिहार मूल्यवर्धित कर अधिनियम 2005 में 65 नियम का वर्णन है तथा विभिन्न प्रकार के आवेदन प्रपत्र, घोषणापत्र, सूचना प्रपत्र एवं प्रमाण पत्र के विहित प्रारूपों का उल्लेख है। बिहार मूल्यवर्धित कर अधिनियम 2005 के महत्वपूर्ण धाराओं में निम्न बेहद महत्वपूर्ण एवं बहुधा काम आने वाले थे। धारा-2 में परिभाषा, धारा-3 में करारोपण, धारा-10 कर अधिकारी, धारा-14 कर दर, ITC-16 धारा-19 निबंधन, धारा-20 संवीक्षा, धारा-31 एवं 32 कर निर्धारण, धारा-56 निरीक्षण, सर्च एवं

जब्ती, धारा-58 सर्वे, धारा-60 एवं 61 चेकपोस्ट व चलंत वाहन निरीक्षण, धारा-68 रिफंड, धारा-72 अपील, धारा-73 ट्रिब्यूनल, धारा-86 अन्वेषण ब्यूरो आदि महत्वपूर्ण थे। इनपुट टैक्स क्रेडिट से संबंधित धारा 16 बेहद महत्वपूर्ण है। उपरोक्त धाराओं से संबंधित नियम भी बेहद महत्वपूर्ण है। परंतु विश्व में बढ़ते वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण की ताकतों से बाजार की शक्तियाँ मजबूत हो रही थी और पूरे विश्व में माल एवं सेवाकर (GST- गुड्स एंड सर्विसेस टैक्स) के तहत राष्ट्रीय स्तर पर अप्रत्यक्ष करों के सम्मिलन, एकीकरण, यौक्तीकरण एवं विवेकीकरण पर जोर बढ़ने लगा। अधिकांश वैश्विक संघीय देशों में राज्य आधारित वैट प्रणाली का स्थान संघीय स्तरीय वैट प्रणाली ने ले लिया था जिसमें उन देशों में कर दर कमने व कर अनुपालना बढ़ने से कर संग्रह में वृद्धि एवं वस्तु तथा सेवा के मूल्य में कमी से संबंधित देशों का व्यापार काफी बढ़ा और उसी अनुरूप उनकी समृद्धि भी बढ़ी। आज 160 से अधिक देशों में GST लागू है। फलतः भारत में, 1991 में लागू नयी आर्थिक नीति के फलस्वरूप अप्रत्यक्ष कर ढाँचा में बदलाव की मांग होने लगी। 2017 के पहले राज्यों के वाणिज्य-कर विभाग 8 प्रकार के करों का संचालन 8 अधिनियमों से करते थे। ये निम्नवत् थे।

1. केन्द्रीय बिक्री कर अधिनियम 1956
2. बिहार प्रवेश कर अधिनियम 1993
3. बिहार विलासिता कर अधिनियम 1988
4. बिहार मनोरंजन कर अधिनियम 1947
5. बिहार विद्युत कर अधिनियम 1948
6. बिहार मूल्यवर्द्धित कर अधिनियम 2005
7. बिहार पेशाकर अधिनियम 2011
8. बिहार विज्ञापन कर अधिनियम, 2007।

फलतः एक पदाधिकारी को विभिन्न अधिनियमों के तहत कर अनुपालना में एवं संबंधित व्यवसायियों को अनेक रिटर्न भरने पड़ते थे व अनुपालना संबंधी दिक्कतों का सामना करना था। इसके अलावा उपरोक्त सभी अधिनियमों में कर दर शास्ति, करयुक्त वस्तुओं की सूची आदि विभिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न व परस्पर प्रतियोगी थी। साथ ही अंतर-राज्यीय बिक्री पर कोई इनपुट टैक्स क्रेडिट नहीं मिलता था। साथ कर पर करारोपण प्रभाव (Cascading effect) भी था। फलतः क्रमशः अखिल भारतीय स्तर पर GST लागू करने हेतु समितियों, इम्पावर्ड ग्रुप आदि का गठन 21वीं सदी में हुआ। 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता वाली संघीय सरकार आने के बाद GST लागू करने का दबाव और भी बढ़ा तथा बड़े ही भव्य ढंग से संसद में 01 जुलाई 2017 से GST को संपूर्ण भारतीय क्षेत्र में 101वें संवैधानिक संशोधन के बाद पांच अधिनियमों को एक साथ लागू किया गया।

1. केन्द्रीय माल एवं सेवाकर अधिनियम 2017
2. राज्य माल एवं सेवाकर अधिनियम 2017
3. एकीकृत माल एवं सेवाकर अधिनियम 2017
4. संघ राज्य क्षेत्र माल एवं सेवाकर अधिनियम 2017
5. माल एवं सेवाकर(राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम 2017। राज्य माल एवं सेवाकर अधिनियम को सभी राज्य विधानमंडलों द्वारा पारित किया गया।

माल एवं सेवाकर अधिनियम की विशेषताएँ

बिहार माल एवं सेवाकर अधिनियम 2017 पूर्ववर्ती बिहार मूल्य वर्द्धित कर अधिनियम 2005 की भांति ही मूल्यवर्धन पर आधारित कर प्रणाली है जिसमें आपूर्ति के प्रत्येक मूल्यवर्धन बिंदु पर विहित कर दर से कर लगता है और उस बिंदु से पूर्व दिया हुआ कर हेतु इनपुट टैक्स क्रेडिट मिलता है।

इस तरह समस्त करापात (Incidence of tax) अंतिम उपभोक्ता पर होता है। इसके साथ ही यह गंतव्य आधारित उपभोग पर करारोपण प्रणाली (Consumption based destination taxation) है। जिसमें माल एवं सेवाकर के अंतर को वर्णित करते हुए एक राष्ट्र, एक बाजार एवं एक कर प्रणाली स्थापित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही ये दोहरी कर संरचना (केंद्र व राज्य) प्रणाली है जिसमें दोनों समान मात्रा में कर प्राप्त करते हैं। साथ ही करमुक्त वस्तुओं व सेवाओं एवं कर दर संपूर्ण भारत में एक समान है जिसमें परिवर्तन माल एवं सेवा कर कौंसिल (GST कौंसिल) ही कर सकती है, वह भी तीन चौथाई मतों से। पूर्वकालीन परचेज टैक्स के स्थान पर रिवर्स चार्ज मैकेनिज्म भी उन्नतरूपेण राजस्व बढ़ाने हेतु लाया गया है। साथ ही प्रत्येक स्तर पर कर प्रशासन अनुपालन भी पूर्णरूपेण कंप्यूटरीकृत कर इंटरनेट से जोड़ दिया गया है ताकि करदाताओं को कार्यालय का चक्कर न लगाना पड़े। कर प्रशासन की पारदर्शिता, यौक्तिकीकरण, विवेकीकरण, न्यायपूर्णता पहले से काफी बढ़ गई है तथा व्यवस्था यथासंभव पेपरलेस हो गई है।

पाँचों अधिनियम में केंद्रीय माल एवं सेवा कर अधिनियम 2017 एवं राज्य माल एवं सेवा कर अधिनियम 2017 पूर्णरूपेण एक समान है। प्रथम केंद्र द्वारा जबकि दूसरा संबंधित राज्यों द्वारा प्रशासित है। पाँचों अधिनियमों की संगत नियमावली भी है। केंद्र/राज्य माल सेवा कर अधिनियम में कुल 21 अध्याय एवं 174 धाराएँ हैं। प्रमुख अध्याय हैं : प्रशासन, कर का उदग्रहण एवं संग्रहण, इनपुट टैक्स क्रेडिट, आपूर्ति का समय और मूल्य, निबंधन, विवरणियां, कर भुगतान, रिफंड, कर निर्धारण, लेखा परीक्षा, निरीक्षण, तलाशी, अधिग्रहण व गिरफ्तारी, अग्रिम विनिर्णय, अपील व पुनरीक्षण, अपराध व शास्तियाँ आदि। इसी प्रकार संगत केंद्रीय/राज्य माल सेवा कर नियमावली 2017 में कुल 19 अध्याय एवं 162 नियम हैं। साथ ही जिन राज्यों को आनुपातिक रूपेण कम कर संग्रह होता है उन्हें क्षतिपूर्ति दिया जाता है। बिहार अभी तक क्षतिपूर्ति प्राप्त राज्य है। इसी वर्ष से अंकेक्षण का कार्य भी शुरू हुआ है।

GST का निष्पादन

विगत पाँच वर्षों में GST का मासिक संग्रह लगातार बढ़ा है और अब यह लगातार एक लाख करोड़ से आगे रहते हुए कोरोना के बावजूद वृद्धिमान है। कोरोना प्रभाव हटते ही यह शीघ्र ही 1.5 लाख करोड़ पहुँचने की संभावना है। परंतु हमारा कराधार अभी भी संकरा है और कर अपवंचना काफी अधिक है। कर संग्रह तथा GDP अनुपात गंभीर दौर से गुजर रहा है। वित्तीय वर्ष 2016-17 में यह 16.5% था जिसमें केंद्र का हिस्सा 11.03% तथा राज्य का 5.2% था वह घटकर कोरोना काल में 2020-21 में मात्र 9.9% (केंद्र व राज्य) हो गया है। जबकि यूरोप व अमेरिका सरीखे विकसित देशों में कर व GDP अनुपात 40% से ज्यादा है। इसे कम से कम 15% तो हर हाल में रहना ही चाहिए। साथ ही भारत का प्रत्यक्ष कर एवं अप्रत्यक्ष कर का अनुपात असंतुलित हो गया है। जहाँ पिछले 10 वर्षों में कर व GDP अनुपात 10% से नीचे (प्रथम बार) हुआ है वहीं 2020-21 में प्रत्यक्ष कर अनुपात सकल कर का 47% हो गया है जो 2017-18 में 52% था। यानि GST काल में अप्रत्यक्ष कर का अनुपात प्रत्यक्ष कर की तुलना में बढ़ रहा है। हम जानते हैं कि अप्रत्यक्ष कर प्रतिगामी (रेग्रेसिव) होते

हैं यानि गरीबों पर कर बोझ बढ़ रहा है, वहीं कॉर्पोरेट टैक्स 2017-18 के 32% की तुलना में सकल कर के 2020-21 में घटकर 24% हो गया है। जबकि यूरोप व अमेरिकी देशों में सकल कर में प्रत्यक्ष कर का योगदान 2/3 से ज्यादा होता है। घटते प्रत्यक्ष कर को GST संबल प्रदान कर रहा है।

जहाँ तक अपने राज्य बिहार की बात है तो उसका GST संग्रह लगातार बढ़ ही रहा है। 2020-21 में यहाँ सकल कर संग्रह लगभग 32000 करोड़ हुआ जो 22% वृद्धि दर्शाता है और इसमें 75% याने लगभग 24000 करोड़ GST संग्रह है।

बिहार का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) संवृद्धि दर लगातार दो अंको में बना हुआ है। पिछले पांच वर्षों में संवृद्धि दर में बिहार प्रथम या द्वितीय स्थान पर राज्यों के बीच रहा है। परंतु, इसमें और भी वृद्धि की संभावना है और हम लगातार प्रति व्यक्ति आय, मानव विकास सूचकांक, ट्रेड फंडली सूचकांक आदि में आगे बढ़े हैं, परंतु अभी भी हमारा प्रदर्शन निम्न है। इसी के साथ राज्य में GST कलेक्शन काफी बढ़ा है, मगर इसमें सुधार की काफी गुंजाईश है। हलांकि विगत वर्षों में मुख्यालय स्तर पर GSTN से प्राप्त आंकड़ों का अन्वेषण, विश्लेषण एवं संश्लेषण के द्वारा बड़े करदाताओं के कार्य संव्यवहार पर नजर रखते हुए अंचलों को विभिन्न टास्कों के पर्यवेक्षण द्वारा कर प्रशासन सजगता और कर अनुपालना बढ़ा है। करदाताओं द्वारा ससमय मासिक विवरणी दाखिला प्रतिशत 90% से अधिक हो गया है। परंतु, तदनुरूपी ढंग से SGST संग्रह (कैश) नहीं बढ़ा है। करदाताओं द्वारा कर उपेक्षा (Tax Avoidance) एवं कर अपवंचना (Tax Concealment) जारी है। कर उदग्रहण बढ़ाने हेतु निम्न सुझावों पर विचार किया जा सकता है।

1. अंचल स्थित पदाधिकारियों को संवीक्षा तथा कर निर्धारण हेतु खुली छूट नियमानुकूल रूपेण देते हुए उन्हें लगातार वरिष्ठ जानकार पदाधिकारियों के द्वारा सतत् प्रशिक्षित किया जाय एवं उदग्रहणीय माँग जेनरेशन (Viable Demand Generation) को प्रोत्साहित करते हुए अंचलवार एवं राज्यवार पदाधिकारी कार्य निष्पादन त्रैमासिक जारी किया जाय। इससे पदाधिकारियों के बीच स्वस्थ प्रो-रेवेन्यू कंपीटिशन विकसित होगा। साथ ही पदाधिकारियों की कर निर्धारण दक्षता बढ़ाने हेतु विभाग के वरिष्ठ ज्ञानी पदाधिकारियों द्वारा आवधिक रूपेण GST 3B, GST R1 वार्षिक विवरणी, ऑडिट रिपोर्ट, बैलेंस शीट आदि के गहन अन्वेषण GSTBO, GST Prime के गहन उपयोग द्वारा विसंगति अन्वेषण सामर्थ्य को बढ़ाने हेतु सतत् VC, प्रशिक्षण, कार्यशाला का आयोजन हो ताकि प्रत्येक अंचल में कम से कम एक पदाधिकारी तत्संबंधी गतिविधियों का ज्ञाता बने तथा अंचल को कर निर्धारण निष्पादन स्तर पर नेतृत्व दे सके। इससे संवीक्षा एवं कर निर्धारण गुणवत्ता उन्नयन राजस्व वृद्धि में सहायक होगा।
2. बिहार में अभी भी माल एवं सेवाकर का आधार सँकरा है। इस आधार को बढ़ाने हेतु वैट रिजीम की तरह करदाताओं का सर्वेक्षण लगातार होना जरूरी है, ताकि नये करदाता जुड़े और हमारा कराधार और कर संग्रहण बढ़े। बिहार में सेवा क्षेत्र से जुड़े व्यावसायिक कारोबारी अभी भी टैक्स नेट से बाहर हैं। ब्यूटी पार्लर, कोचिंग संस्थान, मल्टी स्पेशियलटी अस्पताल,

बीमा, बैंकिंग, नॉन बैंकिंग सर्विस सेक्टर से जुड़े कारोबारी अभी भी कम कर देते हैं और उनका कर अनुपालन बेहद खराब व उपेक्षा का शिकार है।

3. ईट भट्टा करदाता को वैट रिजीम की ही भांति एक मुश्त करयोजना में लाया जाना जरूरी है। वर्तमान समय में औसत ईट निर्माता वैट रिजीम की तुलना में आधा कर भी नहीं देता है। साथ छोटे दुकानदारों को पूर्वकालीन एकमुश्त करयोजना से जोड़ा जाना चाहिए। छोटे सेवा प्रदाताओं को भी इसमें सम्मिलित करने से कराधार बढ़ेगा।
4. इनफोर्समेंट (प्रवर्तन) स्तर पर सतत निरीक्षण एवं वाहन चेकिंग चलाना चाहिए तथा प्रत्येक डिवीजन हेतु निरीक्षण और वाहन चेकिंग का टारगेट निर्धारित कर राज्य स्तर पर प्रभावी समन्वयन राजस्व वर्धन हेतु किया जाना चाहिए। संपूर्ण राज्य में निश्चित तिथि व समय पर वाहन निरीक्षण एकमेव रूप में फलप्रद नहीं है। उस निश्चित समय में वाहन का परिचालन काफी धीमा हो जाता है तथा कर अपवंचना वाले वाहन ढाबा पर रूके रहते हैं।
5. बिहार के GST करदाताओं का अंकेक्षण शुरू होने ही वाला है। VAT ऑडिट की भांति ही निश्चित मापदंडों पर करदाताओं का चयन कर लिया गया है। इसी रूपेण CAG ऑडिट का भी उपयोग कर अनुशासन, कर अनुपालना एवं राजस्व वृद्धि हेतु किया जा सकता है।
6. साथ ही GST कौंसिल तथा CBIC को भी कर दर परिवर्तन तथा नित्य नये नियम बनाने से परहेज करना चाहिए। सतत परिवर्तन से कर अनुपालना दर गिरता है तथा गलतियाँ भी ज्यादा होती है।

लेखक

विनय कुमार ठाकुर

राज्य-कर सहायक आयुक्त

(तृतीय सीमित)

अन्वेषण ब्यूरो,

भागलपुर प्रमण्डल, भागलपुर



BEST WISHES



ANMOL INDUSTRIES LTD.

HAJIPUR



Work Stress: The Silent Killer...and the way out...

Work Culture in Government Sector is going through tremendous renovation owing to various issues ranging from delay in the delivery of service to failed mechanisms to address the increasing public grievances. As a result: work culture in all the government offices has been going through a major overhaul as part of efforts to ensure improved government functioning.



Touted as a '*Silent Killer*' stress has been reportedly termed as the root cause of depression and workplace anxiety in India....

So, what has led to this work place distress: newer challenges, entrenchment of apathetic work culture and collective post covid trauma is redefining the way we work/live/function and inadvertently impacts employee's emotional wellbeing.

With social communication tools like WhatsApp and Facebook gauging more prominence in day-to-day life- it is blurring the line between office hours and personal time... For many, our work life doesn't simply end after we leave the office or close our laptops; we take it home with us, in some way. One of the more obvious roadblocks caused by our overstuffed work-life relationships is losing access to free time.

In order to keep pace with fast paced work culture- department needs to equip its employees with infrastructural support. Inadequate working environment, lack of proper resources, lack of equipment restricts employee's ability to operate at optimum level. It becomes an organizations responsibility to provide necessary tools/ resources to its workforce in order to complete the necessary tasks that ultimately leads to achievement of organizational goals.

Performance driven work approach with impending timelines puts a lot of work pressure on the employees. When work pressure gets ceaseless, it tends to be overpowering and unsafe to both physical and emotional health. The perpetual "hustle" that we as employees take pride in is, quite literally, destroying our bodies and minds. Work-related stress is often linked immune deficiency disorders, musculoskeletal disorders, problem of diabetes and blood pressure, chronic back pain, gastrointestinal disorders and mental issues like anxiety, burnout and depression.

Work-related stress can be a vicious cycle. Job stress makes employees more prone to error, poor work performance, mental health issues, burnout, and conflict in the workplace. When employees experience anxiety and depression, it becomes even more challenging to function normally and requires additional effort to be productive at work.

Hence excessive levels of stress at work can lead to deeper, long-term mental health issues if it isn't dealt with.

In order to combat these challenges- We need to look at a more holistic approach towards addressing work stress. 1st step would be to consciously look for plausible signs/ symptoms of work stress like fatigue/ Irritability/ diminishing creativity/ disinterest and isolation. Once that is done- It's important to promote conducive/ transparent work culture which enables effective communication in the department. Healthy work culture promotes transparency, innovation and discipline in an organisation. Also need to set more realistic/ short term macro level goals so that deadlines can be achieved in an organic/ healthy manner.

Since employees spend most of their waking hours at their work place- a sense of fun helps people to have a more positive mind-set, enjoy higher levels of wellbeing and better mental health. It all begins with fostering a positive environment, one where people feel comfortable enough to laugh and be a bit playful. Encouraging teams to share breaks and meals together is a way to build rapport with colleagues and strengthen relationships. Spending time with colleagues, taking a break for 30- 40 mins, leaving work aside, chit-chatting about things beyond work will help lighten up the mood of office and helps develop trust and bonding and a more empathetic attitude towards each other. There is no harm in spending some time with oneself, meditating, switching off mobile for some time even during office hours. It will help to relax and counter stress which will ultimately lead to higher productivity.

Looking at the larger context- work stress remains to be an inevitable component of an officer's entire career journey. Hence-taking it in your stride- accepting some amount of criticism is a part of the journey- If during the entire work tenure- even if the officer has to face 1-2 show cause notices/ face reprimand from your senior's end – it is important to take it in your stride and not take it personally. Because once the officer retires- he will not only be remembered for the work skills/ professional success- he will most likely be remembered for empathetic attitude, humanitarian approach and how many lives he has touched at his workplace. Ultimately a relaxed- stress free officer is most likely to propagate an inspiring, happy and productive work environment.

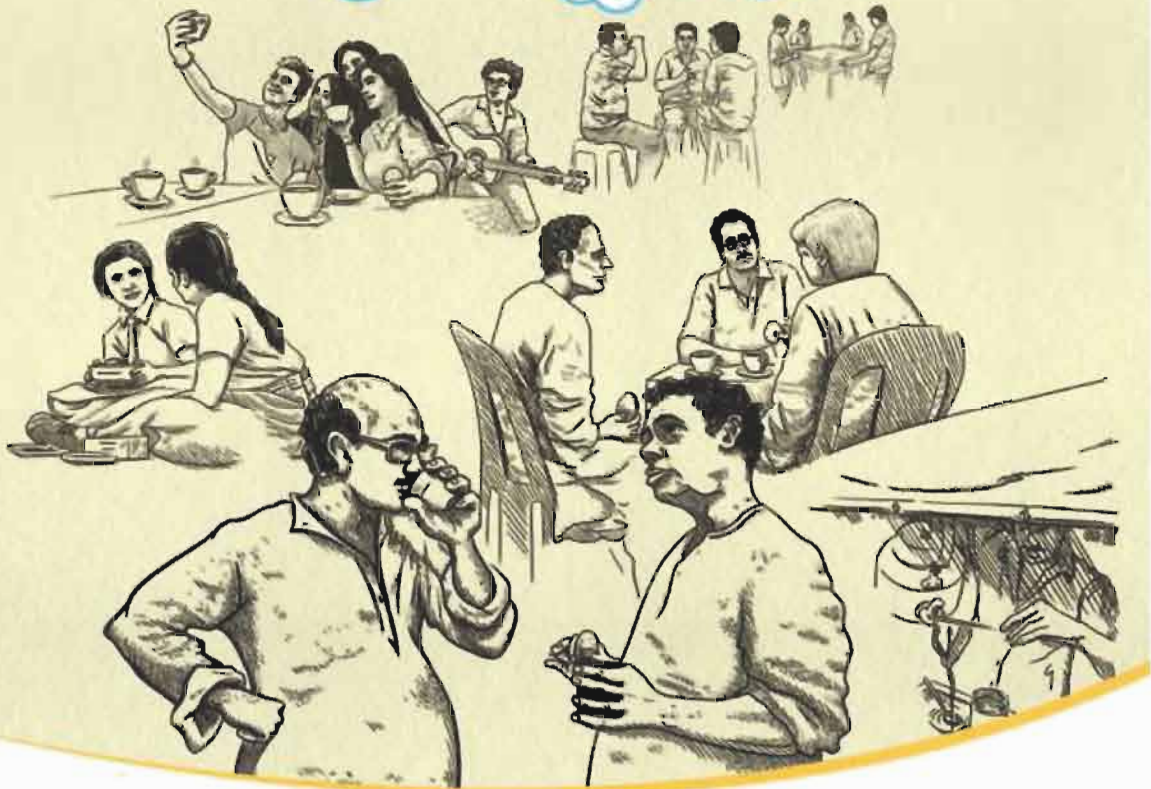
Vishal Kumar

ACST – Central Division Audit

53rd -55th Batch



*Zindagi ke har rang,
Anmol Biscuits
ke sang!*



Har Pal Anmol. Har Ghar Anmol



For any queries, please write to us at info@anmolindustries.com or call us at 1800 1037 211
www.anmolindustries.com | Follow us on:    

© Anmol Industries Ltd. 2015. All rights reserved.



लाखों जलाते हैं लोग

ऐसे किरदार कैसे निभाते हैं लोग,
बस्तियाँ रोज लाखों जलाते हैं लोग।
अपना आशियाना बनाने के सबब,
टहनियाँ पेड़ों की ही गिराते हैं लोग।
सिसकियाँ यतीमों की सुने ना कोई,
घुँघरूओं पर हजारों लुटाते हैं लोग।
फरिश्तों पर यकीं अब तो होता नही,
लाभों के लिए झंडे उठाते हैं लोग।
कुदरत ने बख्शी हैं लाखों इनायत,
मुहब्बत पर खंजर चलाते हैं लोग।
'कश्यप' ने चाही है सब की भलाई,
तोहमत पर तोहमत लगाते हैं लोग।



कुशेश्वर 'कश्यप'

मैथिली रचना जिनगीक तवा पर

जिनगीक तवा पर जीवन कनसार भेलै
कनिके झँपलियै तऽ पूरा देखार भेलै
छप्पर केर लत्ती केर हरल सब हरियरी
बरखाक चोट पड़ैत बत्ती देखार भेलै
कोकाक पात जेना हिलरै हिलकोर पर
मँहगीक चोट पड़ैत गाड़ी उनार भेलै
सुन्नर सोहनगर सन सपना सजौला सँ
कर्म बिनु कियो नहि कत्तहु सरदार भेलै
मनक मज्जर जे गरसि लेलक मधुआ
हलुके पवन चलल टिकुला बेकार भेलै

न जाने क्या होगा?

किसने ऐसा गढ़ा मजमून जमीं पर उग
आयें हैं खून न जाने क्या होगा?
यहाँ किसने धरे हैं पाँव कि सारे गहरे
हुए हैं घाव न जाने क्या होगा?
कली—कली सजा है बाग हर एक डाली
बसा है नाग न जाने क्या होगा?
अभी ऐसा चढ़ी है धूप छिन्न—भिन्न हो
गये हैं रूप न जाने क्या होगा?
घर—घर रखे गये संदूक जिसमें बारूद
ओ बंदूक न जाने क्या होगा?
वैरी बन गये सूरज चाँद मानवता घुसी
अपने माँद न जाने क्या होगा?

भोरक बेला

भोरमे नहि आबैछ आब
परातीक अवाज
भोरमें नहि खुजैछ महिस
पर चरै लेल पसर
भोरमें नहि सुनाई पड़ैछ आब
ढेकीक धम-धम
चार बजे भोरहि जे
चुड़ा कुटबाक सोन्हगर गंध
पैसैत छल नाकमे
से आब लागैए जेना
कतौ बिला गेल

आब नहि क्यो पैसैत अछि
चारि बजे भोरमें पोखरिमे
नहयबाक लेल
माघ मास गरदनि धरि पानिमें पैसि
आब नहि क्यो करइ अछि
गीत गेबाक प्रयास

धर्मस्थानक पीपर गाछक नीचा
आब नहि बनाओल जाइछ अखड़ाहा
आब नहि जाइए क्यो खेलबाक लेल अखड़ाहा
पर दंड बैसक आ पहलवानी
आब नहि करैए क्यो हमरा गाममे

आब गाममे
क्यो विद्यार्थी नहि लेसैत अछि
डिबिया लालटेम पढबाक लेल
आब बाबुजीयो नहि कहय छथि—
बौआ उठह पढि लह कने काल
भोरक पढ़ाई बेसी दिन धरि
रहै छै यादि

आब भोरमें
नहि पनहाइ छै महिसो
आब ओकरो पड़रू
नहि हुकरै छै सबेरा
हुकरिये के की करत बेचारा
मालिको उठै छै आठ बजे

सबय बदलि रहलैए
युग बदलि रहलैए
रातुक काज दिन
आ दिनक काज रातिमे ससरि रहलैए
गोधूलि तलमला रहलैए
प्रत्यूष शरमा रहलैए

कुशेश्वर 'कश्यप'

BEST WISHES



**SAKSHI SECURITY & INFRASTRUCTURE
SERVICE PVT. LTD.
GAYA**

BEST WISHES



**MAHABIR & SONS PARTNER
BHAGALPUR**

जल-जीवन-हरियाली

कहते हैं सही शुरुआत ही सही अंत तक लाती है...
अब तो जाग जा मेरे पुत्र, प्रकृति बिलख-बिलख समझाती है।

तू तो मेरा सबसे प्यारा राज दुलारा मानव था,
बाकी को तो थोड़ा देकर तुझपर कृपा उड़ेला सारा था।



मैं तो माँ हूँ—मुझसे तेरा, तेरी जननी का जन्म हुआ
फिर धुंआ धुंआ कर मुझको, कैसा तेरा दंभ सधा ?
तू ही सबसे आगे है तो आगे की सुध ले ले अब,
बस कर झुलसाना मुझको ध्वंस न हो जाए हम सब।

ताप मेरा न बढ़ा पुत्र! तेरी माता अब ज्वर में है।
हरियाली से भर दे आंचल, मेरी करुणा स्वर में है।

बुद्धत्व का बीज भी तुझे दे दिया,
फिर तेरा मन क्यों छोटा है ?
व्यथित हृदय में टीस उठ रही,
क्या मेरा सिक्का खोटा है ?

धुम्र विशालाक्ष हैं मेरे,
अश्रु बनकर अब पिघल रहे...
तेरा आंगन जूब रहा है पर
मेरे ही उपवन उजड़ रहें।
तू मानव आएगा जाएगा,
पर रूप मेरा ही बद लेगा
क्या तूअपने आगे पुश्टों को
विष का प्याला ही दे देगा ?

चीख रही है सारी सृष्टि!
मानव रख ले दूर की दृष्टि!
जल ही जीवन का आधार,
सूख रहा सारा संसार।

तेरे भौतिकता में उलझ रही जीवन की धार,
और तेरे कर्मों को धोकर मैं प्रकृति अब तार-तार।

विषयों के युद्ध तेरे भीतर है,
पर मैंने इसके सब वार सहे
अब तो जाग जा पुत्र!
मौन मुझे अभिव्यक्त करे...
तरु तरंग अमृत का निःस्वार्थ सदा ही घोल रहा
चुप चाप देख रहा निर्ममता,

असहाय नहीं कुछ बोल रहा...
पर सोचो मानव!
जब सबसे ज्यादा तुझे मिला तो खोना भी तुझको ही होगा।
बाकी तो फिर जुड़ जाएगा,
पर तेरा शीर्ष न वो होगा।

प्रकृति की पुकार पुनः एक बार,
आज नया फिर अवसर, लाना है बहार!
सौर्य ऊर्जा का करें उपयोग,
ऊर्जा बजत में हो हमारी सहभागी,
अपने बागों के बन जाएं माली
जल का संरक्षण करें,
जल—जीवन—हरियाली!
तभी फैलेगी खुशहाली।

निहारिका छवि
राज्य कर सहायक आयुक्त

BEST WISHES



ISHWAR RAJ BEVERAJ PVT. LTD.

BEST WISHES



BALMUKUND CONCAST PVT. LTD.

PATNA

Impact of Armed Conflicts on Children: A Case Study of Ukraine

Background

Recently I came across a Press release of UNSC related to 9032ND meeting of the Security Council. The meeting was conducted to discuss the issue of child protection and child rights in the aftermath of war in Ukraine. As per the release, Mr. Omar Abdi, Deputy Executive Director of UNICEF briefed the UNSC council and said while updating the representatives of the nation states "The war in Ukraine, like all wars, is a child protection and child right crisis." The press release spotlighted the ground reality of the suffering of the children who are too little to even understand what the war means and how it escalates. It was devastating to read about the tyranny of the children of Ukraine and it left me in tears. In this background I decided to read more about the impact of armed conflicts on children worldwide in general and impact of War on Ukrainian children in particular. This piece is an outcome of my brief analysis of the subject.



Difference between Armed conflicts and War

Under international law armed conflict and war are defined separately. As per the definition, any organized dispute that involves force, violence and use of weapons, whether beyond national borders or within them, and whether involving nongovernment entities or state actors is known as armed conflicts. Therefore, armed conflict is a broader term.

War involves violence or contention between armed forces of two or more than two states. Conflicts within the national borders cannot be termed as a war.

Impact of Armed Conflicts on Children

As per a report published by the American Academy of Pediatrics, more than 1 out of every 10 children worldwide are affected by armed conflicts and wars. By and large, these effects are of two types:-

- *Direct effects* which include displacement, psychological and physical trauma and even death.
- The *indirect effects* cover a plethora of consequences such as separation from family, unsafe living conditions, displacement related health risks, mental health and destruction of health, education, death of parents and caregivers and many more.

Primarily 6 categories of human rights violation against children have been identified by the United Nations. These are considered as *grave violations*. They include four direct actions and two indirect actions of violence against children mentioned below:

- Maiming and Killing of children.
- Abduction.

- Recruitment of children as combat soldiers and
- Sexual violence.
- Attacks against hospitals and schools and
- Denial of humanitarian access.

Last two among the above fall under the category of Indirect action. During armed conflict all the aforementioned violations take place at large scale.

After World War-II, the issue of human right violation against children drew attention of the statesmen and international organizations due to which several treaties and legal declarations to protect the children during armed conflicts came into force. The most significant among them are:

1. The UN Declaration of the Rights of the Child (1959).
2. UN protocol relating to Status of the Refugees (1967).
3. Protocols of Geneva Conventions.
4. UNCRC: The legally binding treaty in which 40 substantive rights of children are established (1989).
5. Optional Protocol to the UNCRC on the involvement of children in Armed Conflict (2000).

Nevertheless, the analysis of the data suggests that they failed to meet their objective to a large extent as armed conflicts continue to cause suffering, displacement and death of children on a massive scale. According to the data released by UNICEF and Amnesty International documents, around 246 million children are forced to live in conflict affected areas. More than 28 million children are currently living as stateless people, asylum seekers, internally displaced people or refugees. That means 1 out of 200 children across the globe are displaced. By the end of 2016, 65 million people around the world remained displaced by armed conflicts. Another report, "Childhood Under Threat" indicates that since 1990 to 2015 more than 90% conflict related deaths were civilians, many of whom were children. These studies are adequate to establish the fact that the circumstances created by wars and armed conflicts significantly increase child mortality and morbidity.

Impact of the ongoing War on the Children of Ukraine

Outbreak of war between Ukraine and Russia is one of the biggest humanitarian crises faced by Europe since the World War II. The tension between the two countries escalated with the successful Russian endeavor of annexation of Crimea in year 2014 and the following events brought the two parties in front of each other. The ongoing war between the countries has shaken the humanity once again and as said Mr. Abdi, children have suffered the most this time as well.

The trend of targeting the civilians in order to avert defeat and to annex the enemy territory is growing with every armed conflict and Ukraine war is no exception to that. In past 115 days of Ukraine-Russia war, nearly 243 children have been killed and thousands have been injured. The actual figure is likely to be considerably high. Most of the children were victim of use of explosive weapons and land-mines in densely populated areas by the Russian forces. Many more children have

been displaced and face grave violation of their rights. The latest figures suggest that more than 14 million Ukrainians have been forced to flee, of whom 8 million are internally displaced. The data related to displacement suggests that almost two out of three children in Ukraine have been displaced by fighting. Displaced families are unable to meet the basic needs of their children as they are out of work. It makes the life of children even worse.

In recent years the rules of war have also been changed and Geneva Conventions are being violated. Schools, traditionally considered as safe places are targeted. The armed forces many a times use the educational facilities as combat base and to recruit children. Similarly, health facilities both government and nongovernment, have become a prime target of the combating forces. In Ukraine a huge number of civil infrastructures such as hospitals and schools including the 'safe schools' (supported by UNICEF) have been destroyed. As per the data nearly 130 educational facilities have been destroyed and more than 1600 have been damaged till date. Children largely depend upon these infrastructures for their life and growth and it cannot be denied that armed conflicts are directly related to public health and development of children.

Potential Relief Measures:

As per the United Nations agency nearly 5.2 million Ukrainian children are in dire need of humanitarian assistance. I strongly feel that following measures could help lessen the suffering of these children:

1. All parties must adhere to the International laws and civilians should not be targeted.
2. Any hurdle in the path of continuous delivery of life saving assistance across Ukraine must be removed.
3. Safe passage should be provided to the civilians.
4. Full humanitarian access should be allowed in the war zone.
5. Quick child protection services should be provided.
6. Proper medical assistance should be arranged for the sufferers.
7. Critical safe water access should be ensured.
8. Efforts should be made to provide psychosocial support to the effected children.
9. Remote learning should be used as a temporary substitute of learning.
10. Anti-trafficking training for border-guards should be provided for a huge child population that has taken refuge in different countries due to displacement of their families.
11. The civilians and government of the countries where Ukrainians have taken refuge should put in efforts to integrate refugee children.

Conclusion:

In general people believe that states go to war to ensure a better future for their civilian and to protect their national interests. Nevertheless, the analysis of the impact of war on the civilians suggest otherwise. In his book "*Why nations go to War*", well known professor of Global Diplomacy Mr. John G. Stoessinger has critically explained war and emphasized that wars are the outcomes of the

decisions of the statesmen. These decisions are not necessarily based on facts but on misperceptions and fear. Whatever may be the reason, children pay the heaviest price of wars and armed conflicts. Children are the future of humanity and international community should come forward to explore the ways to bring both Ukraine and Russia together for dialogue. More than anything what the children of Ukraine need is PEACE which is possible only through dialogue and democratic means.

Binita Batsa,

Assistant Commissioner of State Tax (56th-59th batch)

Patna City West Circle, Patna.



BEST WISHES



RAKESH MASALA

HAJIPUR

BEST WISHES



MEENAKSHI SALES

BHAGALPUR

पुरुषार्थ और इसकी प्रसंगिकता

शुद्ध पुरुषार्थ है "आत्मदर्शन"। गागीने याज्ञवल्क्य से कहा —

नपुंसकः पुमान् ज्ञेयोयोन वेत्तिहृदि स्थितम् ।

पुरुषंस्व प्रकाशं तस्मा नन्दात्मा नमव्ययम् ॥

(आत्म—पुराण)



सत्येन्द्र कुमार सिंह
राज्य—कर सहायक आयुक्त

वह पुरुष होते भी नपुंसक है, जो हृदयस्थ आत्मा को नहीं पहचानता। वह आत्मा ही पुरुष स्वरूप, स्वयं प्रकाश, उत्तम, आनन्दयुक्त और अव्यक्त है। उसे पाने का प्रयास ही पौरुष है। बृहदारण्य को पषिद् में याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को यही समझाया कि धन से सम्पन्न पृथ्वी के स्वामित्व से भी अमृतत्व/की प्राप्ति नहीं हो सकती। उसका उपाय आत्मिक सम्पत्ति है।

भारतीय संस्कृति एवं दर्शन परम्परा में पुरुषार्थ की अवधारणा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, भारतीय मनीषियों ने इस का निर्माण इसलिए किया ताकि भौतिकता, आध्यात्मिकता और व्यवहारिकता में समन्वय, सामंजस्य की स्थापना की जासके। पुरुषार्थ मानवीय आवश्यकताओं के साथ मानवीय जीवन के लक्ष्य को भी स्पष्ट करते हैं। यह मानव के प्रयासों की ओसंकेत करते हैं और ये चार हैं— धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

1. धर्म : धृ धातु से निष्पन्न धर्म धारण करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है जिसेस वर्मान्य रूप में कर्त्तव्य निर्धारण के अर्थ में स्वीकारा गया है। धर्म वे नियम हैं जिसपर चलकर न केवल व्यक्ति और समाज को उन्नति, कल्याण व यश मिलता है, अपितु समाज में शांति, संतुलन व सामंजस्य भी स्थापित होता है।

मनुस्मृति के अनुसार 'वेदो धर्ममूलम्'।

महर्षि कणाद धर्म को इहलौकिक व पारलौकिक सुखों का आधार मानते हैं।

धर्म द्विविध हैं—

समान्य धर्म : सभी पर समान रूप से लागू होते हैं। यथा: दया, प्रेम, अहिंसा इत्यादि विशेष धर्म या आश्रम धर्म या वर्ण धर्म : इनका संबंध विभिन्न वर्णों/आश्रमों से है।

2. अर्थ : यह द्वितीय पुरुषार्थ है जो धन संपत्ति और सांसारिक विषयों को प्राप्त करने का साधन ही नहीं, अपितु अन्य पुरुषार्थों की पूर्ति तथा व्यक्ति के विकास का माध्यम भी है।

महाभारत में बखान किया गया है कि— सर्वम् काँचनम् आश्रयन्ते अर्थात् सब कुछ धनादि पर आश्रित है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में अर्थ को सामाजिक विकास का आधार माना है। अर्थ के मूल में भी धर्म अनिवार्य है क्योंकि धर्मानुकूल अथोपर्जन से ही समाज का विकास होता है, अन्यथा व्यक्ति का नैतिक पतन व समाज का नाश होता है।

3. काम : काम का अर्थ है— सुख भोग और सांसारिक विषयों को भोगने की इच्छा पूर्ति। संकुचित अर्थ में काम— यौनेच्छाओं की तृप्ति और व्यापक अर्थ में काम— ऐंद्रिक व मानसिक सुख।

गृहस्थ आश्रम का आधार है।

चार्वाक ने परम् पुरुषार्थ माना है।

काम के मूल में भी धर्म अपरिहार्य है क्यों कि अति सर्वत्र वर्जयते।

प्लेटो ने भी वासनात्मक प्रभाग को बौद्धिक प्रभाग के नियंत्रण में माना है।

अतः धर्मानुकूल काम सेवन से ही व्यक्तित्व का विकास होता है। उपर्युक्त तीनों भौतिक सुखों के साधन है, अतः इन्हें चरम लक्ष्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

4. मोक्ष/निःश्रेयस/अपवर्ग : मुख्य धातु से निष्पन्नमोक्ष छुटकारा पाने के चक्र से मुक्ति प्राप्त करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। दुःखों की आत्यंतिक निवृत्ति तथा सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर आत्म स्वरूप में स्थित होना ही मोक्ष है। सांख्यानुसार मोक्ष अभावावस्था है, वही शंकरानुसारमोक्ष आनंदावस्था है।

मोक्ष का संबंध ब्रह्मज्ञान, तत्त्वज्ञान व आत्मनुभूति से है। जिस प्रकार सारी नदियाँ सागर में विलीन हो जाती हैं, उसी तरह त्रिवर्ग का महत्त्व भी मोक्ष के अन्तर्गत ही स्वीकारा गया है। प्रत्येक दर्शन में मोक्ष को भिन्न-भिन्न रूपों में प्रस्तुत किया गया है।

यथा—चार्वक = मरणम एवं अपवर्गम

जैन = त्रिरत्न

बौद्ध = अष्टांगिक मार्ग

संख्या = त्रिविध दुःखों से मुक्ति ही मोक्ष है

यही परम पुरुषार्थ है क्योंकि इसे प्राप्त करने के बाद व्यक्ति लौकिक जगत् से मुक्त हो ब्रह्माण्ड का अधिकारी बन जाता है और ब्रह्मा से एकाकार हो जाता है।

महत्त्व : पुरुषार्थ चतुष्टय मनुष्य को संस्कारवान बनाते हैं।

यह आध्यात्मिक व नैतिक उन्नति का आधार है।

नितिशतक के अनुसार :- पुरुषार्थ रहित मनुष्य पृथ्वी पर बोक्ष से समान है। पुरुषार्थरहित मनुष्य बकरी के गले में लटके हुए व्यर्थ स्तन के समान है।

पुरुषार्थ हमारी आश्रम व्यवस्था के प्रमुख नैतिक आधार है क्योंकि ये मनुष्य को व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक, भौतिक एवं व्यवहारिक जीवन जीने की कला सिखाते हैं। यदि मानव जीवन में इन सभी को अपनाया जाए तो मानवीय जीवन नैतिक और खुशहाली से परिपूर्ण होगा। इसी तरह आश्रम में पुरुषार्थों के पालन की परिकल्पना कर गई है। आश्रम चार है —

1. ब्रह्मचर्य आश्रम— इस का पुरुषार्थ धर्म है, क्योंकि इसमें गर्भ के माध्यम से कामनाओं, वासनाओं, अच्छाओं इत्यादि पर नियंत्रण रखते हुए गुरुकुल में रह कर विद्याध्ययन किया जाता है।

2. गृहस्थ आश्रम— इस से संबंधित पुरुषार्थ अर्थ व काम है, क्यों कि उचित साधनों से अपनी इच्छाओं, की वृत्ति करना और स्मृष्टि विकास, निर्माण व परिवार नाम को संस्था को चलाना इस आश्रम का विधान है।
3. वानप्रस्थ आश्रम— इस आश्रम का पुरुषार्थ धर्म है। क्योंकि इस आश्रम में समाज सेवा, परमार्थ, उपासन, आत्मचिन्तन इत्यादि में लीन होकर संन्यास आश्रम के लिए तैयार करना ही इस आश्रम का विधान है।
4. संन्यासआश्रम— इस का पुरुषार्थ मोक्ष है, क्योंकि मनुष्य संसारिक सुखों का भोग कर, सामाजिक, दायित्वों का निर्वहन कर मोक्ष का प्रयत्न करता है।



गज़ल



जागती आँखों में कुछ सपने लिए आ जाइए
हम जलाएंगे उम्मीदों के दिये, आ जाइए।
सीख लीजे मुश्किलों में खिलखिलाने का
हुनर लब पे ग़म की दास्तां मत लाइए, आ
जाइए।

गड़ियों में ताश की हर दर्दो—ग़म को फेंटकर ढूँढ
लेंगे सर्किलों के जाविये, आ जाइए।

मॉनसूनी इश्क के बादल लगे हैं झूमने ताल पर हर
बूँद की लहराइये, आ जाइए।

यार बदले आपने, हमने भी बदली कार थी इस
पहेली को कभी सुलझाइए, आ जाइए।

दास्ताँ लंबी है, पन्ने कम हैं, उसपर शर्त ये छोड़ने
दोनों तरफ हैं हाशिए, आ जाइए।

आपको दूँ मशविरा, ये हक नहीं मुझको मगर
कत्ल कर रिश्तों का मत इतराइये, आ जाइए।

अब मुकम्मल हो ही जाएगी अधूरी ये ग़ज़ल मिल
गए है ख़ूबसूरत काफ़िए, आ जाइए।

पत्थरों पर खिल उठेंगे 'प्रेम' के कितने 'सुमन'
बस ज़रा 'परिमल' की ग़ज़लें गाइए, आ जाइए।

समीर परिमल

राज्य कर सहायक आयुक्त (56—59 बैच)

पटना दक्षिणी अंचल, पटना

BEST WISHES



SHREE KRISHNA DISTRIBUTORS

BHAGALPUR

BEST WISHES



NARSINH PROJECTS PVT. LTD.

HAJIPUR

सत्य

एक सत्य
जो स्थापित है, अटल है, निश्चित है
उस पर कोई प्रश्नचिन्ह न लगा है न लगेगा।
एक और सत्य
उतना ही अडिग, अटल, और थिर है
यहाँ प्रश्नचिन्ह हर बार लगा है लगता रहा है
पहला सत्य तुम्हारा है,
दूसरा मेरा।



देवा श्री
राज्य-कर सहायक आयुक्त

माँ



एक बच्ची रो रही है,
पास ही माँ ईंटें ढो रही है।
काया से भभकता पसीना
धूल से चिपके बालों को नोचती
चिप्पियों में साड़ी की लिपटी है किसी तरह
गंध भरे अंग झाँक जाते हैं
बेखबर मगर ईंटें ढो रही है
प्यासी नंगी आँखों के बीच
अधनंगी ईंटें ढो रही है
बच्ची रो बहुत रही है
दौड़कर सीने से लगाया
अमृत पिलाया फटे आंचल में
जो अभी-अभी किस्सो में बँट रही थी।

मिट्टी का दिया



मिट्टी का दिया रात को दरवाजे पर रख आना
अंधेरी गली से जब चाँद अकेला गुजरेगा तो
उसे रास्ता दिखायगा।
बाती उसकी खुद को जलाएगी, लौ से मगर
रौशनी आएगी।
भटकता चाँद जब इधर से निकलेगा, लौ की
हर बूँद खुद में भर लेगा।
पल दो पल सिसकती लौ को आँखें भर भर
देखेगा, फिर दूर बहुत दूर आसमान में हीरे
सा चमक जाएगा।
गुमान से भरी उसकी चाँदनी काले पड़ गए
दिये पर हँसेगी।
दुनिया चाँदनी की दीवानी होकर कविता
लिखेगी और दिये को सुबह-सुबह झाड़ू से
किनारा कर दिया जाएगा।

“कवि हूँ मैं”

हँस पड़ती हूँ जब कहते है सब
“कवि हूँ मैं”
जर जोर की नहीं दबी हँसी
लिखा भी तो है बहुत मैंने
कभी किसी की चीख कभी आहें
कभी भूख से बेकल बचपन
दर बदर होती जिंदगी और
कभी-कभी तो बेवजह भी।
अच्छा है लोग समझ पाते नहीं
कि कविता तो एक भूलावा है
गोल गोल बातें करती है
असल बात तो सीधी-सपाट
नंगी रास्तों पर पड़ी है
लोग उसे देखते भी नहीं
टकरा गए तो पैर झटक देते है
रास्ते की इन्हीं आवारा बातों को
मैं अपनी जेब में भरती जाती हूँ
दुलार पुचकार के उन्हें कुरेदती हूँ
स्याहीं में उनकी आहें भर भर
पत्रे पर सब घाव उघाड़ देती हूँ
भावों की चाशनी में डुबो कर
अच्छी बड़ी अच्छी कविता बनाती हूँ
लोग पढ़ते है
भाव विभोर हो उठते हैं
जो कविता उन्हें ज्यादा रूलाती है
लात मारी हुई उनकी ही बात होती है।
काम दोनो का बनता है
दो आँसू बहा लोग इंसान बन जाते है और
मैं एक महान कवि
पर सोचती हूँ इन सब के बीच
जख्मी हुई वो बात

वहीं की वहीं वैसी की वैसी
पड़ी रहती है
पहले सड़कों पर घिसटती थी
अब मेरे पन्नों पर
औंधे मुँह चिपटी पड़ी है।

नदी की धार



हम नदी की धार बन
बह तो चले, चल तो पड़े
नए जोश से, उत्साह से, उन्माद से, अह्लाद से
नए रास्ते को खोजते, कुछ जोड़ते, कुछ छोड़ते
पर है यही काफ़ी नहीं की धार में बस वेग हो,
अतिरेक हो
चाहिये गहराई भी, फैलाव भी, ठहराव भी
धारा की हर एक बूंद को सागर तभी मिल पाएगा
चलना कहाँ, मुड़ना कहाँ, थमना कहाँ जब आयगा।

BEST WISHES



**SINGHAL AGENCY
KATIHAR**

BEST WISHES



**UTKARSH AUTO
KATIHAR**



निकल गयी हूँ घर से पाने, एक मजिल जो है दूर सही
राह का कुछ अनुमान तो है, पर देखा परखा कभी नहीं
उन काली सूनी रातों में, जब कभी कदम डिग जाता है
ना जाने कौन तब कानों में, बात यही दोहराता है।

अधरे की औकात ही क्या,
एक दीप राह दिखलाता है
गर कोई रुकावट आती है,
पग चार कदम बढ़ जाता है।

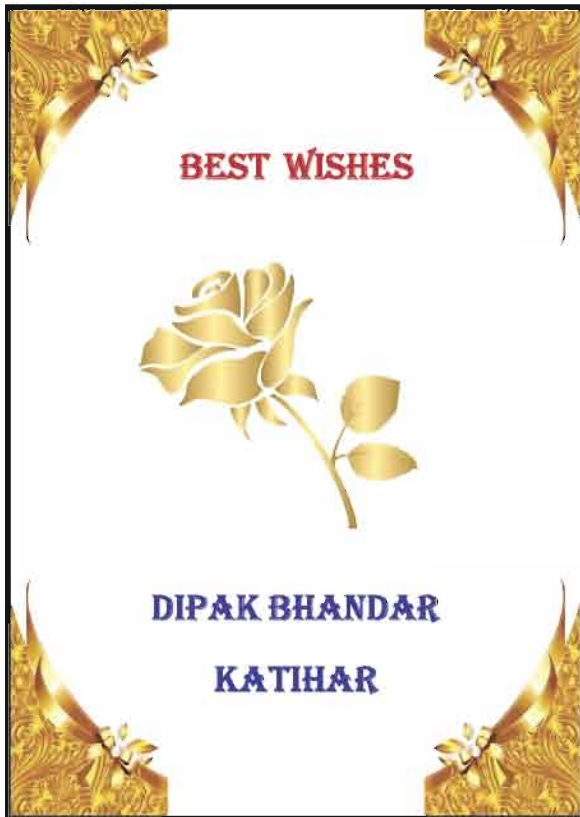
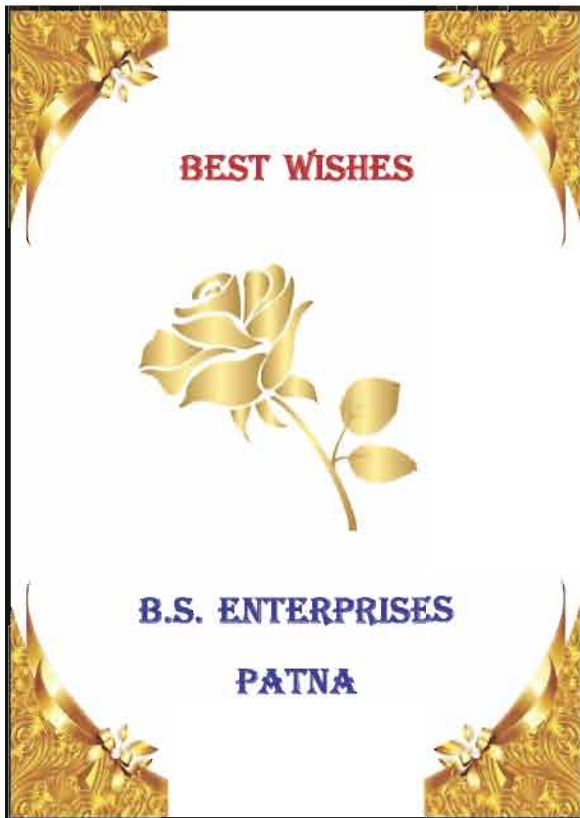
ऊँचा नीचा पथ भी है और, तीव्र मोड़ सी कठिनाई है
पर कसर न कोई छूटेगी, खुद से ये शर्त लगाई है
किन्तु दोराहे पर आकर मन, थोड़ा विचलित हो जाता है
तब गूला बिसरा चह किरसा, ये ढाँढस देकर जाता है
हो भँवर नीच मझपार तो क्या,

एक तिनका पार लगाता है
गर कोई रुकावट आती है,
पग चार कदम बढ़ जाता है।

है डगर आखिरी पहर आखिरी, परिणाम जल्द ही आएगा
हो हिम्मत साहस और लगन तो, भाग्य भी साथ निभाएगा
हार का भय फिर जाने क्यों, भीतर से जड़ कर जाता है
तब कहीं से कोई सीख बदन में, इस जोश को भरता
जाता है

हो सदै दिनों की रातों तो क्या,
रवि गरमाहट ले आता है
गर कोई रुकावट आती है,
पग चार कदम बढ़ जाता है।

स्नेहा वर्मा





संजय कुमार मावंडिया
पदनाम :राज्य कर विशेष आयुक्त
बैच : 33वीं
जन्म तिथि: 21.01.1963
गृह जिला : भागलपुर
मो० नं० : 9470001742

ईमेल : Sanjayk.mawandia1963@gmail.com



प्रमोद कुमार गुप्ता
पदनाम :राज्य कर अपर आयुक्त
बैच : 34वीं
जन्म तिथि: 24.07.1963
गृह जिला : वाराणसी, उत्तर प्रदेश
मो० नं० : 9431427034

ईमेल : pramodh.gupta 1963@gov.in



संतोष कुमार
पदनाम :राज्य कर अपर आयुक्त
बैच : 34वीं
जन्म तिथि: 26.04.1963
गृह जिला : मधुबनी
मो० नं० : 9470001202

ईमेल : jcctasantoshkumar@gmail.com



जीवन अग्रवाल
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 35वीं
जन्म तिथि: 01.11.1962
गृह जिला : दरभंगा
मो० नं० : 9430829480

ईमेल : jeevan.agrawal1962@gov.in



रामाधार सिंह
पदनाम :राज्य कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 01.12.1962
गृह जिला : बेगुसराय
मो० नं० : 9470001716

ईमेल : singh 126 ramandhar@gmail.com



विश्व कान्त तिवारी
पदनाम :राज्य कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 09.04.1963
गृह जिला : रोहतास
मो० नं० : 9472928719

ईमेल : tiwaryvk@gmail.com



सत्येन्द्र कुमार सिंह
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 01.01.1963
गृह जिला : सहरसा
मो० नं० : 8544412273

ईमेल : skbfs36@gmail.com



सुबोध राम
पदनाम :राज्य कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 31.12.1963
गृह जिला : धनबाद (झारखण्ड)
मो० नं० : 9430921659

ईमेल : subodhr303@gmail.com



सुजय प्रकाश उपाध्याय
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 05.01.1963
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9431095318

ईमेल : sujayprakashupadhyaya@gmail.com



राजेश पति त्रिपाठी
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 30.01.1963
गृह जिला : मोजपुर
मो० नं० : 9955301646

ईमेल : rajeshptripathi30@gmail.com



शरत चन्द्र
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 05.11.1962
गृह जिला : मधुबनी (बिहार)
मो० नं० : 9431137721

ईमेल : sharat29chandra@gmail.com



पंकज कुमार सिन्हा
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 17.06.1963
गृह जिला : मुंगेर
मो० नं० : 9934271238

ईमेल : pankajsinha9470@gmail.com



अमिताम मिश्रा
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 16.01.1963
गृह जिला : मुंगेर
मो० नं० : 9431638380

ईमेल : amit.mishra64@gmail.com



प्रणव बोध रूंगटा
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 21.06.1965
गृह जिला : भागलपुर
मो० नं० : 9334366066

ईमेल : pbrungta3@gmail.com



आनन्द झा
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 09.04.1963
गृह जिला : मधुबनी
मो० नं० : 9471004439

ईमेल : jctsarandivision2016@gmail.com



चौधरी राम नरेश राय
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 21.07.1963
गृह जिला : दरभंगा
मो० नं० : 9546945836

ईमेल : rraychy@gmail.com



उमा नन्द चौधरी
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 10.02.1963
गृह जिला : बेरी, दरभंगा, बिहार
मो० नं० : 9430963612

ईमेल : umanand.choudhary@gmail.com



ध्रुव कुमार मिश्रा
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 31.03.1963
गृह जिला : दरभंगा
मो० नं० : 9430251664

ईमेल : dhruw675@gmail.com



पूर्णन्दु कुमार झा
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 29.10.1964
गृह जिला : मधुबनी
मो० नं० : 9835126699

ईमेल : pkjbf@yahoo.co.in



शारदा नन्द झा
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 36वीं
जन्म तिथि: 02.01.1965
गृह जिला : कटिहार (बिहार)
मो० नं० : 9472865290

ईमेल : shardamani1991@gmail.com



विश्वनाथ गुप्ता
 पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
 बैच : 36वीं
 जन्म तिथि: 13.11.1962
 गृह जिला : मुजफ्फरपुर
 मो० नं० : 9931678994

ईमेल : vishwanathgupta000@gmail.com



संजय कुमार
 पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
 बैच : 36वीं
 जन्म तिथि: 12.05.1966
 गृह जिला : नालंदा
 मो० नं० : 9431087788

ईमेल : sanjaybfs@gmail.com



बजरंगी प्रसाद
 पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
 बैच : 36वीं
 जन्म तिथि: 13.01.1963
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9835080171

ईमेल : bajrangipdbfs@gmail.com



विमला कुमारी
 पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
 बैच : 36वीं
 जन्म तिथि: 01.08.1966
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9835225304

ईमेल : bmlakumariac@gmail.com



सुनीता कुमारी
 पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
 बैच : 36वीं
 जन्म तिथि: 20.08.1965
 गृह जिला : मुजफ्फरपुर
 मो० नं० : 9835442991

ईमेल : sunitakumari1957@gmail.com



नवीन कुमार
 पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
 बैच : 37वीं
 जन्म तिथि: 24.06.1965
 गृह जिला : बेगूसराय
 मो० नं० : 8210141562

ईमेल : bhawan6162@gmail.com



विपिन कुमार झा
 पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
 बैच : 37वीं
 जन्म तिथि: 03.07.1964
 गृह जिला : दरभंगा
 मो० नं० : 9431672869

ईमेल : bkjhabfs37@gmail.com



सौरभ कुमार सिंह
 पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
 बैच : 37वीं
 जन्म तिथि: 09.07.1963
 गृह जिला : कटिहार
 मो० नं० : 9431269564

ईमेल : saurabhkrsingh18@gmail.com



विजया लक्ष्मी प्रसाद
 पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
 बैच : 37वीं
 जन्म तिथि: 11.09.1963
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9430602856

ईमेल : vijayalakshmi.pd63@gmail.com



डॉ० सुनील कुमार
 पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
 बैच : 37वीं
 जन्म तिथि: 10.07.1963
 गृह जिला : नवादा
 मो० नं० : 98356227070

ईमेल : sunil.kumar2023@gmail.com



शशि शेखर सिंह

पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 11.12.1963
गृह जिला : नालंदा
मो० नं० : 9431022770

ईमेल : korawanshasi@gmail.com



किशोर कुमार सिन्हा

पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 25.06.1965
गृह जिला : नालंदा
मो० नं० : 9304289751

ईमेल : kishorksinha@gmail.com



संजय कुमार

पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 02.10.1962
गृह जिला : मुंगेर (बिहार)
मो० नं० : 9470015529

ईमेल : rajcto@gmail.com



सच्चिदानंद शर्मा

पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि : 01.01.1966
गृह जिला : मुंगेर
मो० नं० : 9470001731

ईमेल : sachidanand46@yahoo.co.in



नन्द किशोर सिंह

पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 12.02.1963
गृह जिला : वैशाली
मो० नं० : 9471004473

ईमेल : singh.nk2011@gmail.com



प्रमोद कुमार

पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 06.01.1965
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 8969677787

ईमेल : pramodkumar1019@gmail.com



ठाकुर प्रसाद सिंह

पद नाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 04.07.1967
गृह जिला : रोहतास
मो० नं० : 9471865380

ईमेल : thakurprasadsingh1967@gmail.com



कमल किशोर चौधरी

पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 28.06.1966
गृह जिला : गया
मो० नं० : 7654769151

ईमेल : 66kamalkishore@gmail.com



पंकज कुमार प्रसाद

पद नाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 07.01.1967
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9835118800

ईमेल : pnkrpd@gmail.com



गोपी चन्द सिंह

पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 06.01.1967
गृह जिला : भागलपुर
मो० नं० : 9430230880

ईमेल : gcsingh1967@gmail.com



राम प्रसाद राम
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 20.08.1963
गृह जिला : वैशाली
मो० नं० : 9431055745

ईमेल : rpramdct@gmail.com



विजय कुमार आजाद
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 02.10.1965
गृह जिला : पूर्णियाँ, बिहार
मो० नं० : 9431067973

ईमेल : vijaykumar.azad3@gmail.com



विरेन्द्र कुमार
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 28.02.1965
गृह जिला : नालंदा
मो० नं० : 9470022321

ईमेल : veerendra1965@gmail.com



अच्छे लाल प्रसाद
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 07.01.1968
गृह जिला : सीवान
मो० नं० : 9471004443

ईमेल : achhelalprasad555@gmail.com



मोती लाल
पदनाम :राज्य-कर अपर आयुक्त
बैच : 37वीं
जन्म तिथि: 02.01.1965
गृह जिला : गोपालगंज
मो० नं० : 9470800555

ईमेल : moti.lal1993@gmail.com



विनोद कुमार झा
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 14.01.1968
गृह जिला : सुपौल (बिहार)
मो० नं० : 9431035428

ईमेल : bjhabfs877@gmail.com



सत्येन्द्र कुमार सिन्हा
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 20.01.1967
गृह जिला : वैशाली (बिहार)
मो० नं० : 9431025745

ईमेल : satyendark.singh67@gmail.com



पंकज कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 15.07.1967
गृह जिला : भोजपुर
मो० नं० : 9431683825

ईमेल : pankajbfs@gmail.com



नीरज कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 20.04.1964
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9835086080

ईमेल : niraj_bfs_38@yahoo.co.in



रंजीत कुमार सिन्हा
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 05.02.1966
गृह जिला : औरंगाबाद
मो० नं० : 7782965132

ईमेल : sinha_ranjeet96@rediffmail.com



बीरेन्द्र कुमार मंडल
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 01.11.1987
गृह जिला : दरभंगा
मो० नं० : 9431080434

ईमेल : bkmandalbfs1987@gmail.com



सुबोध कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 12.01.1984
गृह जिला : मुजफ्फरपुर
मो० नं० : 9470893144

ईमेल : subodhcto@gmail.com



अजय कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 01.01.1966
गृह जिला : वैशाली
मो० नं० : 7835017849

ईमेल : ajaykr62@gmail.com



गोपाल कुमार अग्रवाल
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 21.08.1967
गृह जिला : मधेपुरा
मो० नं० : 9431262025

ईमेल : gagrawalcto@gmail.com



अशोक चंद श्रीवास्तव
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 02.11.1988
गृह जिला : पश्चिमी चम्पारण
मो० नं० : 9430825472

ईमेल : ashokchandsrivastava@gmail.com



दिवाकर प्रसाद
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 13.07.1988
गृह जिला : पश्चिमी चम्पारण
मो० नं० : 9431045637

ईमेल : diwakarprasad31@gmail.com



अशोक कुमार यादव
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 11.08.1962
गृह जिला : कटिहार (बिहार)
मो० नं० : 9471850031

ईमेल : ashokkumaryadav806@gmail.com



ललित कुमार
पदनाम :राज्य कर सहायक आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 20.10.1967
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9334141602

ईमेल : lalitkumarbfs@gmail.com



सुरेन्द्र प्रसाद
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 02.01.1985
गृह जिला : नवादा, बिहार
मो० नं० : 9431093952

ईमेल : surendrataxofficer@gmail.com



शंकर शर्मा
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 18.01.1969
गृह जिला : औरंगाबाद (बिहार)
मो० नं० : 9431190041

ईमेल : shankarcto@gmail.com



अब्दुल्लाह अंसारी
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 02.07.1967
गृह जिला : सिवान
मो० नं० : 9939471007

ईमेल : abdullahansari993947@gmail.com



मो० मोईनुद्दीन
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 01.01.1964
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 7870637051

ईमेल : mdmoin860@gmail.com



आदित्य नारायण
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 24.10.1967
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9931717510

ईमेल : anarayanofficial24@gmail.com



सुनील कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 01.02.1969
गृह जिला : गया
मो० नं० : 9470001204

ईमेल : kumarsunilbfs@gmail.com



शीला प्रतिमा कुजूर
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 38वीं
जन्म तिथि: 31.03.1969
गृह जिला : राँची
मो० नं० : 9431034850

ईमेल : sheela.kujur1969@gov.in



मो० शाहिक
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 06.09.1970
गृह जिला : नालन्दा
मो० नं० : 9386215974

ईमेल : m.shahique@yahoo.com



योगेन्द्र प्रसाद
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 21.12.1970
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 8294448798

ईमेल : yprasad1970@yahoo.in



देवानन्द शर्मा
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : स्पेशल बैच
जन्म तिथि: 01.06.1971
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9470001710

ईमेल : dcct.madhubani@gmail.com



फिरोज आलम
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 08.04.1969
गृह जिला : पूर्णियाँ
मो० नं० : 9431077086

ईमेल : firoz.alam07@gmail.com



मो० असदुज्जमाँ
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 06.07.1967
गृह जिला : सारण
मो० नं० : 9431419698

ईमेल : asadzaman67@gmail.com



राजीव रंजन
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 01.07.1969
गृह जिला : अररिया
मो० नं० : 9470217012

ईमेल : rajivranjan203@gmail.com



क्यामुल हक अंसारी
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 12.10.1966
गृह जिला : सारण
मो० नं० : 9430842938

ईमेल : qhansari66@gmail.com



कैसर तौहिद
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 31.03.1969
गृह जिला : वैशाली
मो० नं० : 9431855139

ईमेल : kaiser.tauheed@gmail.com



प्रभात कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 01.07.1967
गृह जिला : पूर्णियाँ
मो० नं० : 9470458807

ईमेल : prabhatkr16@gmail.com



संजय कुमार प्रसाद
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 13.04.1968
गृह जिला : सारण
मो० नं० : 9431475482

ईमेल : nawadasanjay@gmail.com



मोहन कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 07.08.1967
गृह जिला : मधुबनी
मो० नं० : 9431435765

ईमेल : ctomohankr@gmail.com



विजय कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : स्पेशल बैच
जन्म तिथि: 02.02.1972
गृह जिला : पटना, बिहार
मो० नं० : 9304360072

ईमेल : vijay19720@gmail.com



राज किशोर साह
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 03.07.1969
गृह जिला : मुजफ्फरपुर
मो० नं० : 9430218559

ईमेल : rajkishorsah3@gmail.com



प्रमोद कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 06.05.1971
गृह जिला : देवघर
मो० नं० : 9431083673

ईमेल : pramodkumar1019@gmail.com



मकेश्वर शर्मा
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : विशेष बैच
जन्म तिथि: 01.01.1966
गृह जिला : लखीसराय
मो० नं० : 7903776807

ईमेल : makeshwarsharma2017@gmail.com



सीमा भारती
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 39वीं
जन्म तिथि: 02.12.1968
गृह जिला : बेगूसराय, बिहार
मो० नं० : 9431400360

ईमेल : seemabharti@bfs@gmail.com



डॉ० दिनकर प्रसाद
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 39वीं
जन्म तिथि: 04.02.1965
गृह जिला : मधेपुरा
मो० नं० : 9431466666

ईमेल : dinkar.prasad1965@gov.in



सुधीर कुमार पुरी
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 39वीं
जन्म तिथि: 23.05.1969
गृह जिला : समस्तीपुर, बिहार
मो० नं० : 9470001210

ईमेल : subhirbfs39@gmail.com



जलेश्वर प्रसाद
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 39वीं
जन्म तिथि: 01.12.1966
गृह जिला : सारण (छपरा)
मो० नं० : 8544326997

ईमेल : jprasad1266@gmail.com



अनिल कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 39वीं
जन्म तिथि: 09.11.1964
गृह जिला : नवादा बिहार
मो० नं० : 9431206406

ईमेल : anilcto27@gmail.com



प्रशांत कुमार झा
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 40वीं
जन्म तिथि: 01.07.1968
गृह जिला : बांका
मो० नं० : 9430919695

ईमेल : prashantbfs@gmail.com



अमर नाथ चौधरी
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 40वीं
जन्म तिथि: 02.08.1963
गृह जिला : भागलपुर
मो० नं० : 9931732888

ईमेल : chaudharymamath97@gmail.com



शिवेन कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 40वीं
जन्म तिथि: 10.01.1971
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9431117197

ईमेल : shivan.kumar1971@gmail.com



डॉ० मदन कुमार चौधरी
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 40वीं
जन्म तिथि: 04.10.1971
गृह जिला : वैशाली
मो० नं० : 9939707485

ईमेल : dr.madankr@gmail.com



रमेश कुमार दास
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 40वीं
जन्म तिथि: 24.08.1970
गृह जिला : वैशाली
मो० नं० : 9431205580

ईमेल : rameshkdas1970@gmail.com



अरुण कुमार सिंह
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 41वीं
जन्म तिथि: 17.01.1970
गृह जिला : दरभंगा
मो० नं० : 7992476162

ईमेल : singharunkumar1970@gov.in



राजेन्द्र कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 41वीं
जन्म तिथि: 04.04.1968
गृह जिला : गोपालगंज
मो० नं० : 9934251227

ईमेल : rk6000h@yahoo.co.in



श्रवण कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 41वीं
जन्म तिथि: 01.08.1965
गृह जिला : नालंदा, बिहार
मो० नं० : 9431690445

ईमेल : shravankmalanda@gmail.com



अजिताभ मिश्रा
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 41वीं
जन्म तिथि: 22.04.1969
गृह जिला : मुंगेर
मो० नं० : 9471004478

ईमेल : ajitabh.mishra1969@gmail.com



संजीव कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 41वीं
जन्म तिथि: 28.02.1968
गृह जिला : नालंदा
मो० नं० : 7739116566

ईमेल : sanjeev1968.5k@gmail.com



रुबी
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 41वीं
जन्म तिथि: 04.08.1971
गृह जिला : पलामू
मो० नं० : 9473462229

ईमेल : mehtaruby@gmail.com



निशीथ कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 41वीं
जन्म तिथि: 09.09.1972
गृह जिला : मनेर, पटना
मो० नं० : 9431635684

ईमेल : nishithbfs930@gmail.com



मो० जाकिर अली अंसारी
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 41वीं
जन्म तिथि: 01.01.1969
गृह जिला : शेखपुरा, बिहार
मो० नं० : 9431402200

ईमेल : zakirali.69@yahoo.co.in



नन्द किशोर राज
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 41वीं
जन्म तिथि: 24.03.1972
गृह जिला : गोपालगंज
मो० नं० : 9431361749

ईमेल : nandkishorerj72@gmail.com



संजीत कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 42वीं
जन्म तिथि: 04.06.1969
गृह जिला : जमुई
मो० नं० : 7091456279

ईमेल : sanjeetkumarbfsseikh@gmail.com



विनय कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 42वीं
जन्म तिथि: 27.02.1969
गृह जिला : आरा, बिहार
मो० नं० : 9835220567

ईमेल : vinsar.2010@gov.in



कंचन बाला
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 42वीं
जन्म तिथि: 11.10.1969
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9572448709

ईमेल : kanchan.bala1969@gov.in



कार्तिक कुमार सिंह
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 42वीं
जन्म तिथि: 01.11.1971
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9431417795

ईमेल : kartikumar.singh71@gov.in



प्रवीण कुमार
पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
बैच : 42वीं
जन्म तिथि: 19.12.1971
गृह जिला : कोडरमा
मो० नं० : 9431383826

ईमेल : praveen.kumar@gstn.org.in



प्रियदर्शी रंजन
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 42वीं
जन्म तिथि: 16.01.1967
गृह जिला : भागलपुर
मो० नं० : 9199683455

ईमेल : priyadarshi.ranjan@rediffmail.com



शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 42वीं
जन्म तिथि: 17.10.1969
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9470001720

ईमेल : shailendra.panday69@gov.in



अजित कुमार
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 42वीं
जन्म तिथि: 01.11.1968
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9934494776

ईमेल : ajit.kumar1968@gov.in



अभीक अवतंस
पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
बैच : 42वीं
जन्म तिथि: 10.04.1972
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9006060600

ईमेल : abhik.avatans1972@gmail.com



अनुप कुमार
पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
बैच : 42वीं
जन्म तिथि: 01.09.1969
गृह जिला : नालंदा
मो० नं० : 9471004483

ईमेल : anup.kumar1969@gov.in



अनिल कुमार सिंह विद्यार्थी
पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
बैच : 42वीं
जन्म तिथि: 11.08.1972
गृह जिला : रोहतास, बिहार
मो० नं० : 8986487136

ईमेल : vidyarthi1972@gmail.com



शशी भानु
 पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
 बैच : 42वीं
 जन्म तिथि: 15.06.1974
 गृह जिला : अररिया, बिहार
 मो० नं० : 9234678451

ईमेल : shashibhanu0413@gmail.com



दीपक राज
 पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
 बैच : 42वीं
 जन्म तिथि: 02.02.1969
 गृह जिला : भागलपुर
 मो० नं० : 9334284422

ईमेल : deepakrajbf@gmail.com



मणिन्द्र कुमार
 पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
 बैच : 42वीं
 जन्म तिथि: 07.06.1972
 गृह जिला : हजारीबाग (झारखंड)
 मो० नं० : 9430981353

ईमेल : mmmmanindra@gmail.com



प्रमोद कुमार सुमन
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 42वीं
 जन्म तिथि: 01.07.1972
 गृह जिला : औरंगाबाद
 मो० नं० : 9471454677

ईमेल : sumanpk81@gmail.com



सिरिल वेक
 पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
 बैच : 42वीं
 जन्म तिथि: 03.03.1971
 गृह जिला : राँची
 मो० नं० : 9852210600

ईमेल : cyrilbeck827@gmail.com



तेज कुमार कुजूर
 पदनाम :राज्य-कर संयुक्त आयुक्त
 बैच : 42वीं
 जन्म तिथि: 31.07.1969
 गृह जिला : गुमला, झारखण्ड
 मो० नं० : 9631094335

ईमेल : kujurtej.bfs@gmail.com



रश्मि कुमार सिंह
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : द्वितीय सीमित
 जन्म तिथि: 01.01.1964
 गृह जिला : सोनपुर
 मो० नं० : 8084322995

ईमेल : rashmikumar.singh@gmail.com



सुनील कुमार जायसवाल
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : द्वितीय सीमित
 जन्म तिथि: 15.07.1966
 गृह जिला : पटना, बिहार
 मो० नं० : 9431456735

ईमेल : suniljay66@gmail.com



गोपाल प्रसाद
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : द्वितीय सीमित
 जन्म तिथि: 25.12.1964
 गृह जिला : नवादा
 मो० नं० : 9973328181

ईमेल : gopalpd64@gmail.com



कृष्ण कान्त यादवेंदु
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : द्वितीय सीमित
 जन्म तिथि: 10.02.1965
 गृह जिला : भोजपुर
 मो० नं० : 8210986092

ईमेल : yadvendukk@gmail.com



अशार्फी लाल विद्यार्थी
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : द्वितीय सीमित
 जन्म तिथि: 08.01.1967
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9431002636

ईमेल : asharfialavidyarthi@gmail.com



दिनेश प्रसाद सिंह
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : द्वितीय सीमित
 जन्म तिथि: 15.02.1963
 गृह जिला : कटिहार
 मो० नं० : 9572399833

ईमेल : dineshbfs995@gmail.com



शशिकान्त चतुर्वेदी
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 47वीं
 जन्म तिथि: 20.02.1976
 गृह जिला : पलामू (झारखण्ड)
 मो० नं० : 9430755716

ईमेल : shashikant.c76@gov.in



रवि रंजन आलोक
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 47वीं
 जन्म तिथि: 15.01.1979
 गृह जिला : जमुई (बिहार)
 मो० नं० : 9472047585

ईमेल : ralokbfs@gmail.com



संजय कुमार
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 47वीं
 जन्म तिथि: 05.07.1976
 गृह जिला : रोहतास
 मो० नं० : 9470015529

ईमेल : rajcto@gmail.com



कुमार शैलेन्द्र
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 18.01.1970
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 8825281949

ईमेल : kshailendra.p@gmail.com



अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय
 पदनाम : राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 48-52वीं
 जन्म तिथि: 01.03.1979
 गृह जिला : रोहतास
 मो० नं० : 8986373283

ईमेल : alkhilesh48bfs@gmail.com



अखिलेश कुमार मिश्रा
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं
 जन्म तिथि: 10.03.1972
 गृह जिला : दरभंगा, बिहार
 मो० नं० : 8789525684

ईमेल : akhilesh48bfs@gmail.com



विकास कुमार पाण्डेय
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 01.03.1977
 गृह जिला : कटिहार
 मो० नं० : 9006732359

ईमेल : bikashk.pandey1977@gov.in



एस०एम०इरशाद आरिफ
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 14.10.1972
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9430513582

ईमेल : irshad.arif19725@gov.in

**ओम कुमार सिन्हा**

पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 04.10.1969
 गृह जिला : रोहतास
 मो० नं० : 9430901074

ईमेल : omkumar1969@gmail.com**राम प्रकाश सिन्हा**

पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 11.06.1982
 गृह जिला : बक्सर
 मो० नं० : 8541048241

ईमेल : ramprakash.sinha82@gov.in**कृष्ण कुमार**

पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 06.03.1977
 गृह जिला : गया
 मो० नं० : 8538996761

ईमेल : krishna.kumar1977@gov.in**राजीव कुमार झा**

पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 15.02.1976
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9471404370

ईमेल : rajiv48bfs@gmail.com**बिरेन्द्र कुमार सिंह**

पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 01.03.1980
 गृह जिला : भोजपुर बिहार
 मो० नं० : 9470000183

ईमेल : birendrabfs@gmail.com**राजीव रंजन प्रसाद**

पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 15.10.1975
 गृह जिला : नालन्दा
 मो० नं० : 9871305269

ईमेल : rrshambhu@gmail.com**नरेश कुमार**

पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 28.11.1974
 गृह जिला : गया
 मो० नं० : 9334309889

ईमेल : naresh.kumar1974@gmail.com**मनीष कुमार बिहारी**

पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 08.12.1983
 गृह जिला : पूर्वी चम्पारण
 मो० नं० : 7481969913

ईमेल : mkbihari@gmail.com**मजीद अहमद**

पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 01.07.1978
 गृह जिला : पूर्वी चम्पारण
 मो० नं० : 8051358538

ईमेल : majeedahmad.bfs@gmail.com**आमीर नैय्यर**

पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि: 05.06.1978
 गृह जिला : बेटिया
 मो० नं० : 7004109117

ईमेल : aamirnaiyer@gmail.com



मनोज कुमार साह
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि : 26.12.1974
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9470008422

ईमेल : manoj.sah1974@gov.in



असदुल्लाह गालिब अंसारी
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि : 17.12.1972
 गृह जिला : कैमूर
 मो० नं० : 9471004437

ईमेल : ghalib.ansari1972@gov.in



मुस्तर अकरम
 पदनाम : राज्य कर सहायक आ०
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि : 23.12.1975
 गृह जिला : हजारीबाग
 मो० नं० : 9122156861

ईमेल : mustarakram1975@gmail.com



रीता सिंह
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि : 08.02.1977
 गृह जिला : मुंगेर (बिहार)
 मो० नं० : 9472510815

ईमेल : reeta4604@gmail.com



हरेन्द्र कुमार मांझी
 पदनाम : राज्य कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि : 20.01.1971
 गृह जिला : सिवान
 मो० नं० : 9470001714

ईमेल : harendra48bfs@gmail.com



गायत्री कुमारी आर्या
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि : 15.10.1980
 गृह जिला : नालंदा
 मो० नं० : 8084904648

ईमेल : bfs48gayatri@yahoo.com



सुरेन्द्र कुमार
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि : 04.10.1978
 गृह जिला : बक्सर, बिहार
 मो० नं० : 9308251309

ईमेल : surendrabit78@gmail.com



रणजीत कुमार रजक
 पदनाम : राज्य-कर उपायुक्त
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि : 26.06.1981
 गृह जिला : भोजपुर
 मो० नं० : 8544025677

ईमेल : ctaxranjeet.bfs48@yahoo.com



अनुपमा कुमारी
 पदनाम : राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 48वीं से 52वीं
 जन्म तिथि : 08.05.1982
 गृह जिला : भोजपुर
 मो० नं० : 7766823970

ईमेल : anupma.kumari1982@gov.in



कृष्ण मोहन सिंह
 पदनाम : राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि : 02.02.1979
 गृह जिला : वैशाली
 मो० नं० : 7542010088

ईमेल : krishna.mohan1979@gov.in

**कुमारी अनामिका**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 24.08.1986
 गृह जिला : सीतामढ़ी
 मो० नं० :

ईमेल : anamika.vet@gmail.com**गंगा प्रसाद**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 30.10.1978
 गृह जिला : समस्तीपुर
 मो० नं० : 9546772703

ईमेल : pganga24@gmail.com**निवेदिता**

पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 23.11.1983
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 7543014842

ईमेल : niveditathakur23@gmail.com**मुनेश्वर प्रसाद**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 02.02.1982
 गृह जिला : मधुबनी
 मो० नं० : 9709249256

ईमेल : muneshwar105@gmail.com**संतोष कुमार**

पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 01.02.1985
 गृह जिला : रोहतास
 मो० नं० : 9508122036

ईमेल : santosh.eco@gmail.com**शौकत अली अंसारी**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 06.12.1981
 गृह जिला : रोहतास
 मो० नं० : 9931129681

ईमेल : shauk.inv@gmail.com**अभिनव कुमार झा**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 02.10.1978
 गृह जिला : मधुबनी
 मो० नं० : 7091177056

ईमेल : jha78abhinav@gmail.com**तेज कान्त झा**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 10.02.1976
 गृह जिला : दरभंगा
 मो० नं० : 9934766593

ईमेल : tejkant.jha1976@gov.in**राजेश रंजन भारती**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 12.08.1984
 गृह जिला : मधेपुरा
 मो० नं० : 8292868511

ईमेल : rjesh.rbpokhran@gmail.com**क्षितिज कुमार सिंह**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 14.06.1986
 गृह जिला : अम्बेदकर नगर, यूपी.
 मो० नं० : 9546825260

ईमेल : kkrsingh1986@gmail.com



प्रतिमा कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 17.04.1983
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9431901480

ईमेल : pratima_sh320011@yahoo.co.uk



प्रशांत कुमार झा
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 17.08.1983
 गृह जिला : सहरसा (बिहार)
 मो० नं० : 9973538610

ईमेल : prashantjha2004@gmail.com



रौशन कुमार
 पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 02.03.1983
 गृह जिला : मधुबनी (बिहार)
 मो० नं० : 8051315885

ईमेल : raushanbfs@gmail.com



जीतेन्द्र कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 29.04.1987
 गृह जिला : आरा
 मो० नं० : 9162460094

ईमेल : jitendrasingh0087@gmail.com



सिकन्दर साव
 पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 05.07.1979
 गृह जिला : औरंगाबाद
 मो० नं० : 7992358600

ईमेल : sikandar.sao1979@gov.in



आशीष रंजन
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 01.03.1980
 गृह जिला : नालंदा
 मो० नं० : 7782963773

ईमेल : ashish.ranjan1980@gov.in



शशि भूषण
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 30.09.1981
 गृह जिला : अररिया
 मो० नं० : 9431217599

ईमेल : drshashiphysion@gmail.com



निहारिका छवि
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 16.10.1986
 गृह जिला : आरा
 मो० नं० : 9955181331

ईमेल : niharikchhabhi@gmail.com



संतोष कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 26.02.1980
 गृह जिला : मुजफ्फरपुर (बिहार)
 मो० नं० : 9508122036

ईमेल : ssantosh.eco@gmail.com



योगेन्द्र शर्मा
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 06.12.1978
 गृह जिला : जहानाबाद
 मो० नं० : 8210239577

ईमेल : birayogendra@gmail.com

**यदुवंश**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 02.11.1981
 गृह जिला : लखीसराय
 मो० नं० : 8210754741

ईमेल : yaduvanshdse@gmail.com**विवेक**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 17.09.1986
 गृह जिला : सारण
 मो० नं० : 8409168281

ईमेल : vivek.bfs1986@gov.in**अजय प्रकाश**

पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 29.06.1986
 गृह जिला : सिवान
 मो० नं० : 7543014245

ईमेल : ajya.prakash1986@gov.in**मिनी**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 10.07.1987
 गृह जिला : बांका
 मो० नं० : 7739995946

ईमेल : msmini2011@gmail.com**अजय कुमार सिंह**

पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 11.01.1980
 गृह जिला : वाराणसी, उ०प्र०
 मो० नं० : 9523319701

ईमेल : singhajay077@gmail.com**दिनेश कुमार**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 20.03.1973
 गृह जिला : बस्ती (उत्तर प्रदेश)
 मो० नं० : 8294150285

ईमेल : dineshpayhak73@gmail.com**शिव कुमार**

पदनाम :राज्य-कर साहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 05.01.1980
 गृह जिला : भागलपुर
 मो० नं० : 8294225380

ईमेल : shiv.kumar1980@gmail.com**विवेक कुमार**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 01.12.1981
 गृह जिला : सहरसा
 मो० नं० : 8804502156

ईमेल : vivik.kumar1981@gov.in**विवेकानन्द राय**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 07.02.1977
 गृह जिला : बांका
 मो० नं० : 8083229801

ईमेल : vivekanand.roy1977@gov.in**अंजु कुमारी**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 06.01.1981
 गृह जिला : गया
 मो० नं० : 8083234662

ईमेल : anju.kumari1984@gov.in



अमित अंकित

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 08.02.1982
गृह जिला : बेगूसराय
मो० नं० : 9953991482

ईमेल : amit.ankit1982@gov.in



स्वर्णलता किरण

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 05.03.1979
गृह जिला : बक्सर
मो० नं० : 9135447392

ईमेल : swarnimbfs@gmail.com



विजय कुमार पाठक

पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 30.12.1986
गृह जिला : मधुबनी
मो० नं० : 9122731991

ईमेल : vijyakumar.pathak86@gmail.com



ज्ञानदेव प्रभाकर

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 01.01.1976
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 85444042772

ईमेल : gyandeo.pravakar1976@gov.in



रविन्द्र कुमार

पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 22.11.1981
गृह जिला : पटना (बिहार)
मो० नं० : 9471005002

ईमेल : ravindra307@gmail.com



रेणु कुमारी

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 21.09.1980
गृह जिला : पटना (बिहार)
मो० नं० : 9472266621

ईमेल : renu219@gmail.com



कुमारी रश्मि

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 12.02.1984
गृह जिला : पश्चिमी चम्पारण
मो० नं० : 8409122548

ईमेल : rashmi525158@gmail.com



अभय कुमार

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 01.03.1986
गृह जिला : गया
मो० नं० : 8210366338

ईमेल : abhayvermabhu@gmail.com



विशाल कुमार गुप्ता

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 12.03.1981
गृह जिला : नवादा, बिहार
मो० नं० : 8092379129

ईमेल : vishal81gupta@gmail.com



राजीव रंजन

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 15.04.1975
गृह जिला : नालन्दा
मो० नं० : 9162452122

ईमेल : rajeevranjan1975@gmail.com



रविन्द्र कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 01.03.1979
 गृह जिला : रोहतास
 मो० नं० : 8863007255

ईमेल : rabindrabfs@gmail.com



मो० नसीम
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 01.12.1982
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9631229857

ईमेल : md.nasim1982@gmail.com



दीनानाथ अग्रवाल
 पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 12.01.1977
 गृह जिला : गोपालगंज
 मो० नं० : 9852841322

ईमेल : deenaagrawal77@gmail.com



बाल्मिकी कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 12.10.1986
 गृह जिला : जहानाबाद
 मो० नं० : 8210989600

ईमेल : balmiki.kumar1986@gov.in



अजीत रंजन
 पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 20.08.1980
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 7004497214

ईमेल : ajit.ranjan1980@gov.in



हेमलता कुमारी
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 31.12.1974
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 8083039283

ईमेल : hemlatakumari2012@gmail.com



कुशेश्वर रासत
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 02.05.1975
 गृह जिला : मधुबनी
 मो० नं० : 9931293587

ईमेल : kashyapjee75@gmail.com



सुकेश कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 01.03.1984
 गृह जिला : खगड़िया
 मो० नं० : 7543039867

ईमेल : sukesh.kumar1984@gov.in



मो० शब्बीर
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 20.10.1972
 गृह जिला : शिवहर
 मो० नं० : 8969403580

ईमेल : mdshabbir7287@gmail.com



गोपाल कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 31.12.1981
 गृह जिला : नवादा
 मो० नं० : 9835073178

ईमेल : gopi.adarsai@gmail.com



इन्दु कुमारी
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 09.09.1984
 गृह जिला : रोहतास
 मो० नं० : 9199417035

ईमेल : drindubts@gmail.com



शशिबाला
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 14.03.1979
 गृह जिला : नालंदा
 मो० नं० : 9431217081

ईमेल : shashi.bala1979@gov.in



विशाल कुमार
 पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 12.03.1982
 गृह जिला : सारण
 मो० नं० : 8757283615

ईमेल : vishal.kumar1982@giv.in



मुकेश कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 05.02.1982
 गृह जिला : भागलपुर
 मो० नं० : 7543033365

ईमेल : mukesh.kumar1982@gmail.com



मनीष कुमार गुप्ता
 पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 21.09.1976
 गृह जिला : गया
 मो० नं० : 9431288918

ईमेल : manish_g76@yahoo.com



देव आनन्द
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 03.02.1983
 गृह जिला : कटिहार
 मो० नं० : 8544017030

ईमेल : dev.anand1983@gov.in



मो० सब्बीर आलम
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 20.04.1981
 गृह जिला : रोहतास
 मो० नं० : 9471812080

ईमेल : ssabbiralam386@gmail.com



विकी कुमार विश्वकर्मा
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 26.01.1982
 गृह जिला : गया, बिहार
 मो० नं० : 7050242500

ईमेल : viki8281@gmail.com



आबिद सुबहानी
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 10.04.1983
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 7761882968

ईमेल : abid.subhani1983@gov.in



आकाश कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 53वीं से 55वीं
 जन्म तिथि: 12.10.1981
 गृह जिला : सिवान
 मो० नं० : 8271606535

ईमेल : akash.kumar1981@gov.in



उमा पति नारायण
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 02.01.1982
गृह जिला : रोहतास
मो० नं० : 7004705176

ईमेल : umapati.narayan1982@gov.in



अंजू कुमारी
पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 05.04.1984
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9525512595

ईमेल : anju.kumari1984@gov.in



अनिल कुमार साह
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 14.03.1979
गृह जिला : सिवान
मो० नं० : 9523812957

ईमेल : anil.sah1979@gov.in



मुकेश कुमार चौधरी
पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 19.04.1978
गृह जिला : सीतामढ़ी
मो० नं० : 9162341587

ईमेल : mukesh.chaudhary78@gov.in



राजू रंजन
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 08.08.1976
गृह जिला : सारण
मो० नं० : 7033375960

ईमेल : rannanrajurc@gmail.com



संजय कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 26.12.1979
गृह जिला : मुजफ्फरपुर
मो० नं० : 9470051750

ईमेल : kumsanjay80@gmail.com



सतीश कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 11.09.1982
गृह जिला : अरवल
मो० नं० : 7004304229

ईमेल : satish.kumar1982@gov.in



सच्चिदानन्द विश्वास
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 05.04.1981
गृह जिला : मधुबनी (बिहार)
मो० नं० : 9470720164

ईमेल : snbishwas1981@gmail.com



अरुण कुमार चौधरी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 01.01.1987
गृह जिला : मुंगेर
मो० नं० : 9334747761

ईमेल : arun.choudhary1987@gov.in



सुशील कुमार सुमन
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 53वीं से 55वीं
जन्म तिथि: 20.07.1981
गृह जिला : नालंदा
मो० नं० : 7717706139

ईमेल : sushilkumar.suman81@gov.in



दिलीप कुमार साह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 01.02.1972
 गृह जिला : कटिहार
 मो० नं० : 8539050907

ईमेल : dilipk1972sah@gmail.com



राजेश कुमार
 पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 26.01.1976
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 7070591057

ईमेल : rajesh.kumar2036@gov.in



उदय शंकर मिश्र
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 15.01.1967
 गृह जिला : मुजफ्फरपुर
 मो० नं० : 9835612177

ईमेल : us.mushra967@gmail.com



प्रवीण कुमार
 पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 01.03.1976
 गृह जिला : पूर्वी चम्पारण (बिहार)
 मो० नं० : 9430565554

ईमेल : praveen.kr1009@gmail.com



सुनील कुमार सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 25.12.1967
 गृह जिला : भोजपुर
 मो० नं० : 8340681532

ईमेल : sunilkumar0867@gmail.com



प्रमोद चौधरी
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 02.01.1971
 गृह जिला : मुजफ्फरपुर (बिहार)
 मो० नं० : 9708607274

ईमेल : chaudharyp189@gmail.com



मनोज कुमार कर्ण
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 07.07.1965
 गृह जिला : कटिहार
 मो० नं० : 8757227201

ईमेल : mk65ktr@gmail.com



रोहिणी कुमार मिश्र
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 01.08.1967
 गृह जिला : मधुबनी (बिहार)
 मो० नं० : 9934640596

ईमेल : rohini67km@gmail.com



प्रेमचन्द भारती
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 05.12.1973
 गृह जिला : पटना (बिहार)
 मो० नं० : 9973237188

ईमेल : bfspch@gmail.com



राजन कुमार श्रीवास्तव
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 01.06.1978
 गृह जिला : पूर्वी चम्पारण
 मो० नं० : 9708367241

ईमेल : rajan.bfs@gmail.com



अवधेश सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 07.06.1967
 गृह जिला : वैशाली
 मो० नं० : 9801231723

ईमेल : awadhescto@gmail.com



विनय कुमार ठाकुर
 पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 16.09.1968
 गृह जिला : मुंगेर
 मो० नं० : 7277767608

ईमेल : thakur.vinay067@gmail.com



दया शंकर सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 01.01.1971
 गृह जिला : मोजपुर
 मो० नं० : 9835629766

ईमेल : dshankarbpsc0@gmail.com



धर्मदेव कुमार
 पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 13.09.1970
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9102012331

ईमेल : dharmdevkumar1212@gmail.com



शिवनारायण पासवान
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 17.10.1970
 गृह जिला : अररिया
 मो० नं० : 8340721614

ईमेल : shivnr1970@gmail.com



ज्ञानी दास
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 17.01.1969
 गृह जिला : गया
 मो० नं० : 9304280875

ईमेल : gyanidas10@gmail.com



उदय कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 01.03.1978
 गृह जिला : गया
 मो० नं० : 9473318270

ईमेल : udayadpc@gmail.com



मनोज कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 18.03.1969
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9431690569

ईमेल : mkr.dnr@gmail.com



संतोष कुमार गुप्ता
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 01.02.1977
 गृह जिला : मोजपुर (बिहार)
 मो० नं० : 9431288918

ईमेल : ganstoshkumar011@gmail.com



मो० अनवारूल हक
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : तृतीय सीमित
 जन्म तिथि: 01.01.1972
 गृह जिला : कटिहार
 मो० नं० : 7979987294

ईमेल : haquea.394@gmail.com



संतोष कुमार चौधरी
पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
बैच : तृतीय सीमित
जन्म तिथि: 24.02.1978
गृह जिला : दरमंगा (बिहार)
मो० नं० : 8051844357

ईमेल : santosh.cto2014@gmail.com



बलराम प्रसाद
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : तृतीय सीमित
जन्म तिथि: 03.01.1973
गृह जिला : सारण
मो० नं० : 9835293394

ईमेल : balram.cpr@gmail.com



शंकर चौधरी
पदनाम :राज्य कर सहायक आ०
बैच : तृतीय सीमित
जन्म तिथि: 07.05.1965
गृह जिला : मधेपुरा (बिहार)
मो० नं० : 9955824832

ईमेल : sankarbaby65@gmail.com



उमेश चन्द्रा
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : तृतीय सीमित
जन्म तिथि: 01.04.1965
गृह जिला : नवादा
मो० नं० : 9934246700

ईमेल : chandraumesh2012@gmail.com



कुमारी गुंजन भारती
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : तृतीय सीमित
जन्म तिथि: 02.07.1968
गृह जिला : सीतामढ़ी
मो० नं० : 8709321164

ईमेल : kumarigunjajbharati68@gmail.com



संतोष कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 14.11.1981
गृह जिला : गया
मो० नं० : 9313030265

ईमेल : santosharies@rediffmail.com



मानव सौरभ
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 25.11.1981
गृह जिला : कटिहार
मो० नं० : 9472218918

ईमेल : manav.saurav1981@gov.in



विभांशु कौशल चौधरी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 18.11.1987
गृह जिला : मुजफ्फरपुर
मो० नं० : 9891389261

ईमेल : vibhanshu.kaushal@gmail.com



सत्येन्द्र कुमार सिंह
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 01.03.1982
गृह जिला : छपरा (सारण)
मो० नं० : 9168070395

ईमेल : satyendra798448@gmail.com



विनीता वत्स
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 02.10.1987
गृह जिला : औरंगाबाद
मो० नं० : 9560901204

ईमेल : binitabatsa@gmail.com



सन्नी
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 58वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 28.04.1990
 गृह जिला : नालन्दा
 मो० नं० : 7503804998

ईमेल : abhishekshor99@gmail.com



वंदना
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 58वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 21.07.1991
 गृह जिला : बक्सर
 मो० नं० : 7250540691

ईमेल : vandana331@gmail.com



ददन कुमार सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 58वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 20.01.1984
 गृह जिला : औरंगाबाद
 मो० नं० : 7779855851

ईमेल : dadan85singh@gmail.com



विवेक कुमार गुप्ता
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 58वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 25.03.1984
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9871276753

ईमेल : vivekmka@gmail.com



नरगिस
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 58वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 25.08.1988
 गृह जिला : किशनगंज
 मो० नं० : 8540071299

ईमेल : nargis.hussain05@gmail.com



शिप्रा कुमारी
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 58वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 28.02.1989
 गृह जिला : दरभंगा
 मो० नं० : 7280808382

ईमेल : shiprajhabotany@gmail.com



संदीप तैतरवे
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 58वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 17.01.1978
 गृह जिला : भागलपुर
 मो० नं० : 9711547183

ईमेल : sandeepalterway@gmail.com



अविनाश सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 58वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 10.06.1983
 गृह जिला : उत्तर प्रदेश (बलीया)
 मो० नं० : 7007538528

ईमेल : avisin2@gmail.com



रश्मि रंजीता
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 58वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 02.02.1983
 गृह जिला : मोतिहारी
 मो० नं० : 7827891758

ईमेल : rashmiranjita83@gmail.com



प्रसून पुष्कर
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 58वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 28.02.1988
 गृह जिला : बेगुसराय
 मो० नं० : 8631868204

ईमेल : praseonp86@yahoo.co.in



इन्द्रजीत कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 12.02.1987
गृह जिला : नालन्दा
मो० नं० : 9262249654

ईमेल : indrajeetkumar2003@gmail.com



मो० अफजल हसनैन
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 13.11.1986
गृह जिला : सीतामढ़ी
मो० नं० : 9997249088

ईमेल : hasnainalig@gmail.com



परिणय कुमार प्रसून
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 05.02.1983
गृह जिला : पूर्णियाँ
मो० नं० : 9821695049

ईमेल : parinaykumarprasad@gmail.com



समीर परिमल
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 01.03.1969
गृह जिला : गोपालगंज
मो० नं० : 9934796866

ईमेल : samir.parimal@gmail.com



आदित्य कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 16.01.1984
गृह जिला : पूर्णियाँ
मो० नं० : 7970559359

ईमेल : utpal.adi2015@gmail.com



सुजाता प्रसाद
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 28.09.1989
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 7042815748

ईमेल : sujatachandrapsad786@gmail.com



अनामिका
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 10.10.1990
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9990014392

ईमेल : anamika.jnu31@gmail.com



सुजित कुमार मिश्रा
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 29.07.1986
गृह जिला : भोजपुर (आरा)
मो० नं० : 9899835155

ईमेल : sujeetmishra029@gmail.com



राम कृपाल साह
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 01.03.1977
गृह जिला : सीतामढ़ी
मो० नं० : 8271591665

ईमेल : ramkripal177@gmail.com



संतोष कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 27.10.1989
गृह जिला : मधुबनी
मो० नं० : 9582717683

ईमेल : santosh.iitkgp749@gmail.com



विकास कुमार सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : ५४वीं से ५४वीं
 जन्म तिथि: ०१.०३.१९८८
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : ८७८८५००३१२

ईमेल : vikashsingh1988@gov.in



अभिनव कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : ६४वीं से ६४वीं
 जन्म तिथि: २८.१२.१९८९
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : ७७६६०६९६४४

ईमेल : abhinav2007b@gmail.com



मानवेन्द्र सिंह परिहार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : ६४वीं से ६४वीं
 जन्म तिथि: १९.०८.१९८७
 गृह जिला : उत्तर प्रदेश (इं०बाद)
 मो० नं० : ९५९९०४५५५७

ईमेल : mpmannu7@gmail.com



कुणाल कश्यप
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : ५४वीं से ५४वीं
 जन्म तिथि: २६.०१.१९८६
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : ८८२६६१६८६०

ईमेल : kksatra@gmail.com



कमलेश कुमार प्रकाश
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : ५४वीं से ५४वीं
 जन्म तिथि: १८.०३.१९८३
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : ९०२१२२७२६८

ईमेल : kkprakash011@gmail.com



रोहित दुबे
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : ६४वीं से ६४वीं
 जन्म तिथि: ०२.०८.१९९०
 गृह जिला : आजमगढ (स०प्र०)
 मो० नं० : ९०२६०६९३१३

ईमेल : rodubey97@gmail.com



शर्मिका बाजपेई
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : ६४वीं से ६४वीं
 जन्म तिथि: ३१.१०.१९८६
 गृह जिला : भागलपुर
 मो० नं० : ७७६६९९९९७७

ईमेल : sharmikabajpai@gmail.com



तरुण कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : ५४वीं से ५४वीं
 जन्म तिथि: १५.०२.१९८३
 गृह जिला : मुजफ्फरपुर
 मो० नं० : ८८९११४९६७७

ईमेल : tarun_11006@yahoo.com



रोहित रंजन
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : ६४वीं से ६४वीं
 जन्म तिथि: १६.०२.१९८७
 गृह जिला : पूर्वी छप्पारण
 मो० नं० : ८८७३७४२३९६

ईमेल : rohitv886@gmail.com



रवि शंकर प्रसाद
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : ६४वीं से ६४वीं
 जन्म तिथि: १०.०६.१९८६
 गृह जिला : गोपालगंज
 मो० नं० : ८७०९४८९६९३

ईमेल : rvishankar.pd88@gmail.com

**शशि शेखर सिन्हा**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 25.05.1984
 गृह जिला : शेखपुरा
 मो० नं० : 8420224343

ईमेल : sinha.bfs@gmail.com**पुनीता कुमारी**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 02.01.1979
 गृह जिला : सुपौल
 मो० नं० : 8544067146

ईमेल : punita025@gmail.com**कुमारी खुशबू रानी**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 18.12.1986
 गृह जिला : भागलपुर
 मो० नं० : 6202906411

ईमेल : smiles181286@gmail.com**प्रदीप कुमार सिंह**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 03.05.1982
 गृह जिला : बाँका
 मो० नं० : 8603136454

ईमेल : pk Singh82@gmail.com**अभिरंजन रोहित**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 25.12.1982
 गृह जिला : भागलपुर
 मो० नं० : 8178350655

ईमेल : abhiranjan1982@gmail.com**आनन्द कुमार**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 03.03.1988
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 8730843476

ईमेल : er.anand1988@gmail.com**रणजीत कुमार**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 20.12.1980
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 7532977589

ईमेल : ranjitkr.ctd@gmail.com**अर्जुन कुमार**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 31.05.1989
 गृह जिला : पूर्णियाँ
 मो० नं० : 9718697454

ईमेल : arjun3105@gmail.com**रंजना कुमारी वर्मा**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 18.02.1984
 गृह जिला : नालन्दा
 मो० नं० : 9873136698

ईमेल : ranjanaverma.verma@gmail.com**कुमारी अनु सोनी**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 31.01.1986
 गृह जिला : सिवान
 मो० नं० : 8409202862

ईमेल : soni.anu0@gmail.com



श्वेता रानी

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैंच : 58वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 17.01.1989
गृह जिला : मुंगेर
मो० नं० : 9681314798

ईमेल : shweta.rani470@gmail.com



अजय कुमार पंडित

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैंच : 58वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 08.03.1983
गृह जिला : मुंगेर
मो० नं० : 7004650731

ईमेल : ajaykrpandit83@gmail.com



सहगुफ्ता रहमान

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैंच : 58वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 08.02.1987
गृह जिला : पश्चिमी चम्पारण
मो० नं० : 9430884361

ईमेल : sahguftarahman@gmail.com



मनोज कुमार पॉल

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैंच : 58वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 01.01.1975
गृह जिला : कैमुर
मो० नं० : 8210937394

ईमेल : manojkrpaul@gmail.com



अरुण नाथ

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैंच : 58वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 12.02.1985
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 8378964233

ईमेल : arunnath310@gmail.com



इन्दु चौहान

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैंच : 58वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 15.08.1988
गृह जिला : सुपौल
मो० नं० : 9718382554

ईमेल : induchauhan51@gmail.com



नीरज कुमार

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैंच : 58वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 12.08.1980
गृह जिला : अररिया
मो० नं० : 9471493880

ईमेल : nrj898@gmail.com



दीपक कुमार शर्मा

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैंच : 58वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 08.02.1983
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 8507517288

ईमेल : urdestinyds@gmail.com



अंजू कुमारी

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैंच : 58वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 20.08.1989
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9525512585

ईमेल : anju.k1889@gmail.com



रेफाकत हुसैन

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैंच : 58वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 03.01.1981
गृह जिला : सीवान
मो० नं० : 9189836875

ईमेल : refaquathussain1981@gmail.com



सरिता सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 12.08.1986
 गृह जिला : रोहतास
 मो० नं० : 9835778056

ईमेल : sarita20singh@gmail.com



प्रीति कुमारी
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 26.01.1988
 गृह जिला : मुंगेर
 मो० नं० : 8271382775

ईमेल : preeti.kumari1988@gov.in



अरविन्द कुमार राम
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 25.12.1984
 गृह जिला : पूर्वी चम्पारण
 मो० नं० : 9504040816

ईमेल : rbndkmr5@gmail.com



संतोष कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 22.11.1985
 गृह जिला : कैमूर
 मो० नं० : 9473789686

ईमेल : santoshkumar221185@gmail.com



दिव्या ज्योति
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 17.01.1984
 गृह जिला : औरंगाबाद
 मो० नं० : 8340269127

ईमेल : divyajyoti961@gmail.com



सुधांशु कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 10.12.1985
 गृह जिला : बक्सर
 मो० नं० : 9818790364

ईमेल : Sudhansukumar0004@gmail.com



अमित कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 05.01.1985
 गृह जिला : खगड़िया
 मो० नं० : 8750102877

ईमेल : amynitp007@gmail.com



उमेश कुमार दास
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 04.03.1979
 गृह जिला : जमुई
 मो० नं० : 9931642125

ईमेल : ukdas34@gmail.com



विक्रम कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 08.12.1980
 गृह जिला : गया
 मो० नं० : 8340712953

ईमेल : vikrambfs123@gmail.com



संगीता कुमारी
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 56वीं से 59वीं
 जन्म तिथि: 09.04.1988
 गृह जिला : गया
 मो० नं० : 8002744657

ईमेल : sangeet988@gmail.com



ललिन्द्र कुमार

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 29.06.1989
गृह जिला : नवादा
मो० नं० : 8527340736

ईमेल : lalitikumar8745@gmail.com



नागेन्द्र प्रसाद

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 22.06.1983
गृह जिला : मधुबनी
मो० नं० : 8409569124

ईमेल : nagendra.kashyap83@gmail.com



शशि भूषण कुमार

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 03.12.1978
गृह जिला : दरभंगा
मो० नं० : 8409131444

ईमेल : Shashirock1980@gmail.com



आशीष कुमार पासवान

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 25.03.1979
गृह जिला : नालंदा
मो० नं० : 8102985936

ईमेल : ashishpaswan352@gmail.com



नवनीत कुमार भारती

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 05.01.1990
गृह जिला : बेगुसराय
मो० नं० : 8051124717

ईमेल : navneet503@gmail.com



राजीव रंजन सिंह

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 56वीं से 59वीं
जन्म तिथि: 11.10.1970
गृह जिला : कटिहार
मो० नं० : 9334030405

ईमेल : mr.rajeevsingh01@gmail.com



श्री सुमन कुमार मिश्रा

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 16.02.1982
गृह जिला : मधुबनी
मो० नं० : 8581950615

ईमेल : sumankumarmishra.1028@gamil.com



संजय कुमार मिश्रा

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 15.12.1986
गृह जिला : दरभंगा
मो० नं० : 8340610390

ईमेल : Sanjayece208@gamil.com



पवन कुमार मिश्रा

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 01.04.1986
गृह जिला : अररिया
मो० नं० : 9873399112

ईमेल : pawandev.mishra@gmail.com



ज्योति नन्दन

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 04.01.1985
गृह जिला : गया
मो० नं० : 7070570740

ईमेल : nandanj27@gmail.com

**रवीश कुमार सिंह**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 25.12.1982
 गृह जिला : धनबाद
 मो० नं० : 8210837915

ईमेल : rawish.katras@gmail.com

**चंदन कुँवर**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 26.06.1991
 गृह जिला : गोपालगंज
 मो० नं० : 9818735633

ईमेल : chandan.kuar@gmail.com

**आकांक्षी**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 03.10.1987
 गृह जिला : दरभंगा
 मो० नं० : 9006292924

ईमेल : akankshi44@gmail.com

**गौरव**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 15.11.1986
 गृह जिला : सहरसा
 मो० नं० : 7903937016

ईमेल : gsinha6@gmail.com

**ललितेन्दु राय**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 02.01.1991
 गृह जिला : अमेठी
 मो० नं० : 7982321149

ईमेल : lalltendublh@gmail.com

**निखिल कुमार बिसेन**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 27.06.1992
 गृह जिला : भोजपुर
 मो० नं० : 7903799791

ईमेल : nbissen@gmail.com

**सिंकेश कुमार**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 12.02.1984
 गृह जिला : पूर्णियाँ
 मो० नं० : 9785429694

ईमेल : sinkeshkumar@gmail.com

**भावना श्री**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 17.07.1988
 गृह जिला :उत्तर प्रदेश (वाराणसी)
 मो० नं० : 8115394488

ईमेल : bhawana.shree@gmail.com

**मयंक मृणाल**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 14.09.1987
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9717660013

ईमेल : mmrinal87@gmail.com

**सीतेश कुमार**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 20.01.1988
 गृह जिला : पूर्वी चम्पारण
 मो० नं० : 9304840523

ईमेल : situ.lasdreams@gmail.com



मो० आशिफ
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 31.12.1988
गृह जिला : बेगूसराय
मो० नं० : 8434214173

ईमेल : asf.73.ma@gmail.com



मो० इरफान हैदर
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 16.05.1983
गृह जिला : औरंगाबाद
मो० नं० : 9122343241

ईमेल : ihaidr337@gmail.com



कुमार नयन
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 11.12.1986
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9818552250

ईमेल : kumar.nayan123@gmail.com



रवि रंजन राज
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 06.12.1989
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9631120092

ईमेल : raviranjana.007@gmail.com



चन्द्र शेखर सिंह
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 01.11.1984
गृह जिला : मऊ (उत्तर प्रदेश)
मो० नं० : 9958794488

ईमेल : vshekh.singh@gmail.com



सुजीत कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 01.08.1985
गृह जिला : मुंगेर
मो० नं० : 9711858798

ईमेल : sujitnlp@gmail.com



साकेत सुमन
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 24.08.1990
गृह जिला : भागलपुर
मो० नं० : 9717253524

ईमेल : suman.saket011@gmail.com



वन्दना कुमारी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 19.12.1987
गृह जिला : बेगूसराय
मो० नं० : 7982810477

ईमेल : vandana.kumari1987@gov.in



सुजीत कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 02.12.1985
गृह जिला : गया
मो० नं० : 8202223411

ईमेल : sjtkumar696@gmail.com



असलम दानिश
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 20.05.1988
गृह जिला : किशनगंज
मो० नं० : 8468847588

ईमेल : aslam.danish786@gmail.com



देवा श्री
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 13.09.1988
गृह जिला : रोहतास
मो० नं० : 9560008715

ईमेल : devashree.tripathi@gmail.com



रत्नेश रंजन
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 21.11.1988
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9818049364

ईमेल : sastra.ratnesh@gmail.com



पूनम कुमारी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 15.01.1983
गृह जिला : सिवान
मो० नं० : 9979237718

ईमेल : poonam.cdpo@gmail.com



सुस्मिता कुमारी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 08.01.1984
गृह जिला : अररिया
मो० नं० : 8527637248

ईमेल : mail.mustahaque@gmail.com



दीपा ज्योति
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 21.12.1983
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 7368069577

ईमेल : misthidiva14@gmail.com



गरिमा चौधरी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 02.10.1984
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9162940865

ईमेल : mbigarima@gmail.com



वन्दना वशिष्ठ
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 15.07.1987
गृह जिला : पूर्णिया
मो० नं० : 9837788253

ईमेल : vandana.vashisth@gmail.com



निधि कुमारी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 02.10.1992
गृह जिला : कटिहार
मो० नं० : 8920395713

ईमेल : nidhija16@gmail.com



वन्दना भारती
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 03.02.1986
गृह जिला : खगड़िया
मो० नं० : 7782842612

ईमेल : nigamjee@gmail.com



मेधा श्रेयसी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 15.09.1984
गृह जिला : मुंगेर
मो० नं० : 8873784948

ईमेल : medhashr@gmail.com



सजीवानंद
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 20.03.1975
गृह जिला : मधुबनी
मो० नं० : 8076838524

ईमेल : anandsanjeev1983@gmail.com



मो० जावेद अख्तर
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 02.10.1990
गृह जिला : गोपालगंज
मो० नं० : 9939493886

ईमेल : jawedakhtar5151@gmail.com



हर्षराज आनन्द
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 03.10.1989
गृह जिला : शेखपुरा
मो० नं० : 7290919389

ईमेल : hranand03@gmail.com



मनोज कुमार सिंह
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 04.02.1986
गृह जिला : खगड़िया
मो० नं० : 9310912930

ईमेल : singhmanojkumar301@gmail.com



सुनील कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 09.04.1990
गृह जिला : लखीसराय
मो० नं० : 8409290005

ईमेल : sunilkumar9490.sk@gmail.com



टुटु कुमारी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 26.02.1976
गृह जिला : कटिहार
मो० नं० : 7361050678

ईमेल : tutukumari76@gmail.com



अश्विनी कुमार प्रदीप
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 12.10.1983
गृह जिला : पूर्णियां
मो० नं० : 9958855026

ईमेल : ashkumar980@gmail.com



सबानाज परवीन
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 02.07.1992
गृह जिला : भोजपुर
मो० नं० : 7700888735

ईमेल : saba.perween5@gmail.com



स्मिता शर्मा
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 23.02.1988
गृह जिला : लखीसराय
मो० नं० : 797074099

ईमेल : smita.pups@gmail.com



सोनू कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 60वीं से 62वीं
जन्म तिथि: 26.09.1992
गृह जिला : रोहतास (सासाराम)
मो० नं० : 9990696151

ईमेल : 6709sona@gmail.com

**मनीष प्रभाकर**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 11.07.1991
 गृह जिला : भागलपुर
 मो० नं० : 7503721107

ईमेल : manishprbhkr@gmail.com

**जय शंकर कुमार**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 17.07.1991
 गृह जिला : पूर्वी चम्पारण
 मो० नं० : 7210523616

ईमेल : jaishankar.kumar3@gmail.com

**मृत्युंजय कुमार**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 06.12.1988
 गृह जिला : पूर्वी चम्पारण
 मो० नं० : 7503802879

ईमेल : mritunjaykrkumar11@gmail.com

**शुभ आशीष**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 13.10.1992
 गृह जिला : मुजफ्फरपुर
 मो० नं० : 7011355587

ईमेल : bbmashish@gmail.com

**प्रेम प्रकाश चौधरी**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 04.06.1981
 गृह जिला : नालंदा
 मो० नं० : 9801002771

ईमेल : premp0682@gmail.com

**शालिनी प्रिया**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 22.02.1989
 गृह जिला : भोजपुर
 मो० नं० : 9811223287

ईमेल :

**राजा बाबू**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 02.02.1986
 गृह जिला : मुजफ्फरपुर
 मो० नं० : 8935963992

ईमेल : raja.babu1986@gov.in

**रानी कुमारी**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 14.03.1990
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 8709807041

ईमेल : rkumari14390@gmail.com

**बबिता कुमारी**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 20.01.1991
 गृह जिला : गया
 मो० नं० : 7903305191

ईमेल : bk676677@gmail.com

**ज्योत्सना भारती**

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 18.02.1990
 गृह जिला : नालंदा
 मो० नं० : 8789568496

ईमेल : bhartijyotsna96@gmail.com



पंकज कुमार सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 15.01.1987
 गृह जिला : औरंगाबाद
 मो० नं० : 9608392943

ईमेल : benipankaj@gmail.com



मास्कर कुमार रजक
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 60वीं से 62वीं
 जन्म तिथि: 18.08.1984
 गृह जिला : सहरसा
 मो० नं० : 8800595344

ईमेल :



पीयूष कुमार चौबे
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 27.05.1992
 गृह जिला : भभुआ
 मो० नं० : 7838096794

ईमेल : piyushthesoulinside@gmail.com



सुधीर कुमार पाण्डेय
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 05.08.1991
 गृह जिला : देवरिया (उत्तर प्रदेश)
 मो० नं० : 9453713758

ईमेल : sudheerlast@gmail.com



आशीष सौरभ आशुतोष
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 30.12.1994
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 996843009

ईमेल : ashishsaurabhashutosh@gmail.com



जयन्ती कुमारी
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 01.01.1993
 गृह जिला : रोहतास
 मो० नं० : 7557489820

ईमेल : jyantikumari407@gmail.com



मनीषा सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 26.06.1991
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9043270777

ईमेल : singh.manisha120@gmail.com



चन्दन कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 19.10.1992
 गृह जिला : अररिया
 मो० नं० : 9599872538

ईमेल : chandan10792@gmail.com



कुमार तुषारेन्द्र
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 16.09.1990
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9711853025

ईमेल : kumar1990tusharendra@gmail.com



शामीन फिरदौस
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 04.06.1990
 गृह जिला : पश्चिम चम्पारण
 मो० नं० : 7488429651

ईमेल : shamin28firdaus@gmail.com



आकाश आनन्द
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 31.05.1993
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 7903453712

ईमेल : akashanand3105@gmail.com



विवेक मिश्र
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 23.04.1990
गृह जिला : गोरखपुर (उ०प्र०)
मो० नं० : 9839320203

ईमेल : vivekmishragkp@gmail.com



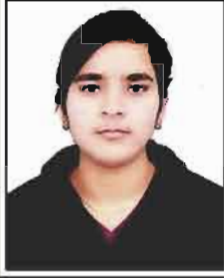
कुमार शशांक
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 14.04.1988
गृह जिला : पूर्णिया
मो० नं० : 9871435515

ईमेल : shasbvh003@gmail.com



ऋचा कुमारी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 05.07.1991
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9582349125

ईमेल : richa51291@gmail.com



शिल्पी कुमारी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 13.03.1993
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 7683066041

ईमेल : shilpik1303@gmail.com



गौतम कुमार गोस्वामी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 27.02.1995
गृह जिला : दरभंगा
मो० नं० : 8130043464

ईमेल : gautam.goswami82@gmail.com



रश्मि कुमारी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 21.12.1990
गृह जिला : नालंदा
मो० नं० : 9654975308

ईमेल : kumari.rashmi95@gmail.com



संदीप कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 15.12.1993
गृह जिला : रोहतास
मो० नं० : 8754950909

ईमेल : sandeepbigy@gmail.com



कमलशील
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 05.02.1988
गृह जिला : नालंदा
मो० नं० : 9540849685

ईमेल : kpkamalsheel537@gmail.com



दीपिका कुमारी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 10.11.1989
गृह जिला : नवादा
मो० नं० : 9955830846

ईमेल : deepika.kumari07@gmail.com



प्रिय रंजन
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 06.01.1993
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9871751469

ईमेल : ranjan.priya916@gmail.com



प्रेमांशु
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 19.01.1995
 गृह जिला : बेगूसराय
 मो० नं० : 7903721883

ईमेल : premanshu1901@gmail.com



दिव्य प्रकाश
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 08.02.1988
 गृह जिला : मुजफ्फरपुर
 मो० नं० : 9717137591

ईमेल : divyaprakash001@gmail.com



स्नेहा वर्मा
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 15.07.1994
 गृह जिला : प्रयागराज (उ०प्र०)
 मो० नं० : 9315122399

ईमेल : 1993sneha@gmail.com



राहुल सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 14.05.1993
 गृह जिला : सारण
 मो० नं० : 8651826099

ईमेल : rahulsinghrajpoot925@gmail.com



आशीष कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 12.02.1992
 गृह जिला : लखीसराय
 मो० नं० : 8130613865

ईमेल : ashishsajjan@gmail.com



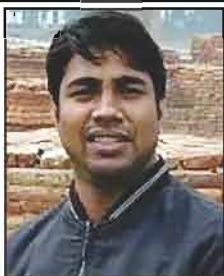
सोनल कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 24.08.1992
 गृह जिला : नवादा
 मो० नं० : 9711201231

ईमेल : snlkumar082@live.com



कुमार सौरभ
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 04.08.1989
 गृह जिला : पश्चिम चम्पारण
 मो० नं० : 8130438304

ईमेल : saurabh_nitsgr@rediffmail.com



जय कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 16.08.1988
 गृह जिला : औरंगाबाद
 मो० नं० : 7992483734

ईमेल : jai.kr908@gmail.com



अमित कुन्दन
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 01.08.1990
 गृह जिला : औरंगाबाद
 मो० नं० : 8920683688

ईमेल : ammykundu01@gmail.com



अमित कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 25.04.1986
 गृह जिला : लखीसराय
 मो० नं० : 8102304879

ईमेल : amitbharadwaj2586@gmail.com



पंकज कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 05.05.1991
 गृह जिला : धनबाद
 मो० नं० : 9717857931

ईमेल : pentester1010@gmail.com



प्रांजल सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 05.01.1994
 गृह जिला : शाहजहाँपुर (उ०प्र०)
 मो० नं० : 9821624192

ईमेल : pranjalsingh46@gmail.com



सौरभ कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 29.05.1991
 गृह जिला : मुजफ्फरपुर
 मो० नं० : 9761270377

ईमेल : srv.kumar29@gmail.com



गुंजन कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 06.01.1987
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 8376863591

ईमेल : gunjankumarsingh@gmail.com



अविनाश कुमार सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 25.08.1990
 गृह जिला : समस्तीपुर
 मो० नं० : 9953485123

ईमेल : mr.avinash@live.com



मनीष कुमार सिकन्दर
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 01.01.1989
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 6205453612

ईमेल : manishrmist@gmail.com



अंकित कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 27.02.1988
 गृह जिला : मोजपुर
 मो० नं० : 9473196697

ईमेल : ankit.aryaan@gmail.com



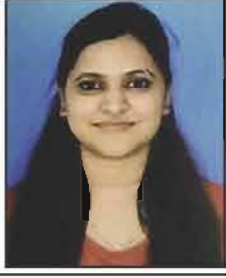
मेराज आलम
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 15.08.1992
 गृह जिला : नालंदा
 मो० नं० : 9986821718

ईमेल : merajalam4191@gmail.com



अंशु कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 19.03.1989
 गृह जिला : समस्तीपुर
 मो० नं० : 9003539616

ईमेल : anshukumar856@gmail.com



कुसुम कुमारी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 20.03.1991
गृह जिला : दरभंगा
मो० नं० : 9653811472

ईमेल : 1991kusumkumari@gmail.com



मो० मुसद्दीक
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 03.12.1990
गृह जिला : पूर्णिया
मो० नं० : 8809690925

ईमेल : musaddique32@gmail.com



नूपुर सिन्हा
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 02.04.1989
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 8076194984

ईमेल : noopur.sinha1@gmail.com



अनिरुद्ध कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 07.03.1994
गृह जिला : लखीसराय
मो० नं० : 8963019791

ईमेल : anirudha136@gmail.com



चन्दन कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 28.02.1987
गृह जिला : खगड़िया
मो० नं० : 9380230091

ईमेल : chandan_dav@yahoo.com



रूपेश कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 05.12.1991
गृह जिला : शेखपुरा
मो० नं० : 9555851179

ईमेल : rupeshkumar.095010@gmail.com



कुमार विशाल
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 03.11.1991
गृह जिला : पूर्णिया
मो० नं० : 9971883507

ईमेल : krishal1110@gmail.com



अभिषेक आनन्द
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 05.09.1992
गृह जिला : सहरसा
मो० नं० : 9911663235

ईमेल : abhishek1150@gmail.com



अविनाश कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 22.09.1994
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 88585972991

ईमेल : avinashfunk@gmail.com



सुधीर
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 01.01.1990
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 7834830632

ईमेल : sudhirkr938@yahoo.com



रवीश कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 15.10.1993
 गृह जिला : मुंगेर
 मो० नं० : 8084028228

ईमेल : raveeshnarayan@gmail.com



गुंजन कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 15.01.1992
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9304467745

ईमेल : gunjtaurus@gmail.com



खुशबू सिंह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 18.07.1989
 गृह जिला : बक्सर
 मो० नं० : 9999844360

ईमेल : singhkhus18@gmail.com



लोकेश आनंद
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 21.02.1993
 गृह जिला : अररिया
 मो० नं० : 7070423600

ईमेल : lokeshanand3@gmail.com



नवनीत कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 23.09.1988
 गृह जिला : सारण
 मो० नं० : 8800900922

ईमेल : navneetabc@gmail.com



हरेराम
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 31.07.1990
 गृह जिला : राँची (झारखण्ड)
 मो० नं० : 7909056513

ईमेल : hareram.gautam@gmail.com



रोहित कुमार शर्मा
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 27.10.1988
 गृह जिला : भागलपुर
 मो० नं० : 8789693834

ईमेल : rohisharma.git@gmail.com



सरिता कुमारी
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 12.12.1985
 गृह जिला : मधुबनी
 मो० नं० : 9006275983

ईमेल : sarita1985madhubani@gmail.com



पवन कुमार साह
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 05.01.1985
 गृह जिला : गोपालगंज
 मो० नं० : 9711028045

ईमेल : pwn.pwn.58@gmail.com



अनिशा
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 21.05.1995
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 8447395706

ईमेल : anishasharma314@gmail.com



रवि रंजन कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 27.04.1995
गृह जिला : शेखपुरा
मो० नं० : 8076134875

ईमेल : raviranjn271995@gmail.com



अमर्त्य कुमार आदर्श
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 15.10.1989
गृह जिला : अरवल
मो० नं० : 7976764225

ईमेल : amartya.80@gmail.com



ताविषी प्रिया
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 29.11.1993
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 8178541309

ईमेल : tavishipriya9@gmail.com



सौम्या
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 25.03.1991
गृह जिला : शेखपुरा
मो० नं० : 7838451070

ईमेल : sumisoumya0708@gmail.com



दिव्या प्रसन्न
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 14.03.1993
गृह जिला : वैशाली
मो० नं० : 9903521733

ईमेल : prasannadivya7@gmail.com



दुर्गेश नन्दन
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 31.03.1984
गृह जिला : बेगूसराय
मो० नं० : 8987501445

ईमेल : nandandurgesh2009@gmail.com



अफशा पर्वेज
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 02.02.1989
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9599026089

ईमेल : afsha.parwez@gmail.com



ईशरत जहाँ
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 26.06.1987
गृह जिला : भागलपुर
मो० नं० : 8512818981

ईमेल : ishrat.jahan111@gmail.com



अजितेश कुमार सिंह
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 16.03.1988
गृह जिला : शिवहर
मो० नं० : 7903961792

ईमेल : ajiteshkr Singh87@gmail.com



अनुपम कुमारी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 31.03.1985
गृह जिला : मुजफ्फरपुर
मो० नं० : 8210492881

ईमेल : anupamkumarimahto@gmail.com



शोभना
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 04.03.1993
गृह जिला : जहानाबाद
मो० नं० : 6201864464

ईमेल : shobhna0403@gmail.com



आशुतोष कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 07.07.1995
गृह जिला : वैशाली
मो० नं० : 8953651385

ईमेल : rajashu21.hjp@gmail.com



हुमा अख्तर
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 05.03.1991
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 7295880671

ईमेल : humaakhter13@gmail.com



सुजय कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 10.12.1986
गृह जिला : पूर्णियाँ
मो० नं० : 9910535182

ईमेल : sujayc@gmail.com



राहुल कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 10.12.1988
गृह जिला : भागलपुर
मो० नं० : 9891907951

ईमेल : rahul06515@gmail.com



संगीता गुर्जर
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 23.04.1988
गृह जिला : बक्सर
मो० नं० : 9643194018

ईमेल : sangeetagurjar@gmail.com



आस्थागार्गी
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 01.10.1989
गृह जिला : खगड़िया
मो० नं० : 9015299408

ईमेल : asthagargi10@gmail.com



कुमार दिवाकर
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 09.09.1984
गृह जिला : मधेपुरा
मो० नं० : 9570066114

ईमेल : kumar.diwakar1984@gmail.com



अविनाश कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 17.08.1993
गृह जिला : अररिया
मो० नं० : 8252641772

ईमेल : avinashkool.kumar07@gmail.com



सितेश कुमार
पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 21.01.1987
गृह जिला : खगड़िया
मो० नं० : 7903611594

ईमेल : sitesh.ag110@gmail.com



स्मृति संजयम

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 04.06.1992
गृह जिला : जमुई
मो० नं० : 9155438725

ईमेल : sanjayamsmriti@gmail.com



ऋचांशा ऋजु

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 03.11.1994
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9910218149

ईमेल : shonarichee007@gmail.com



अभिषेक कुमार

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 05.07.1995
गृह जिला : पूर्वी चम्पारण
मो० नं० : 8178397101

ईमेल : abhishekkumar.2381@gmail.com



श्वेता सिंह

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 14.02.1992
गृह जिला : रोहतास
मो० नं० : 9990344642

ईमेल : swetasingh.909@gmail.com



वसुंधरा शंकर

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 20.09.1989
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9717599376

ईमेल : vasundharas20@gmail.com



हर्ष रंजन कुमार

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 03.07.1991
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 9973541127

ईमेल : harsh9649@gmail.com



राज किशोर राम

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 04.10.1989
गृह जिला : सीवान
मो० नं० : 7004256216

ईमेल : zedrai.410@gmail.com



विरंजनी रानी

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 20.06.1994
गृह जिला : नालंदा
मो० नं० : 9473006349

ईमेल : viranjani4003@gmail.com



ऋषि कुमार

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 01.03.1980
गृह जिला : भोजपुर
मो० नं० : 9386279344

ईमेल : rishi9161@gmail.com



अचला नन्दिनी

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 16.12.1991
गृह जिला : पूर्वी चम्पारण
मो० नं० : 9798033229

ईमेल : mavkol.komal@gmail.com



रीना राय
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 10.01.1989
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9113351716

ईमेल : reenaray10@gmail.com



कौशकी केशल
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 25.03.1994
 गृह जिला : पटना
 मो० नं० : 9958699151

ईमेल : kaushiki2594@gmail.com



प्राची प्रिया
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 15.02.1992
 गृह जिला : वैशाली
 मो० नं० : 9304554373

ईमेल : prachipriya50@gmail.com



सतीश कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 03.01.1992
 गृह जिला : औरंगाबाद
 मो० नं० : 8804180902

ईमेल : kumarsatish3192@gmail.com



अश्विनी कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 05.12.1987
 गृह जिला : पश्चिमी चम्पारण
 मो० नं० : 6201002092

ईमेल : drashkr@gmail.com



सौम्या
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 27.11.1994
 गृह जिला : नालंदा
 मो० नं० : 8757615397

ईमेल : rainumbrella7@gmail.com



विनीता कुमारी
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 02.05.1987
 गृह जिला : नालंदा
 मो० नं० : 9958685165

ईमेल : vineetaed@gmail.com



रणधीर कुमार
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 28.02.1980
 गृह जिला : पूर्वी चम्पारण
 मो० नं० : 8210717953

ईमेल : rsrivastawa80@gmail.com



अनिशा
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 12.08.1993
 गृह जिला : मुजफ्फरपुर
 मो० नं० : 9911790712

ईमेल : anisha.maahii@gmail.com



अनामिका कुमारी
 पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
 बैच : 63वीं
 जन्म तिथि: 30.12.1991
 गृह जिला : रोहतास
 मो० नं० : 7903159656

ईमेल : kranamika79@gmail.com



पूनम कुमारी

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 01.12.1985
गृह जिला : रोहतास
मो० नं० : 9654198412

ईमेल : poonam.smile14@gmail.com



तनु प्रिया

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 08.03.1992
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 8218594022

ईमेल : tanu.gvs06@gmail.com



मनीष कुमार तरुण

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 06.12.1984
गृह जिला : खगड़िया
मो० नं० : 9386274269

ईमेल : maneeshkrtarun@gmail.com



संजीव कुमार

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 63वीं
जन्म तिथि: 15.06.1991
गृह जिला : सारण
मो० नं० : 9470801976

ईमेल : sanjeevk4572@gmail.com



नितेश कुमार

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 64वीं
जन्म तिथि: 06.11.1994
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 8002217248

ईमेल : niteshkr611@gmail.com



पीयूष राज

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 64वीं
जन्म तिथि: 11.04.1995
गृह जिला : भागलपुर
मो० नं० : 8271540410

ईमेल : getpeeyushraj@gmail.com



हिमांशु शेखर

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 64वीं
जन्म तिथि: 28.08.1992
गृह जिला : पूर्णिया
मो० नं० : 9901423300

ईमेल : shekharhimanshu@live.in



सलोनी सौम्या

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 64वीं
जन्म तिथि: 18.08.1994
गृह जिला : मुजफ्फरपुर
मो० नं० : 9798471932

ईमेल : saloni.saumya.18@gmail.com



मो० वसीम

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 64वीं
जन्म तिथि: 11.07.1992
गृह जिला : अरवल
मो० नं० : 9911309810

ईमेल : mohwaseem.9012@gmail.com



अराधना रविन्द्र

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 64वीं
जन्म तिथि: 13.09.1994
गृह जिला : नालंदा
मो० नं० : 9311068946

ईमेल : ravindraaradhana@gmail.com



शिवम प्रकाश

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 64वीं
जन्म तिथि : 03.03.1995
गृह जिला : पटना
मो० नं० : 7903317240

ईमेल : prakashshivam9@gmail.com



कौशल कुमार

पदनाम :राज्य-कर सहायक आ०
बैच : 64वीं
जन्म तिथि : 02.07.1988
गृह जिला : जहानाबाद
मो० नं० : 9560987422

ईमेल : kaushalkumar.rana6@gmail.com



Happy New Year

*Asli swad
baantne se badhta hai*



Email: info@rakeshgroup.com, Website: www.rakeshgroup.com



धन्यवाद ज्ञापन



बिहार वित्त सेवा संघ के सत्प्रयास एवं सम्माननीय सदस्यों की आकांक्षा के प्रतिफल के रूप में यह स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस स्मारिका के संपादन का दायित्व का निर्वहन श्री नरेश कुमार, उपाध्यक्ष, बिहार वित्त सेवा संघ के द्वारा किया गया है। इसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। यह पत्रिका न केवल विभाग के मूल उद्देश्य करधान से संबंधित है, बल्कि यह साहित्य, अध्यात्म, व्यक्तित्व निर्माण तथा सोद्देश्यपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर लेखों का समाहार भी है।

भविष्य में इसके बहुविध पुष्पित-पल्लवित होने तथा चहुँदिश सुवासित होने की मंगल कामना करता हूँ।

!! शुभेच्छा सहित !

रणजीत कुमार
महासचिव
बिहार वित्त सेवा संघ




A Pride of Bihar & Jharkhand

Patna Offset Press

**A Complete Range of Sheetfed
&
Web Offset Press**

 Near Dharahra Kothi, Naya Tola,
Patna - 800 004 (Bihar)

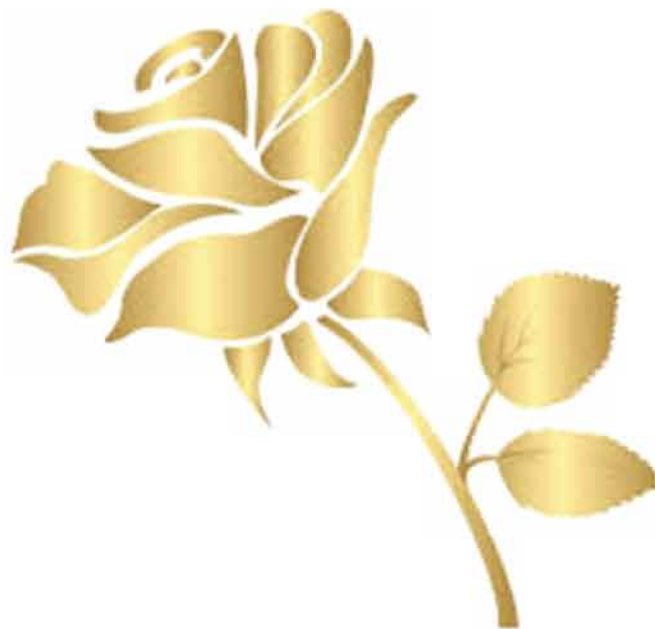
 9693202981, 9334112627
9955555559, 9835068887

 patnaoffsetpress@gmail.com
patnaoffsetpresspatna@gmail.com





BEST WISHES



**HINDUSTAN PETROLEUM
CORPORATION LTD.
PATNA**







बिहार वित्त सेवा संघ
वीरचंद पटेल पथ, आयकर गोलम्बर
पटना-800001
<https://bfsabihar.in>